राष्ट्रीय विचारों से ओतप्रोत युवा जागरण का अग्रदूत RNI no. UPHIN45193/24/1/2014

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत

जय विजय

मासिक

वेबसाइट : www.jayvijay.co, www.jayvijay.co.in, ई-मेल : jayvijaymail@gmail.com

वर्ष-३, अंक-५ | नवी मुंबई | फरवरी २०१७ | विक्रमी सं. २०७३ | युगाब्द ५११७ | पृष्ठ-३० | निःशुल्क

६८वां गणतंत्र दिवस समारोह संपन्न

नई दिल्ली। भारत का ६८वां गणतंत्र दिवस समारोह इस बार कई मायनों में खास रहा. देश की सैन्य शक्ति और सांस्कृतिक झाँकी दिखाने वाली परेड में पहली बार संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) का सैनिक दस्ता शामिल हुआ जिसकी राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने सलामी ली. यह परेड राजपथ से शुरू होकर लाल किले पर जाकर समाप्त हुई. इस बार के गणतंत्र दिवस समारोह में यूएई के राजकुमार शेख मोहम्मद बिन जायद अल नाहयान मुख्य अतिथि रहे. भारत ने उन्हें राष्ट्राध्यक्षों को बुलाने की अपनी तय परंपरा को तोड़ते हुए आमंत्रित किया था.

इस परेड में ३२ वर्षों में पहली बार नेशनल सिक्योरिटी गार्ड (एनएसजी) के कमांडो शामिल हुए. पिछले साल वायु सेना में शामिल हुए लड़ाकू विमान तेजस ने भी इसमें पहली बार उड़ान भरी. उसने हवा में जीत के प्रतीक 'वी' का निशान बनाया. इसके साथ देसी बोफोर्स तोप कही जाने वाली 'धनुष' को भी पहली बार सार्वजनिक किया गया. इसकी मारक क्षमता बोफोर्स से ज्यादा बतायी जाती है.

नई दिल्ली में राजपथ पर समारोह की शुरुआत प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी द्वारा राष्ट्रीय ध्वज फहराने के साथ हुई. इस मौके पर उपराष्ट्रपति हामिद अंसारी एवं तीनों सेनाध्यक्षों के अलावा कई अन्य गणमान्य व्यक्ति मौजूद रहे. इससे पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अमर जवान ज्योति पर जाकर शहीदों को याद किया और उन्हें श्रृद्धांजलि दी.

गणतंत्र दिवस के अवसर पर राजधानी में सुरक्षा के अभूतपूर्व इंतजाम किए गए थे. राजपथ और इसके आसपास के इलाकों की सुरक्षा के लिए दिल्ली पुलिस और अर्द्धसैनिक बलों के ६०,००० से ज्यादा जवानों को तैनात किया गया था. इसके अलावा पालतू जानवरों के जरिए आतंकी हमला करने की खुफिया सूचना को देखते हुए विशेष चौकसी बरती जा रही थी. ■

मोदी के मन की बात- परीक्षा को उत्सव समझें छात्र

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने २८ जनवरी को इस बार 'मन की बात' रेडियो कार्यक्रम में बच्चों की पढ़ाई और उनके सर्वांगीण विकास को लेकर कई अहम बातें बताई. पीएम मोदी ने कहा कि आम तौर पर धारणा ऐसी है कि अगर विद्यार्थी खेलकूद में ध्यान देते हैं, तो पढ़ाई पर ध्यान नहीं दे पाते. ये धारणा ही गलत है. अपनी खुद की मेहनत से जो परिणाम प्राप्त होगा, उससे जो आत्मविश्वास बढ़ेगा, वो अद्भुत होगा.

उन्होंने कहा कि कुछ लोग नकल करने में पूरा जोर लगा देते हैं. अगर यही कोशिश पढ़ाई में लगाएं तो नकल की जरूरत ही नहीं पड़े. उन्होंने सचिन तेंदुलकर का उदाहरण देते हुए आग्रह किया कि खुद से स्पर्द्धा करें. पहले क्या किया था, आगे कैसे करूंगा, अच्छा कैसे करूंगा... बस इस पर ध्यान केंद्रित करें.

उन्होंने कहा कि सर्वांगीण विकास करना है, तो किताबों के बाहर भी एक जिन्दगी होती है. वो बहुत विशाल होती है. उसको जीने का सीखने का यही समय होता है. 'सचमुच में, जीवन को आगे बढ़ाने के लिए प्रतिस्पर्द्धा काम नहीं आती है. जीवन में आपको नॉलेज काम आने वाला है, स्किल काम आने वाली है, आत्मविश्वास काम आने वाला है, संकल्पशक्ति काम आने वाली है. मार्क और मार्कशीट का एक सीमित उपयोग है. जिंदगी में वही सब कुछ नहीं होता है.

आपने कैसा जीवन जिया, कैसा जीवन जी रहे हो, कैसा जीवन जीना चाहते हो, उसका एक्जाम नहीं है. आप जो परीक्षा देने जा रहे हैं, वो साल भर में आपने जो पढ़ाई की है, उसका एक्जाम है. ये आपके जीवन की कसौटी नहीं है. जब टेंशन होती है, तब आपका नॉलेज, आपका ज्ञान, आपकी जानकारी नीचे दब जाती हैं और आपका टेंशन उस पर सवार हो जाता है. मेमोरी को रिकॉल करने का जो पावर है, वो रिलेक्सेशन में सबसे ज्यादा होता है. ■

पाँच राज्यों में विधानसभा चुनाव

चुनाव आयोग ने पांच राज्यों में होने वाले विधानसभा चुनावों की तारीखों की घोषणा कर दी है. ये पांच राज्य उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, पंजाब, मणिपुर और गोवा हैं. चुनाव ४ फरवरी से शुरू होंगे और ११ मार्च को नतीजे आएंगे. यूपी में सात चरणों में चुनाव होंगे. मणिपुर में दो चरणों में चुनाव होंगे. गोवा और पंजाब में ४ फरवरी को वोट डाले जाएंगे. उत्तराखंड में १५ फरवरी को वोटिंग होगी. मणिपुर में पहले चरण के मतदान ४ मार्च को और दूसरे चरण की वोटिंग ८ मार्च को होगी. उत्तर प्रदेश में क्रमशः ११ फरवरी, १५ फरवरी, १९ फरवरी, २३ फरवरी, २७ फरवरी, ४ मार्च और ८ मार्च को मतदान होगा। ११ मार्च को पांचों राज्यों के परिणाम घोषित किए जाएंगे.

वहीं पांच राज्यों में चुनाव की घोषणा के बाद गृह मंत्रालय ने इन राज्यों में अर्धसैनिक बलों की ८५० कंपनियां भेजने का फैसला किया है. ■

प्रवासी सम्मेलन में प्रधानमंत्री मोदी की घोषणा

विदेश में नौकरी के लिए सरकार जल्द लायेगी स्किल डेवलपमेंट प्रोग्राम

बेंगलुरू। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बेंगलुरू में हुए प्रवासी भारतीय दिवस में एक बड़ी घोषणा की। उन्होंने कहा कि हम विदेश में नौकरी चाहने वाले युवाओं के लिए शीघ्र ही 'प्रवासी कौशल विकास योजना' शुरू करेंगे, ताकि वे पूरी दुनिया में नौकरी पा सकें।

पीएम मोदी ने कहा कि प्रवासी भारतीय जहां भी रहते हैं, उसे ही कर्मभूमि मानते हैं और वहां विकास के काम में योगदान देते हैं। विदेशों में भारतीयों को उनके योगदान के लिए सम्मानित किया जाता है। प्रधानमंत्री मोदी ने विदेश में रहने वाले भारतीयों के लिए कहा, 'विदेशों में भारतीयों को केवल संख्या की वजह से नहीं जाना जाता है बल्कि उनके योगदान के लिए उन्हें सम्मानित किया जाता है।'

पीएम मोदी ने एक पीआईओ (भारतीय मूल का व्यक्ति) कार्ड दिखाते हुए कहा कि जहां तक किसी भी व्यक्ति के भारत के संबंध का सवाल है, यह कार्ड पासपोर्ट की जगह लेगा। मोदी ने प्रवासी दिवस में जुटी भारी भीड़ से कहा, 'हम पासपोर्ट का रंग नहीं देखते, खून का रिश्ता देखते हैं।'

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बेंगलुरु में १४वें प्रवासी दिवस सम्मेलन को संबोधित करते हुए कई प्रवासी भारतीयों को काले धन के खिलाफ मुहिम में सरकार का साथ देने के लिए धन्यवाद दिया। साथ ही पीएम मोदी ने प्रवासी भारतीयों की समस्याओं का भी जिक्र किया और कहा कि सरकार इसे लेकर सजग है। मोदी ने बताया कि भारतीय दूतावासों को साफ निर्देश दिया गया है कि विदेशों में रह रहे इंडियनंस को कोई समस्या नहीं हो।

पीएम ने कहा कि प्रवासी भारतीयों पर हर किसी को गर्व है। भारतीय जहां भी गए, अपनी अलग पहचान बनाने में कामयाब रहे। उनके अनुसार भारत के बाहर रह रहे ३० मिलियन भारतीय केवल अपनी संख्या के कारण नहीं जाने जाते हैं, बल्कि भारत और जहां वे रह रहे हैं, वहां अपने योगदान के लिए भी सम्मान हासिल करते रहे हैं। एनआरआई और पीआईओ ने उल्लेखनीय योगदान दिए हैं। इनमें बड़े नेता, ख्यातिप्राप्त वैज्ञानिक, उत्कृष्ट डॉक्टर, प्रतिभाशाली शिक्षाविद्, अर्थशास्त्री, पत्रकार, संगीतकार, इंजीनियर, बैंकर और प्रौद्योगिकी विशेषज्ञ शामिल हैं। ■

शराबबंदी पर ११ हजार किमी लंबी मानव श्रृंखला

पटना। शराबबंदी के समर्थन में बिहार में २१ जनवरी को २ करोड़ से अधिक लोगों ने मानव श्रृंखला बनाई. आम लोगों के अलावा मुख्यमंत्री नीतीश कुमार, राजद अध्यक्ष लालू यादव से लेकर बिहार सरकार के अनेक बड़े मंत्री और अधिकारी इस मानव श्रृंखला में शामिल हुए. अन्य दलों के नेताओं ने भी इसमें भाग लिया. ११ हजार किलोमीटर लंबी इस मानव श्रृंखला का उद्देश्य नशा मुक्त बिहार बनाने को लेकर लोगों को जागरूक करना था. इस अवसर पर मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने कहा कि इतनी बड़ी संख्या में लोग इकट्ठे हुए, इससे पता चलता है कि लोग शराबबंदी और नोटबंदी के समर्थक हैं और मानव श्रृंखला बनाकर लोगों ने अपनी भावनाओं को प्रकट किया है.

इस मानव श्रृंखला की तस्वीरें उपग्रहों से भी ली गईं. एक अधिकारी ने बताया कि ११,२९२ किलोमीटर से ज्यादा लंबी इस मानव श्रृंखला में दो करोड़ से ज्यादा लोगों ने भाग लिया, जो कि एक विश्व रिकॉर्ड है. ■

कार्टून

चुनावी बहुएँ -- मनोज कुरील

सामान्य ज्ञान

प्रश्न

१. रिहंद बांध किस राज्य में है?
२. किस देश की संसद राष्ट्रीय पंचायत कहलाती है?
३. विश्व रेडियो दिवस कब मनाया जाता है?
४. ध्यानचंद ट्राफी किस खेल से सम्बन्धित है?
५. मुखौटा नृत्य किस राज्य का प्रमुख नृत्य है?
६. १८५७ की क्रान्ति भारत में किस स्थान से प्रारम्भ हुई थी?
७. अकबर का मकबरा कहाँ पर स्थित है?
८. भारत के मध्य से गुजरने वाली रेखा कौन-सी है?
९. २६ जनवरी २०१५ को भारत के राजकीय अतिथि कौन थे?
१०. महाभारत में ब्रह्मास्त्र का प्रयोग किसने किया था?
११. रामायण में रावण ने लंका किससे छीनी थी?
१२. 'षडानन' किस देवता का नाम है?

उत्तर-

१. उत्तर प्रदेश; २. नेपाल; ३. १३ फरवरी; ४. हॉकी; ५. अरुणाचल प्रदेश; ६. मेरठ; ७. सिकंदरा, आगरा; ८. कर्क रेखा; ९. बराक ओबामा; १०. अश्वत्थामा; ११. कुबेर; १२. कार्तिकेय।

सुभाषित

उपसर्गेऽन्यचक्रे च दुर्भिक्षे च भयावहे।
असाधु जन सम्पर्के यः पालयेत् स जीवति।। (चाणक्य नीति)

अर्थ- प्रकृति का प्रकोप होने पर, अकाल पड़ने पर, भयावह स्थिति आने पर, आततायियों द्वारा प्रताड़ित होने पर जो पुरुष जनता की रक्षा करता है उसका जीवन संसार में धन्य है।

पद्यार्थ- हल्की प्रलय सृष्टि का व्यतिक्रम, आतंकवाद या पड़े अकाल।
दुष्ट जनों से पीड़ित जन का, पालन करें धन्य वे लाल।।

(आचार्य स्वदेश)

सम्पादकीय

आतंकवाद के विरुद्ध ठोस कदम

जब विगत ८ नवम्बर को अमेरिका में डोनाल्ड ट्रम्प राष्ट्रपति चुने गये थे, तभी से यह निश्चित था कि वे पिछले राष्ट्रपति बराक हुसैन ओबामा की नीतियों को बहुत कुछ बदल देंगे। उन्होंने अपने चुनाव प्रचार में इस बात को छिपाया भी नहीं था। अपनी 'अमेरिका प्रथम' का उद्घोष वे समय-समय पर करते रहे हैं और शपथ लेने के तुरन्त बाद से वे इसका पालन भी करने लगे हैं। उन्होंने अपने इन विचारों को भी कभी छिपाया नहीं है कि वे विश्व में फैले हुए आतंकवाद को इस्लामी आतंकवाद मानते हैं और इसका मूल इस्लाम की शिक्षाओं में बताते हैं। उन्होंने आतंकवाद को समूल नष्ट करने के अपने संकल्प को भी एकाधिक बार स्पष्ट किया है। इस्लामी आतंकवाद को समाप्त करने के पहले कदम के रूप में उन्होंने सात लगभग पूर्ण मुस्लिम जनसंख्या वाले देशों के नागरिकों को वीजा देने पर ९० दिन का प्रतिबंध लगा दिया है। ये ऐसे देश हैं जो या तो इस्लामी आतंकवाद के गढ़ हैं या लम्बे समय से गृहयुद्धों से जूझ रहे हैं, जिनके मूल में इस्लाम ही है। आश्चर्यजनक रूप से इन देशों में पाकिस्तान का नाम शामिल नहीं है, जो आतंकवाद के निर्यातकर्ता के रूप में कुख्यात है। लेकिन इस बात के स्पष्ट संकेत मिले हैं कि ऐसे ही प्रतिबंध पाकिस्तान और कुछ अन्य इस्लामी देशों पर लगाये जा सकते हैं, जो आतंकवादियों को खाद-पानी देते रहे हैं। जैसा कि स्वाभाविक था, अनेक तथाकथित मानवाधिकार-वादियों ने इन प्रतिबंधों की आलोचना की है और इनको भेदभावपूर्ण बताया है। ऐसे स्वयंभू मानवाधिकार प्रेमियों को समझना चाहिए कि प्रत्येक देश को अपने नागरिकों की सुरक्षा करने का पूरा अधिकार है और अपने देश में किसी को आने या न आने देने का भी। वैसे भी यह प्रतिबंध सभी मुसलमानों या मुस्लिम-बहुल देशों पर लागू नहीं है, बल्कि केवल उन देशों पर लागू है जो आतंकवादियों के अड्डे बने हुए हैं। ९० दिन की अवधि के बाद इस प्रतिबंध की समीक्षा की जाएगी और आवश्यकता के अनुसार या तो इसमें ढील दी जाएगी या कड़ा किया जाएगा।

आश्चर्य की बात यह है कि ट्रम्प महोदय के इस निर्णय का सबसे अधिक विरोध यूरोप के वे देश कर रहे हैं जो इस्लामी आतंकवाद से स्वयं पीड़ित हैं और सीरिया आदि देशों से आये शरणार्थियों की समस्या से भी जूझ रहे हैं। यह भी कोई दबी-छिपी बात नहीं है कि शरणार्थियों के वेष में कई इस्लामी आतंकवादी भी इन देशों में शरण पा गये हैं। वहाँ ऐसी कई आतंकवादी घटनायें हो चुकी हैं जिनमें मुसलमान शरणार्थियों की सक्रिय भूमिका पायी गयी है। सबसे अधिक आश्चर्य इस बात पर है कि अमेरिका के पड़ोसी देश कनाडा के प्रधानमंत्री ने इस निर्णय की कठोर आलोचना ही नहीं की है, बल्कि इन देशों के नागरिकों और शरणार्थियों को कनाडा में आने का खुला निमन्त्रण भी दिया है। पिछली घटनाओं से कोई सबक न सीखने की गलती या मूर्खता इसी को कहा जाता है। कनाडा के प्रधानमंत्री के निमंत्रण के अगले ही दिन कनाडा में नमाज पढ़ते हुए मुसलमानों पर आतंकियों द्वारा हमला करके ५ नमाजियों को मार देना उनके लिए खतरे की घंटी है। यदि कनाडा के प्रधानमंत्री अभी भी नहीं चेते, तो उनको एक दिन अपनी गलती पर पछताना पड़ेगा।

-- विजय कुमार सिंघल

आपके पत्र

आपने पत्रिका में मेरी गजल को स्थान दिया। यह मेरे लिए नववर्ष के उपहार जैसा है। आपको इसके लिए हार्दिक आभार! - **दिवाकर दत्त त्रिपाठी**

विभिन्न विधाओं के वैविध्य लिए साहित्यिक रचनाओं से परिपूर्ण एक और अंक के लिए बधाई स्वीकारें। शुभकामनाओं के साथ। - **डॉ पूनम माटिया**

जय-विजय का जनवरी २०१७ का अंक मिला. नव उमंग, नव रंग लिए ज्ञानवर्द्धक सामग्री से ओत-प्रोत सभी स्तम्भ सहज, पठनीय और प्रेरक हैं, आपका धन्यवाद. विश्व-देश के नए रचनाकारों से मैं जुड़ी. आभार. - **मंजू गुप्ता**

मैंने जय विजय का अंक देखा. मेरा लेख प्रकाशित करने के लिए आपका बहुत बहुत धन्यवाद. प्रभु की कृपा से आगे भी लिखती रहूँगी. जय विजय के सभी रचनाकारों का अभिनंदन. - **प्रतिभा देशमुख**

मैंने आपकी पत्रिका पढ़ी, बहुत अच्छी लगी। नये पुराने रचनाकारों को पढ़कर बड़ा प्रोत्साहन मिला। यदि आपकी अनुमति हो तो मैं भी अपनी रचनाओं के माध्यम से आपकी पत्रिका से जुड़ना चाहती हूँ। कृपया अपनी पत्रिका मेरी ईमेल पर अवश्य उपलब्ध कराने का कष्ट करें। धन्यवाद! - **लवी मिश्रा**

पत्रिका के लिए धन्यवाद। - **ओम प्रकाश क्षत्रिय, नवीन त्रिपाठी, वर्षा वार्ष्णेय, प्रदीप कुमार तिवारी**

(सभी कृपालु पत्र-लेखकों का हार्दिक आभार! - सम्पादक)

अच्छा इंसान

रविन्दर सूदन

एक दिन मुझे एक स्कूल में जाने का अवसर मिला। नवीं-दसवीं कक्षा के कुछ विद्यार्थी ब्रेक में बैठे हुए थे। बातचीत का सिलसिला शुरू हुआ। मैंने बच्चों को बातचीत में शामिल करने के लिए पहले उनसे उनका नाम, किस कक्षा में पढ़ते हो इत्यादि पूछकर उनकी हिचकिचाहट दूर की। धीरे-धीरे मैंने अपनत्व बढ़ाते हुए पूछा कि, आप क्या बनना चाहते हैं? किसी ने कहा, कि वो डॉक्टर बनना चाहता है, किसी ने कहा इंजीनियर, किसी ने बिजनेसमैन, किसी ने सेना में जाने की बात कही। किसी ने आईएएस-आईपीएस बनने की अपनी इच्छा जताई।

मैंने कहा- 'बच्चो, बहुत अच्छी बात है, कि आप कुछ-न-कुछ बनना चाहते हैं। आप जानते हैं कि यह बनने के लिए आपको बहुत मेहनत करनी होगी। पैसा भी काफी खर्च होगा। मैं अब आपको बताता हूं कि आप यह तो बनें, परंतु इसके साथ आप वह भी बन सकते हैं, जिसमें आपका कोई पैसा भी खर्च नहीं होगा और आप एक योग्य सफल व्यक्ति भी बन सकेंगे।'

बिना खर्च के सफलता की बात कहकर बच्चों के मन को टटोलने के लिए मैंने पूछा- 'कितने विद्यार्थी यह बात सुनने के लिए उत्सुक हैं?' लगभग सभी ने हाथ उठा दिया। मैंने कहना शुरु किया- 'बच्चो, इंजीनियर, डॉक्टर, वकील आदि तो व्यवसाय है। किसी की असली पहचान तो उसके अपने गुण हैं। हम जब किसी के लिए कहते हैं, कि वह आदमी ईमानदार है, तो ईमानदारी उस व्यक्ति की असली पहचान है। जब एक आईपीएस अपना काम निडरता से करता है, तो हम कहते हैं, कि यह बहुत ही निडर अफसर है, तो निडरता उसकी पहचान होती है। जब कोई इंसान नम्र व्यवहार करता है, गरीबों की मदद करता है, जरूरत मंदों की सेवा करता है, तो हम कहते हैं, यह एक नेकदिल इंसान है। आदमी का चरित्र उसकी पहचान होता है।'

बच्चों की आंखों में एक अनोखी चमक आ चुकी थी। मैंने बच्चों से पूछा- 'बच्चो, अब बताओ कि क्या आप एक अच्छा इंसान बनना चाहते हो?' बच्चों में एक उत्साह सा भर गया था। 'जो बच्चे तैयार हों, उन्हें मैं कुछ बातें बताऊंगा। जीवन में यदि वे इन छोटी-छोटी बातों पर अमल करेंगें, तो उनका जीवन तराशे हुए हीरे जैसा

(शेष पृष्ठ ३० पर)

किसका दोष है यह?

डॉ. नीलम महेन्द्र

पता नहीं यह दुर्भाग्य केवल उस नौजवान का है या पूरे देश का, जिसके झोले में डिग्री, जेब में कलम, लेकिन हाथ में झाड़ू और फावड़ा हो। कुछ समय पहले उत्तर प्रदेश में चपरासी अथवा सफाई कर्मचारी के पद के लिए सरकार द्वारा आवेदन मांगे गए थे, जिसमें आवश्यकता ३६८ पदों की थी और योग्यता प्राथमिक शिक्षा तथा साइकिल चलाना थी। इन पदों के लिए जो आवेदन प्राप्त हुए उनकी संख्या २३ लाख थी, जिनमें से २५ हजार पोस्ट ग्रेजुएट, २५५ पीएचडी, इसके अलावा डाक्टर, इंजीनियर और कामर्स विज्ञान जैसे विषयों से ग्रेजुएट शामिल थे। मध्यप्रदेश में भी हवलदार के पद के लिए कमोबेश इसी प्रकार की स्थिति से देश का सामना होता है। आवश्यकता १४००० पदों की है। शैक्षणिक योग्यता हायर सेकन्डरी, लेकिन आवेदक ९.२४ लाख के ऊपर जिनमें १.१९ लाख ग्रेजुएट हैं, १४५६२ पोस्ट ग्रेजुएट हैं, ९६२९ इंजीनियर हैं, १२ पीएचडी हैं। ऐसी ही एक और परिस्थिति, जिसमें माली के पद के लिए सरकार को लगभग २००० पीएचडी उपाधि धारकों के आवेदन प्राप्त हुए थे।

जब सम्बन्धित अधिकारियों का ध्यान पद के लिए आवश्यक योग्यता और आवेदकों की शैक्षणिक योग्यता के बीच इस विसंगति की ओर दिलाया गया, तो उनका कहना था कि हमारा काम परीक्षा कराना है आवेदकों की प्रोफाइल का निरीक्षण करना नहीं। इस सबके विपरीत, एक रिपोर्ट है, जिसके केंद्र में मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश, बिहार जैसे राज्यों के सरकारी विद्यालयों के शिक्षक हैं। इनकी योग्यता- देश के प्रधानमंत्री का नाम हो या राष्ट्रपति का नाम, किसी प्रदेश की राजधानी का नाम हो या सामान्य ज्ञान से जुड़ा कोई प्रश्न, हर प्रश्न अनुत्तरित! किसी भी प्रश्न का उत्तर देने में अक्षम। कोई आश्चर्य नहीं कि इन प्रदेशों की परीक्षा के स्तर का उदाहरण बिहार माध्यमिक बोर्ड की दसवीं की परीक्षा में दिखाई दिया जब बोर्ड में टॉप करने वाले विद्यार्थियों को अपने विषयों के नाम तक नहीं पता थे।

लेकिन क्या ये घटनाएँ हम सभी के लिए, पूरे देश के लिए, हमारी सरकारों के लिए एक चिंता का विषय नहीं होना चाहिए? क्या यह हमारे बच्चों ही नहीं बल्कि इस देश के भी भविष्य के साथ खिलवाड़ नहीं है? दोष किसे दिया जाए! उन्हें जो अयोग्य होते हुए भी अपना स्वयं का वर्तमान सुधारने के लिए शिक्षक के पद पर आसीन तो हैं किन्तु उन बच्चों के भविष्य पर प्रश्न चिह्न लगा रहे हैं जो कि कालांतर में स्वयं इस देश के भविष्य पर ही एक बड़ा प्रश्न चिह्न बन जाएगा। या फिर उस सिस्टम को जिसमें प्रतिभावान युवा अपने लिए अयोग्य पदों पर भी आवेदन करने के लिए मजबूर हैं और प्रतिभाहीन व्यक्ति उन जिम्मेदार पदों पर काबिज है जिन पर देश के वर्तमान एवं भविष्य की जिम्मेदारी है।

दोष उस बच्चे का है जिसे अपने विषय अथवा अपने पाठ्यक्रम का ज्ञान नहीं है अथवा उस शिक्षक का है जिस पर उसे पढ़ाने का जिम्मा है लेकिन स्वयं की अज्ञानता के कारण उसे पढ़ा नहीं पाता। दोष उस शिक्षक का है जिसने 'कुछ ले देकर' अथवा 'जुगाड़' से अपनी अयोग्यता के बावजूद किसी योग्य का हक मारकर नौकरी हासिल कर ली या फिर उस अधिकारी का जिसने आवेदक की योग्यता को ज्ञान के बजाय सिक्कों के तराजू में तोला! दोष उस अधिकारी का है जिसने अपने कर्तव्य का पालन करने के बजाय उस भ्रष्ट तंत्र के आगे हथियार डाल दिए या फिर उस भ्रष्ट तंत्र का जिसके बने बनाए सिस्टम में उस अधिकारी के पास एक ही रास्ता होता है या तो सिस्टम में शामिल हो जाओ या फिर बाहर हो जाओ।

दोष आखिर किसका है? हर उस पुरुष अथवा महिला का जिस पर अपने परिवार को पालने की जिम्मेदारी है, जिसके लिए वह येन केन प्रकारेण कोई भी नौकरी पाने की जुगत लगा लेता है और जो जीतता है वो सिकन्दर बन जाता है या फिर सदियों से चले आ रहे इस तथ्यात्मक सत्य का कि जिसके पास लाठी होती है भैंस वही ले जाता है। डारविन ने अपनी 'थ्योरी आफ इवोल्यूशन' में 'सरवाइवल आफ द फिटेस्ट' का उल्लेख किया है अर्थात् जो सबसे ताकतवर होगा वही परिस्थितियों के सामने टिक पाएगा, किन्तु 'ताकत' की परिभाषा ही जो समाज अपने लिए एक नई गढ़ ले! जहाँ ताकत बौद्धिक शारीरिक मानसिक अथवा आध्यात्मिक से इतर सर्वशक्तिमान ताकत केवल 'धन' की अथवा 'जुगाड़' की हो तो दोष किसको दिया जाए? उस समाज को जिसमें यह विसंगतियाँ पनप रही हैं और सब खामोश हैं या फिर उस सरकार को जिसका पूरा तंत्र ही भ्रष्ट हो चुका है। दरअसल हमारे देश में न तो हुनर की कमी है न योग्यता की, लेकिन नौकरी के लिए इन दोनों में से किसी को भी प्राथमिकता नहीं दी जाती। यहाँ नौकरी मिलती है डिग्री से। लेकिन डिग्री कैसे मिली, यह पूछा ही नहीं जाता।

इस देश और उसके युवा को उस सूर्योदय का इंतजार है जो उसके भविष्य के अंधकार को अपने प्रकाश से दूर करेगा। उसे उस दिन का इंतजार है जब देश अपनी प्रतिभाओं को पहचान कर उनका उचित उपयोग करेगा, शोषण नहीं। जिस देश में प्राकृतिक संसाधनों और मानव संसाधनों दोनों का ही दुरुपयोग होता हो वह देश आगे कैसे जा सकता है? जहाँ प्रतिभा प्रभाव के आगे हार जाती हो, वहाँ प्रभाव जीत तो जाता है लेकिन देश हार जाता है। इस देश के युवा को उस दिन का इंतजार है जब योग्यता को उसका उचित स्थान एवं सम्मान मिलेगा। नौकरी और पद प्रभाव नहीं प्रतिभा से मिलेंगे। न तो कोई पढ़ा लिखा बेरोजगार युवा मजबूर होगा अपनी कलम छोड़ कर झाड़ू पकड़ने के लिए, न कोई अयोग्य व्यक्ति मजबूर होगा किसी योग्य व्यक्ति का हक मारने के लिए। न कोई बच्चा मजबूर होगा किसी अयोग्य शिक्षक से पढ़ने के लिए, न कोई अधिकारी मजबूर होगा किसी अपात्र को पात्रता देने के लिए, जहाँ इस देश का युवा सिस्टम से हारने के बजाय सिस्टम को हरा दे, जहाँ सिस्टम हार जाए और देश जीत जाए। ■

हैवानियत का नया साल

बिपिन किशोर सिन्हा

बंगलोर को बड़े शहरों में लड़कियों के लिए अपेक्षाकृत सुरक्षित माना जाता है। यही कारण है कि सुदूर बिहार और यू.पी. से भी लड़कियां यहां इन्जीनियरिंग, मेडिकल और मैनेजमेन्ट पढ़ने के लिए अकेले आ जाती हैं और अकेले रहकर ही पढ़ाई भी पूरी कर लेती हैं। यही नहीं यहां नौकरी भी अकेले रहकर कर लेती हैं। लेकिन ३१ दिसंबर २०१६ की रात में हुई दो घटनाओं ने न सिर्फ बंगलौर को कलंकित किया, बल्कि देश का भी सिर शर्म से झुका दिया। पिछले साल की अन्तिम रात को बंगलोर के कमनहल्ली में सड़क से गुजर रही एक युवती को दो मोटर सायकिल चालक युवकों ने अपहरण की नीयत से पकड़ लिया। लडकी द्वारा विरोध करने पर उससे अभद्र ढंग से छेड़खानी की गई, मोलेस्टेशन किया गया और अपने उद्देश्य में अस्फल होने पर सड़क पर ही बलपूर्वक फेंक कर गिरा दिया गया। दोनों युवक नए साल का जश्न मनाकर आ रहे थे और नशे में धुत थे।

दूसरी घटना इसी शहर के महात्मा गांधी रोड की है जहां प्रशासन ने शहर के हर्ट में स्थित खुली, चौड़ी सड़क पर आधी रात के बाद दो घंटे तक सामूहिक रूप से नए साल का जश्न मनाने की अनुमति दी थी। नशे में धुत युवक-युवतियां देर तक एक-दूसरे के साथ नाचते रहे। लड़कियों को जबतक कुछ समझ में आता, नशेड़ी युवकों ने उन्हें पकड़कर चूमना शुरू कर दिया, जबर्दस्ती पकड़ कर अश्लील हरकतें आरंभ कर दीं और सरे आम मोलेस्टेशन भी प्रारंभ कर दिया। पुलिस बहुत देर के बाद हरकत में आई। किसी तरह लड़कियों को बचाया गया। सबसे चौंकाने वाली बात यह रही कि इन दोनों घटनाओं पर कर्नाटक के गृहमंत्री का बयान आया कि नये साल के जश्न में ऐसी घटनाएं तो होती रहती हैं।

ऐसी घटनाओं में हमेशा नंबर एक पर रहने वाली दिल्ली में भी नशे में धुत युवकों ने मुख्य मार्ग पर एक

(शेष पृष्ठ २९ पर)

आत्मज्ञान : परमकल्याण का मार्ग

प्रतिभा देशमुख

ज्ञान चाहे कोई भी हो वही वास्तविक शक्ति है। वास्तविक वस्तु उसे कहते हैं जो सदैव रहने वाली हो। संसार में हर वस्तु एक विशिष्ट काल के बाद नष्ट हो ही जाती है। धन खर्च हो जाता है, तन जर्जर होकर शक्तिहीन हो जाता है, साथी छूट जाते हैं। केवल ज्ञान ही एक ऐसा शाश्वत तत्व है, जो कहीं भी किसी भी अवस्था और किसी काल में मनुष्य के साथ ही रहता है, साथ नहीं छोड़ता। कोई भी कार्य ज्ञान बिना संभव नहीं है। जीवनयापन हेतु धन कमाने के लिए भी ज्ञान चाहिए।

लेकिन यह ज्ञान भौतिक जीवन का ज्ञान है इस ज्ञान से भौतिक उपलब्धि तो हो जाएगी, लेकिन क्या आत्मा इससे तृप्त होती है? भौतिक सुखों की प्राप्ति होने के बाद भी कुछ कमी रह जाती है और वो कमी होती है आत्मज्ञान की। जब तक मानव को यह ज्ञान नहीं होगा कि ‘वह कौन है, उसका मानव जीवन से क्या प्रयोजन है’ तब तक वह सबकुछ मिलने के बाद भी अंतरात्मा से अस्वस्थ ही रहेगा। वास्तविक ज्ञान तो आत्मज्ञान ही होता है। वह ज्ञान मिलने पर वह स्थिर बुद्धि वाला हो जाता है, जिसे पाकर मनुष्य अन्धकार से प्रकाश की ओर, मृत्यु से अमृत की ओर, असत्य से सत्य की ओर, अशांति से शांति की ओर और स्वार्थ से परमार्थ की ओर उन्मुख होता है। सच्चे ज्ञान में सदा सन्तोष होता है और लिप्साजन्य आवश्यकतायें समाप्त हो जाती है। उसकी प्राप्ति तो आत्मज्ञता, आत्म-प्रतिष्ठा और आत्म-विश्वास का ही हेतु होती है। जिस ज्ञान से इन दिव्य विभूतियों एवं प्रेरणाओं की प्राप्ति नहीं होती, उसे वास्तविक ज्ञान मान लेना बड़ी भूल होगी।

जीवन की भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के उद्देश्य से जो ज्ञान प्राप्त किया जाता है उससे जीवन पूर्ति ही होगी, आत्म संतुष्टि नही होगी। अतः आत्मज्ञान प्राप्त करना जीवन का परम लक्ष्य होना चाहिए। और इसे ही वास्तविक ज्ञान कहते हैं। वास्तविक ज्ञान किसी प्रकार का भौतिक ज्ञान न हो कर शुद्ध आध्यात्मिक ज्ञान होता है। सांसारिक कर्म करते हुए भी उसे प्राप्त करने का उपाय करते ही रहना चाहिये। इसके लिए हम स्वाध्याय कर सकते हैं, सत्संग अथवा चिन्तन मनन कर सकते हैं, आराधना, उपासना अथवा पूजा-पाठ कर सकते हैं।

तन, धन अथवा जन शक्ति वास्तविक शक्ति नहीं है। आत्मज्ञान की प्राप्ति ही मनुष्य का वास्तविक लक्ष्य है। वास्तविक ज्ञान आध्यात्मिक ज्ञान ही है और वही मनुष्य की सच्ची शक्ति है, जिसके सहारे वह आत्मा तक और आत्मा से परमात्मा तक पहुँचकर उस सुख, शांति और सन्तोष को प्राप्त कर सकता है, जिसको वह जन्म-जन्म से खोज रहा है किन्तु पा नहीं रहा है। वास्तविक आत्मज्ञान के बिना न तो जीवन में सच्ची शान्ति मिलती है और न ही परमकल्याण प्राप्त होता है। ■

हर दिन दौड़-भाग के लिए नहीं है!

लवी मिश्रा

शायद किसी बाइक के विज्ञापन पोस्टर पर लिखा था- 'Is every day a Race Day'. एक बाइक कंपनी के लिए भले ही ये पंक्तियां बाइक की खूबियों को दिखाने वाली हों, पर अगर आज की जिंदगी के संदर्भ में इस पर विचार किया जाये तो लगता है कि जैसे ये आज के इंसानी जीवन को विश्लेषित करना चाहती हों। हम हर पल रेस ही तो लगाते हैं, कभी अपनी इच्छाओं से, कभी अपनी महत्वाकांक्षाओं से तो कभी आस-पास के लोगों से। हर नया दिन हमारे मन में यही विचार लेकर आता है कि आज हम अपनी अमुक इच्छा पूरी करेंगे। पर जैसे ही हम अपनी एक इच्छा पूरी करते हैं कि दूसरी इच्छा उत्पन्न होकर हमें अपने पीछे भगाने लगती है। और हम इस रेस में इस प्रकार शामिल हो जाते हैं कि रास्ते में आने वाले खूबसूरत नजारों की ओर नजर तक नहीं उठा पाते।

ऐसी ही एक कहानी सुनाना चाहती हूँ। एक लड़का था, वह बहुत अमीर बनना चाहता था। उसने पहले छोटा व्यवसाय शुरू किया, उसकी मेहनत और लग्न से उसका व्यवसाय बहुत तेजी से बढ़ने लगा। उसकी शादी हुई, बच्चे हुए लेकिन उसका पूरा ध्यान अपने व्यवसाय पर ही रहता। वह न तो कभी अपनी पत्नी और न ही बच्चों को समय देता। अगर कभी कोई उससे इस बारे में कहता भी, तो उसका जवाब होता कि परिवार की सबसे बड़ी जिम्मेदारी उसके सदस्यों की जरूरतें पूरी करना है और वे केवल पैसे से ही पूरी होती हैं। वह कहता, ‘मैं जितना ज्यादा पैसा कमाऊंगा उतना ही अच्छे से परिवार का ध्यान रख पाऊँगा।’

उसकी पत्नी बहुत अकेली पड़ गई, बच्चे भी धीरे-धीरे बड़े हो गए थे और अपनी दुनिया में रमने लगे थे। चूँकि बच्चों को पिता से कभी भावनात्मक लगाव नहीं मिला था इसलिये वो अपने सुख दुःख तक ही सीमित थे। पत्नी को अचानक कैंसर हो गया, उसने बहुत पैसा खर्च किया इलाज में, पर कभी भी पत्नी के पास बैठ उसे दिलासा नहीं दिया, क्योंकि ऐसा करना वह जरूरी नहीं समझता था। तभी उसकी पत्नी चल बसी, अब वह भी बूढ़ा हो रहा था।

शारीरिक और मानसिक शक्ति के क्षीण होने के साथ ही वह बिस्तर से लग गया। उसका व्यवसाय उसके बेटों ने संभाल लिया था। बीमारी और अकेलेपन में उसे भावनात्मक संबल की जरूरत महसूस होने लगी थी। एक दिन उसने अपने बेटों से कहा कि कभी-कभी दो पल मेरे पास बैठ जाया करो, तो उन्होंने जो जवाब दिया कि उससे उस आदमी को अपने जीवन भर की भूल का आभास हो गया। उन्होंने कहा कि, ‘आपको जिन्दा रहने के लिए क्या चाहिए? अच्छा खाना और अच्छी दवाइयाँ, हमें नहीं लगता कि इसमें कोई कमी है। यही तो आपने हमें बचपन से सिखाया है कि सबसे जरूरी है चलते रहना, अगर रुके तो पीछे रह जायेंगे।’

यह सुनकर उसे पता चला कि उसने अपनी जिंदगी के कितने अनमोल पलों को अपनी महत्वाकांक्षा के बोझ तले कुचल दिया। इसलिए एक बाइक या कार के लिए हर दिन रेस डे हो सकता है, पर हम इंसानों के लिए नहीं। यह खूबसूरत दुनिया हम अपनी सुन्दर इंसानी आँखों से शायद एक बार ही देख पाते हैं! ■

मनुस्मृति के प्रति हमारा कर्तव्य

डॉ विवेक आर्य

समाचार पत्र में पढ़ने को मिला की ३ जनवरी को जयपुर में ‘मनुवाद विरोधी सम्मेलन’ संपन्न हुआ। इस सम्मेलन में मनु स्मृति, मनु मूर्ति और मनुवाद के विरुद्ध जन आन्दोलन का ऐलान किया गया। सावित्री बाई फुले की जयंती के अवसर पर राजस्थान भर से आये प्रतिनिधियों की उपस्थिति में मनुवाद विरोधी सम्मेलन किया गया, जिसमें सर्वसम्मति से तय हुआ कि राजस्थान उच्च न्यायालय के परिसर में लगी मनु की मूर्ति के हटने तक देशव्यापी आन्दोलन किया जायेगा।

इस द्वेष को फैलाकर अपनी राजनीतिक रोटियाँ सेंकने वालों को प्रतिउत्तर देने के लिए हमें क्या करना चाहिए? यह हमारे लिए अच्छा अवसर है यह कहने का कि मनुस्मृति में प्रक्षेप हुआ था। इस प्रक्षेप को दूर करके मनुस्मृति के विशुद्ध रूप को ग्रहण करना चाहिए। इसके लिए हमें कुछ कार्यों को शीघ्र पूरा करना होगा, जैसे-

१. सम्पूर्ण एवं विशुद्ध मनुस्मृति (डॉ सुरेंदर कुमार द्वारा सम्पादित) का पुनः प्रकाशन।
२. दोनों का अंग्रेजी/क्षेत्रीय भाषाओं में अनुवाद करवा कर उनका प्रकाशन।
३. मनुस्मृति और शूद्र, मनु स्मृति और नारी, मनु स्मृति और पशु वध, आज के समय मनु स्मृति की प्रासंगिकता जैसे छोटे ट्रैक्ट/फोल्डरों का बड़ी संख्या में वितरण हेतु प्रकाशन।

(शेष पृष्ठ १६ पर)

काजल से आँखें आँज के पलकें न मूंदिये
दरपन पे क्या है गुजरी जरा ये तो पूछिए
बदली की ओट में कहीं होगा छिपा जरूर
जुल्फें हटा के रुख से उजाले को ढूंढ़िए
खुशबू गले के हार से आएगी शर्त है
फूलों के बीच-बीच कोई दिल भी गूँथिए
खुशबू बता रही है कोई आस-पास है
श्वासों को देखिए कि
हवाओं को सूँघिए
जीवन का मंत्र भी इन्हीं
श्वासों में है बसा
वातावरण में 'शान्त'
नये प्राण फूँकिए

-- देवकी नन्दन 'शान्त'

किसी के पास जाने से मुझे कुछ डर सा लगता है
बेवजह मुस्कुराने से मुझे कुछ डर सा लगता है
थोड़ा टूट जाता हूँ मैं खुद हर बार साथ इनके
नए सपने सजाने से मुझे कुछ डर सा लगता है
निकलना फिर ना पड़ जाए कहीं बेआबरू होकर
महफिल में आने से मुझे कुछ डर सा लगता है
आदत हो गई है इस कदर खामोशियों की अब
गीत कोई गुनगुनाने से मुझे
कुछ डर सा लगता है
पढ़ा है जब से मैंने मीर,
गालिब और मुनव्वर को
गजल कोई बनाने से मुझे
कुछ डर सा लगता है

-- भरत मल्होत्रा

बखेडा वतन को मिटाता रहा है
जमाना यहाँ घर बसाता रहा है
यही है फसाना यही है वो झगडा
सदा दुश्मनी क्यों निभाता रहा है
पुराना चलन है जहां बेरहम में
धनी मुफलिसों को सताता रहा है
गरीबी में सपना अधूरा ही रहता
वही ख्वाब क्यों फिर सजाता रहा है
जलाकर कुटी को हवेली बनाना
अमीरों की फितरत बताता रहा है
गगन भेदी निर्माण सब है तो सुन्दर
कुटी की खिल्ली उडाता रहा है

-- कालीपद 'प्रसाद'

वो क्यों बोलने में सँभलते रहे
लगा मुझको सच वो निगलते रहे
वहाँ खास की पूछ होती रही
मियां आम थे हम तो टलते रहे
मिरी जिन्दगी की कहानी छपी
रिसाले हजारों निकलते रहे
छपा था जो अन्दर वही रह गया
कवर पेज लेकिन बदलते रहे
पता था मुझे झूठ बोला गया
ये मजबूरियां थीं बहलते रहे

-- प्रवीण श्रीवास्तव 'प्रसून'

मुझको तो गुजरा जमाना चाहिए
फिर वही बचपन सुहाना चाहिए
जिस जगह उनसे मिली पहली दफा
उस गली का वो मुहाना चाहिए
तैरती हों दुम हिलातीं मछलियाँ
वो पुनः पोखर पुराना चाहिए
चुभ रही आबोहवा शहरी बहुत
गाँव में इक आशियाना चाहिए
भीड़ कोलाहल भरा ये कारवाँ
छोड़ जाने का बहाना चाहिए
सागरों की रेत से अब जी भरा
घाट-पनघट खिलखिलाना चाहिए
घुट रहा दम बंद पिंजड़ों में खुदा
व्योम में उड़ता तराना चाहिए
थम न जाए यह कलम ही 'कल्पना'
गीत गजलों का खजाना चाहिए

-- कल्पना रामानी

आपका आशीष मुझको मिल रहा है
दौर लेखन का तभी तो चल रहा है
जानता हूँ आप ही का है करम ये
आँधियों में दीप जो ये जल रहा है
चल रहा है नेकियों के रास्ते पर
वो तभी तो हर किसी को खल रहा है
मिल रहा है बागबां का प्यार इसको
इसलिए ही तो शजर ये फल रहा है
माँ बहुत हैरान है ये देखकर कि
एक बेटा दूसरे को छल रहा है
कोई तो बात है कि रुकता नहीं ये
कारवां जो साथ मेरे चल रहा है
हर बरस मरता है रावण फिर बताओ
हाथ अपने सच भला क्यूँ मल रहा है

-- सतीश बंसल

वोटरों के हाथ में मतदान करना रह गया
दल वही, झंडे वही, काँधा बदलना रह गया
फिर वही बेशर्म चेहरे हैं हमारे सामने
फिर बबूलों के वनों से फूल चुनना रह गया
चक्र यह रुकने न पाये, चक्र यह चलता रहे
बस, इसी से एक लोकाचार करना रह गया
इक तरफ माँ-बाप बूढ़े, इक तरफ बच्चे अबोध
खुरदरा दोनों तरफ फुटपाथ अपना रह गया
इस फटे जूते में मोची कील मारे अब कहाँ
चल रहा ये इसलिए तल्ला उखड़ना रह गया
ये सियासत रँग बदलती रोज गिरगिट की तरह
इस सियासत का मगर
चेहरा बदलना रह गया
चंद गुर्गे बस विधायक,
सांसद के मौज करते
गाँव की लेकिन तरक्की
का वो सपना रह गया

-- डॉ डी.एम. मिश्र

कुछ काम जरूरी जो हमारे निकल आए
रिश्तों में कई पेंच तुम्हारे निकल आए
हमने तो वही बात कही है जो बजा थी
क्यूँ आपकी आँखों से शरारे निकल आए
जिस धोखे से हमेशा परेशान रहे हम
उस गम के यहाँ और भी मारे निकल आए
हैं बाद तेरे, ख्वाब तेरे, यादें तेरी अब
जीने के लिए और सहारे निकल आए
बैठे रहे साहिल पे तो पहुँचे न कहीं तक
जब गर्क हुए हम तो
किनारे निकल आए
जाहिर है कोई काम
तुम्हें 'होश' पड़ा है
यूँ ही तो नहीं रिश्ते
तुम्हारे निकल आए?

-- मनोज पाण्डेय 'होश'

पत्थरों के शहर में भी, कच्चे मकान बनाये रखना
ताजी हवा के वास्ते घर में, रोशनदान बनाये रखना
पत्थरदिल लोगों को अक्सर, मुर्दा दिल भी कहते हैं
मुर्दा दिल बस्ती में भी, प्यार की आस बनाये रखना
यूँ तो 'मैं और मेरे' लिए, कलह होने लगी घर घर में
जो टूटती डोर को थामें, उन हाथों को बनाये रखना
उडने लायक हों जब बच्चें और पंख मजबूत हो जायें
बदलते दौर की जरूरत, नया आशियां बनाये रखना
माना कि हो गये हो बूढे उम्र से, पैरों में भी थकान है
फिर भी कमा लाना कुछ,
निज अहमियत बनाये रखना
सोचते रहे ताउम्र, किस
तरह 'कीर्ति' मिले जग में
भूलकर ख्वाब सारे, अपनी
इज्जत बनाये रखना

-- अ. कीर्तिवर्धन

हँसा सकी न दर्द को मेरे, इन आंसुओं को रुला के न जा
बिना बुलाए जख्म मिले हैं, निशानियों को भुला के न जा
रखे राहें वफा की मंजिल, ना चल सकेंगे कदम दगा के
रुको जरा इस खाली दिल में, नदानियों को झुला के न जा
सहमे शिकवे तेरे आँचल, परदे लटके बिना रजा के
हटा सकी न जुल्फ के साये, विरानियों को बुला के न जा
कहाँ भरोसा बंद लिफाफे, गाज गिराते बिना खता के
बता तनिक जो ख्याल लायी, लिखावटों को धुला के न जा
बिना सर्द की उठी कँपकँपी, तह तक पहुँची हिलाहिला के
अश्रु बूंद संग गरम हवाएँ, बसंतियों को बुला के न जा
मूक साक्षी हुए तर तरुवर, खिलते मौसम कोंपल पा के
उगा के पत्ते डाली डाली,
टहनियों को डुला के न जा
'गौतम' दाग घुला नहीं करते,
उग आते हैं नजर चुरा के
बिना खता के नींद गंवाई,
तन्हाइयों को सुला के न जा

-- महातम मिश्र 'गौतम गोरखपुरी'

(दूसरी किस्त)

सीख

नीतू सिंह

मैं अपने केबिन से बाहर निकला तो मेरे सहकर्मी श्री सुजित दास बाहर ही खड़े मिल गए। उन्होंने मेरा परिचय एक नौजवान से कराया। एकदम चुस्त डील-डौल वाले नौजवान से जिसकी माथे के बाहर तक झाँकती जुल्फें हम आधे गंजों को चिढ़ा रही थीं। उसकी सपाट शर्ट, हमारी शर्टों से ढुलकती तोंद को अंगूठा दिखा रही थी।

मैंने उससे हाथ मिलाया और हाथ मिलाकर मैं दुःखी हो गया। मैं इस लिए दुःखी नहीं हुआ क्योंकि उसके हाथ अच्छे नहीं थे या फिर उसके अंग-प्रत्यंग के चिढ़ाने से मैं चिढ़ गया था। मैं तो इसलिए दुःखी था क्योंकि उस नौजवान की जगह मैं, किसी और नौजवान की अपेक्षा कर रहा था। मि सिंह की जगह मि सैनी की।

इस पद पर मि सैनी का चयन होना मैंने तय मान लिया था। उनको तो सबसे अधिक नंबर दिए थे मैंने। मि दास के विभाग में हुई इस नई नियुक्ति से मैं खुश नहीं था। मगर मैं कुछ कर भी नहीं सकता। मेरा वास्ता केवल साक्षात्कार बोर्ड में बैठकर नंबर देना था। बाकी चयन जिसका भी हो, वह तो दास के अंडर ही काम करेगा।

यह सेलेक्शन बोर्ड का गलत नियम है। मैं इसके सख्त खिलाफ हूँ। नियुक्ति दास के विभाग की है, तो साक्षात्कार लेने का हक भी उन्हें दिया जाना चाहिए। पर नहीं संस्था तो उल्टे उसको ही चुनने को भेजती है जिसका कोई लेना-देना न हो।

खैर! अब मुझे क्या? मेरा तो बस इतना ही सोचना था कि मि सैनी का चयन हुआ होता तो इसी फ्लोर पर उसे देख-मिलकर मुझे कुछ और भी सीखने का अवसर प्राप्त होता। जब अदने से साक्षात्कार ने मुझ में इतना परिवर्तन किया, तो जाने उसके यहाँ होने से क्या-क्या लाभ होता?

मि सिंह की हंसी ने मेरा ध्यान भंग किया। हंसी भी काबिल-ए-तारीफ है इसकी। उसकी हंसी ने न केवल मेरा ध्यान भंग किया बल्कि मेरे सोच की धारा को भी मोड़ दिया। अब तक मैं मि सैनी के न चुने जाने पर मलाल कर रहा था। पर अब मैं सोचने लगा था कि यदि मि सिंह को चुना गया है तो इन में भी कुछ गुण होंगे। शायद बेहतर ही हों। हो सकता है मि सिंह से भी मुझे कुछ सीखने को मिले। अपने आपको यह सांत्वना देते हुए, मैं जिस काम से केबिन के बाहर निकला था, अब उसी राह निकल लिया।

शाम का समय था। आज मैं पत्नी के साथ मार्केट आया था। वो खुद चकित थी कि आज मैंने इतनी जहमत उठाई तो उठाई कैसे? मगर मैंने उसे चकित रहने दिया और अपने मन की करता गया।

पत्नी जी अपने गार्डन के मच्छरों से छुटकारा पाने के लिए लेमन ग्रास का पौधा लगाना चाह रही हैं, जिसके लिए स्टोर में गमला देख रही हैं। तब तक मैं लिस्ट में दिया गया बाकी सामान स्टोर के दूसरे हिस्से से बटोर लाऊँ ताकि समय की बचत हो सके।

मैं घूमते-घूमते उस सेक्शन में पहुँचा जहाँ दूध में मिलाए जाने वाले पाउडरों के खूबसूरत पैकेजिंग वाले डिब्बे सजे थे, अलग कंपनी का अलग रंग दूर से ही दिख रहा था, फिर पास से तो रंगों का मेल लग रहा था। वहीं एक चॉकलेट का स्टैंड भी था, जिस पर एक ही कंपनी के अलग-अलग वजन के चॉकलेट सजाए गए थे। दस ग्राम से लेकर करीब ढाई सौ ग्राम तक।

मेरी नजर उस स्टैंड के सामने खड़े एक दंपती पर गई जो इस पर चर्चा कर रहे थे कि बड़ी चॉकलेट ली जाए या छोटी या फिर गिफ्ट पैक। अरे यह तो मि सैनी है। मैं उसी ओर देखता रहा। मुझे जाने क्यूँ मिसेज सैनी को देखने की उत्सुकता हुई। मगर उनकी पीठ मेरी ओर थी और मि सैनी उनके साथ, किसी हाई लेवल मिटिंग में की जा रही चर्चा जितने, बिजी थे। जब उनकी समस्या सुलझी, तो मिसेज सैनी ने स्टैंड से गिफ्ट पैक उठाया और मि सैनी को इतनी फुरसत हो सकी कि वे इधर-उधर देख सकें और इधर-उधर देखते हुए मुझे भी देख सकें।

'अरे! हैलो सर।' वह अपनी पत्नी को पीछे छोड़ मेरे पास आकर खड़ा हो गए।

'हैलो। आप यहाँ? अभी भी शहर में ही हैं?'

'हाँ सर इंटरव्यू के लिए कुछ दिन की छुट्टी ली थी। कल निकलना है। एक रिश्तेदार के घर मिलने जा रहे थे तो यह शॉपिंग कॉम्प्लेक्स दिखा और सोचा कि उनके बच्चों के लिए चॉकलेट ले लें।'

इतने में वह पीछे मुड़ा 'नलिनी। यहाँ आओ जरा।' मिसेज सैनी भी मुड़ी और हमारे तरफ हो लीं।

मैंने उन्हें अपनी ओर आते देखा। उनके चेहरे पर हल्की मुस्कुराहट फैली थी या शायद मुझे लग रही थी। पर आभास ऐसा हो रहा था कि कोई जोर-जोर से खुशी के मारे चीख-चिल्ला रहा हो, उछल रहा हो, कूद रहा हो या खुशी में बाहें फैला के नाच ही रहा हो। उनके चेहरे के सुकून और चमक ने मेरे दिमाग में कुछ ऐसी ही तस्वीर खींची, कुछ ऐसा दम था उनकी मुस्कुराहट में।

मि सैनी हमारा परिचय करवा रहे थे और मुझे अपराधी सा महसूस हो रहा था, जैसे मेरी ही वजह से उनका सलेक्शन नहीं हुआ और अब मैं मिसेज सैनी को क्या मुँह दिखाऊँ।

इतने में मुझे ढूँढती हुई मेरी पत्नी जी भी वहाँ आ पहुँची। मैंने भी आपस में परिचय करवाया। मेरी पत्नी ने बहुत मुस्कुराते हुए सबका परिचय लिया। जाने क्यूँ कई सालों में पहली बार, मैं उनके चेहरे को ध्यान से पढ़ रहा था। हाँलाकि उनके चेहरे पर कई इंच लंबी मुस्कुराहट फैली हुई थी, मगर माथे पर पड़े बल के ढेरों निशान यह गवाही दे रहे थे कि मुस्कुराना तो गहना भर है, दिखावे के लिए पहन लिया। मरी-मरी सी त्वचा से वो सारी रंगत और आब गायब था, जो मैं सालों से नोटिस नहीं कर रहा था।

मुझे कुछ बहुत घबराहट सी महसूस हुई और मैं इस बातचीत के सिलसिले को जल्द से जल्द खतम करना चाह रहा था। ऐसा लग रहा था कि मिसेज सैनी की पत्नी में मि सैनी की तस्वीर दिख रही है, उनका किया-कराया सामने आ रहा है और मेरी पत्नी का चेहरा मेरा आईना हो। मैंने इस आईने से भागने के लिए जरूरी काम का बहाना किया और बातचीत के उस सिलसिले को जल्द से जल्द खत्म कर, हम घर की ओर निकल लिये।

अब मैंने मि सैनी को अपने दिमाग से धीरे-धीरे हटाना शुरू कर दिया था और उनकी जगह मि सिंह को देनी शुरू कर दी थी। मुझे पूरा विश्वास था कि वह खूबसूरत नौजवान अपने गुणों में मि सैनी से अधिक खूबसूरत निकलेगा, तभी तो वह सैनी से ज्यादा सफल है। आखिर इंसान को सफलता उसके गुणों के कारण ही तो मिलती है।

सुबह ऑफिस में घुसते ही चहल-पहल, फुसफुसाहट, हा-हा, ठी-ठी औरा झुंड बना-बनाकर लोगों का यहाँ-वहाँ खड़े हो जाना देख रहा था। क्या माजरा है कुछ समझ नहीं आ रहा? किससे पूछूँ? कोई आकर खुद बता जाए तो अच्छा हो, वरना किसी जूनियर से पूछना ठीक नहीं लगेगा। मैं किसी जूनियर को मुँह लगाना भी नहीं चाहता। इन्हें जितना दूर रखा जाए, उतना ही ठीक है, वरना सिर पर चढ़ बैठेंगे। और जब देखो न, तब अपने किसी न किसी काम के लिए आपके पीछे पड़े रहेंगे। कभी प्रोमोशन के लिए चापलूसी करेंगे तो कभी ट्रांसफर के लिए जान खा जाएंगे। और कुछ नहीं तो छुट्टियों के लिए ही हाय-तौबा मचाए रहेंगे।

मगर फिर बात कैसे पता चले? आखिर कौन बताएगा कि हंगामा है क्यूँ बरपा?

अभी अपनी उधेड़बुन और बात जानने की बेचैनी में मैं अकेला ही डूब-उतरा रहा था कि इस मसले से जुड़े सबसे उपयुक्त आदमी, मि दास मेरे केबिन में आए।

'अरे यार! देख न अजीब पंगा हो रखा है।'

'क्या हो गया?'

'तुझे नहीं पता?'

'नहीं। क्या हो गया?'

'बाहर इतना हंगामा हो रखा है और तुझे नहीं पता? किस दुनिया में रहते हो यार?'

'तुम बताओगे तब तो पता चलेगा न या आज के अखबार में आया तो बताओ, अखबार ही देख लेता हूँ।'

'अरे, वो, अपना, नया बंदा था न।'

मैंने भौहें तीन-चार बार उठाकर, भौहों से ही पूछा कि भला कौन बंदा था, किसकी बात कर रहे हो?

'अरे वही, जिससे मिलवाया था उस दिन।'

(अगले अंक में समाप्त)

ऐ चाँद! तेरी दूधियां रौशनी में/नहाई ये धरती और
जाग उठे दिल के/अरमान सारे
तुम्हारे दीदार भर से चढ़ा/मुहब्बत का ऐसा नशा
जैसे शमां को देख/परवाना दीवाना हो जाता
तेरी झिलमिलाती रौशनी में/छलकने लगे है
मुहब्बत का जाम भरा प्याला
क्या होगा अंजाम बाद इसके
हम दीवानों को खबर न होता
कैसा है ये तेरा अंदाज निराला
तेरे आगोश में आते ही
हर कोई मदहोश हो जाता!

-- बबली सिन्हा

जीवन दर्शन है पतंगबाजी
आंखें आसमान पर/पाँव जमीन पर
और फिर उसका संतुलन
धारदार मांझे संग उसका लड़ना
बुलंदियों पर बने रहने का संघर्ष
और फिर उसका कटकर
बिखर जाना नियति
जिसका उदय हुआ है
उसका अस्त होना भी तो निश्चित है

-- अमित कुमार अम्बष्ट 'आमिली'

तुम भी न बस कमाल हो!
न सोचते, न विचारते/सीधे-सीधे कह देते
जो भी मन में आए/चाहे प्रेम या गुस्सा
और नाराज भी तो बिना बात ही होते हो
जबकि जानते हो/मनाना भी तुम्हें ही पड़ेगा
और ये भी कि/हमारी जिन्दगी का दायरा
बस तुम तक
और तुम्हारा बस मुझ तक
फिर भी अटपटा लगता है
जब सबके सामने
तुम कुछ भी कह देते हो
तुम भी न बस कमाल हो!

-- डॉ जेन्नी शबनम

रँगना है मुझे/उसी रंग में तुम्हारे
जिसमें रंग के/मेरी सुबह का सूरज रौशन होता है
और मेरी रातें/चांदनी से पुरनूर होती हैं
तुम्हारा वही रंग/जिसमें घुल के
मेरा आसमां नीला है/और हवाओं में जीवन है
वो रंग जिसे लेकर/फूल खिलते हैं सारे
जंगल है हरा भरा और/खेतों में हरियाली है!
तितलियों के पर चमकते हैं/तुम्हारा वो रंग
जिससे इंद्रधनुष के
सप्त रंग निखरते हैं
रंग लो मुझे भी
अपने किसी भी रंग में
तुम्हारा तो हर रंग न्यारा है
जहाँ के हर रंग से प्यारा है

-- सुमन शर्मा

न वो कर सके वफा हमसे/न हम उनसे बेवफा हो सके
न खुश रहे न खफा हो सके/कोशिशें भी कर लीं हमने
उनसे जुदा होने की/पर और पास आते गये
दूर रहकर भी न जुदा हो सके
न खुश रहे न खफा हो सके
माना कि कमी न थी
उनकी तरफ से भी कोई
कभी हमारी आँखे नम हुईं
तो कभी उन्होंने थीं पलकें भिगोईं
पर कोई मजबूरी रही होगी उनकी भी
की इक नाजुक मोड़ पर/वो न जफा कर सके
न वो कर सके वफा हमसे/न हम उनसे बेवफा हो सके

-- महेश कुमार माटा

शहीदों की चिताओं पे न फूल होंगे
न होंगे मेले, न होगा कोई बाकी निशाँ
वतन पे कुर्बानी देने वाला रहेगा सुनसान
न कोई जश्न होगा/न होगा कोई इन्कलाब
हर एक शहीद बन जायेगा एक ख्वाब
न रक्त बहेगा
न होगा क्रान्ति का आह्वान
अब न होगा कोई सुभाष बलिदान
भारत हो या जापान
आजाद हिन्द फौज का
हर एक सिपाही कहलायेगा गुमनाम

-- के एमु भाई

सुनते हो?/ तुम कुछ पल और ठहर जाओ
मिले हो वर्षों बाद/कर लो हमसे कुछ बात
गिले शिकवे छोडकर/आओ हो जाये साथ
सूर्य की गर्मी को छोड/चलें हम शीतल चाँदनी की छाँव
वहीं हम कर लेंगे आपस में मुलाकात
चाँद को साक्षी मानकर/कर लेंगे हम वादा
रहेंगे हम साथ साथ
दुःख हो या सुख
झेलेंगे एक साथ
एक अच्छे दोस्त होने का
बनायेंगे अपना अलग पहचान
छोडेगे न साथ कभी
हरदम होगें आस-पास

-- निवेदिता चतुर्वेदी

टूटी तन्द्रा मन जाग उठा/उपवन ऐसा था महक रहा
मैं छोड़ सभी कुछ दौड़ पड़ी/रह गयी अचम्भित खड़ी खड़ी
पादप पर विकसित रक्तपुष्प/खिल गए जमीं पर पात खुश्क
पत्तों से फिसल रही ओस बूँद/कर रही स्पर्श मैं आँख मूँद
नन्हे पक्षी कर रहे किलोल
चल रही पवन खिल रहा भोर
बैठे तरु पर खग, कर रहे पुकार
मन पुलक रहा था बार-बार
कर रही आनन्दित भोर मुझे
थी सुखद अनुभूति मिली मुझे

-- नीरजा मेहता

बिन सोचे, बिन सच जाने
अक्सर जुबां से तलवार चलाते हैं
अन्याय होने पर बने तमाशाई
पर संग कीचड़/पत्थर भी बरसाते हैं
मदद की गर कोई गुहार लगाए
बन बहरे इधर-उधर खिसक जाते हैं
उन्माद और उकसावे में आ
भूमिका पुलिस जज की निभाते हैं
चाहते न चाहते, हम भी
भीड़ का हिस्सा बन जाते हैं!

-- अंजु गुप्ता

सूखा पत्ता हूं यूं ही उड़ता रहूंगा
कभी आंधी से कभी तूफान से
मैं बस यूं ही जुड़ता रहूंगा
मैं उस हरे पत्ते की तरह
किसी का मोहताज नहीं
मैं सूखा हूं हवाओं से बातें करता हूं
कभी यहां कभी वहां/दूर गगन में हिलोरें
लेता हुआ मैं उड़ता रहता हूं
कभी छू लेता हूं जमीन को/कभी छू लेता हूं आसमान
फिजाओं की पालकी में झूलता रहता हूं
मैं मगन हूं अपनी जिंदगी में
क्योंकि मुझे पता है मेरी मंजिल क्या है
मेरी मंजिल पता नहीं जलकर राख हो जाऊं
या मिट्टी में दफन खाक हो जाऊं
मगर मैं आजाद हूं/गुलाम नहीं !

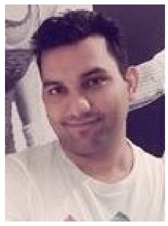

-- परवीन माटी

हे विश्वास! तुम निर्दय, निर्मम धूर्त हो
अपने पाँव के नीचे हजारों सालों से
मानवता को दबाते-दबाते,
अट्टहास का विकराल नृत्य-कृत्य
धोखेबाजी! आघात तुम करते हो
कुटिल नीति के जाल में
आम जनता को बंदी बनाते-बनाते,
सुख-भोग भोग की लालसा में ऊँघते,
हमारे आँसू तुम पीते हो
धर्म-संप्रदाय का नाम लेते-लेते/भेद-विभेद की रचना
घूंघट-पट में अंतर्यामी का रूप तुम हो

-- पी. रवीन्द्रनाथ

जिन्दगी यूँ ना गुजरे मेरी आजकल
सदा चलते रहें तेरे साथ आजकल
यूँ ना विछड़े कभी इक दूजे से हम
हर पल बिताये तेरे साथ आजकल
नहीं आये पास कभी गम का साया
जिन्दगी में खुश रहें सदा आजकल
किसी की नजर ना लगे वफाओं पर
गुनगुनाते रहें यहाँ सदा आजकल
ख्वाब देखते रहें एक दूजे का हम
जमीं पर सपनों को लाये हम आजकल

-- रमेश कुमार सिंह

आहट

'बाबा उठो खाना खा लो।'

'अरे बिटिया तू कब आयी?'

'हल्की सी आहट भी होती थी तो आप उठकर बैठ जाते थे। आज मैं कितनी देर से खटपट कर रही थी पर आप सोते रहे। दरवाजा भी खुला रख छोड़ा था। दो महीने की मजूरी बचाकर ये पट्टों वाला तो दरवाजा लगवाया था।'

'अरे बिटिया याद है, पर अब यह दरवाजा बंद करके भी क्या फायदा। और खुला रहने से तनिक धूप आ जाती है। मेरे जीवन की धूप तो तेरे संग ही चली गयी। अब यह धूप ही सही।'

'फिर भी बाबा बंद रखना चाहिए न, कोई जानवर घुस आये तो?'

'अँधेरे में दम घुटता था बिटिया, देख तू आ गई तो पूरा कमरा जगमगा उठा।'

'क्यों बाबा, अब आपको डर नहीं लगता क्या?'

'डर, किस बात का डर बिटिया। जब से तू विदा होकर गई है, डर भी चला गया। गरीब के पास अब क्या बचा है डरने के लिए। अब तो यह खुला दरवाजा भी मेरे संग तेरी राह देखता रहता है।'

'बाबा, यह दरवाजा अब फिर से बंद रखने का वक्त आ गया।' आँसू से आँखें डबडबा आयीं।

'क्या कह रही है बिटिया?'

'सही कह रही हूँ बाबा! आपने मेरे लिए तो दरवाजा खुला रख छोड़ा, पर आपने यह न देखा कि आपके जँवाई के दिल का दरवाजा मेरे लिए खुला है या बंद?'

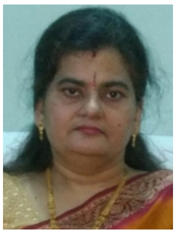

सवालिया आँखें बाबा के पथराये चेहरे पर जम गई थीं।

-- सविता मिश्रा

पास का रिश्ता

मांगेलाल के बहुत मांगने पर भी उन्हें पुत्र-रत्न की प्राप्ति नहीं हो सकी थी. इसका मलाल होते हुए भी, उन्होंने सब्र करना सीख लिया था. इसके अतिरिक्त वे कर भी क्या सकते थे! बेटियों की शादी हो गई थी. वे अपने-अपने घर खुश थीं. मांगेलाल भी समय-चक्र के अनुसार चल रहे थे. एक दिन उनका समय-चक्र रुक गया. घर में हाहाकार मच गया. तुरंत बेटियां-दामाद, भाई-भतीजे एकत्रित हो गए. सबको उन्हें अंतिम विदाई देने की जल्दी थी, पर मुखाग्नि कौन दे! दामाद को कोई यह हक नहीं दे रहा था. भाई-भतीजे १२ दिन के बंधन के कारण ना-नुकुर कर रहे थे. मांगेलाल के गांव के एक व्यक्ति का बेटा आगे आया. रिश्ता भले ही दूर का था, पर इंसानियत का तकाजा तो था ही. सबने पूछा- 'क्या १२ दिन काम पर नहीं जाओगे?'

'आजकल काम पर जाने का बंधन ही कहां होता है? लैपटॉप और फोन से कभी भी, कहीं भी रहकर काम कर लो. दूर के रिश्ते के कारण कोई ऐतराज न हो, तो मैं हाजिर हूं.'

'यही तो सबसे पास का रिश्ता है.' क्रियाकर्म कराने वाले पंडितजी का कहना था.

-- लीला तिवानी

कर्तव्य पथ

आज करुणा, सासू माँ के न रहने पर दोराहे पर खडी थी, जिसकी कल्पना स्वप्न में भी नहीं की थी। दूसरे शहर गए अभी दिन ही कितने हुए थे, घर के सदस्यों में आपसी अहम के दौरान होने वाले क्लेश के चलते पति शिव ने आफिस से स्थानांतरण दूसरे शहर में करवा लिया। फिर तो जितने मुंह उतनी बातें, 'इतनी कम तनख्वाह में बच्चों को लेकर अकेले रहोगे आटे दाल का भाव मालूम चलेगा।'

कम में सुखी रहने का भाव लिए जिदंगी पटरी पर दौड़ रही थी कि अचानक सासू माँ की बीमारी का तार मिला, तो अगले ही पल परिवार का संबल बनने खडी हो गयी, लेकिन घर के सदस्यों का रवैया ज्यों का त्यों था। सासू माँ के गुजर जाने के बाद एक तरफ कच्ची उमर के पायदान पर खडी ननद की जिम्मेदारी थी तो दूसरी तरफ पति और बच्चों के साथ स्वछंद आसमां में उड़ान भरती जिदंगी। रात खाने के वक्त पति बोले, 'करुणा क्या सोचा?'

'सोचना क्या है, इतनी भी स्वार्थी नहीं कि जिम्मेदारी से भाग घर की बेटी को अकेला छोड दूँ, माँ के बिना बच्चों का वजूद नहीं होता है, दोनों बच्चों के साथ दीदी भी मेरी बेटी हैं।'

दोराहे पर खडी करुणा के सामने से धुंध छँट गयी और अंतर्मन की सकारात्मक आवाज सुन कर्तव्य पथ पर बढ़ गई।

-- संयोगिता शर्मा

नया घर

अमर और रमा दोनों ही कामकाजी दंपत्ति थे। उनका एक दस वर्षीय बेटा सोनू था जो कक्षा चार का विद्यार्थी था। अमर की माताजी कमला सहित यह चार लोगों का परिवार एक बेडरूम के छोटे से फ्लैट में रहता था। चूंकि अमर और रमा दोनों ही कामकाजी थे, अत: माताजी की समुचित देखभाल नहीं हो पा रही है यह महसूस कर दोनों मन ही मन दुखी थे।

अपनी एक सहेली की राय पर रमा ने कमला को वृद्धाश्रम में रखने का फैसला किया। अमर ने भी इस फैसले का समर्थन किया। उसकी नजर में वहां कम से कम माँ का ध्यान तो रखा जायेगा। जबकि कमला ने इसका विरोध किया। उसका कहना था कि वह जैसे है खुश है। कम से कम अपनों के बीच तो है। लेकिन रमा उन्हें वृद्धाश्रम में छोड़ ही आई। हर रविवार दोनों कमला से मिल आते।

कमला के न रहने से सोनू उदास रहने लगा था।

अमर के बाबूजी ने कई साल पहले एक छोटा भूखंड खरीद रखा था। अमर ने वहां पर अपने लिए नया मकान बनाने का काम शुरू करा दिया। एक दिन अपनी माँ के साथ सोनू भी नए घर का काम देखने गया। अमर ने रमा को घर का नक्शा समझाते हुए बताया- 'यह एक बड़ा हॉल है। इसके बगल में रसोई और पीछे की तरफ दो कमरे शयन कक्ष होंगे। एक हमारे लिए और एक सोनू के लिए।'

अभी रमा कुछ जवाब देती कि सोनू अचानक बोला पड़ा- 'पापा ! दो कमरे क्यों? मेरे लिए तो एक ही कमरा काफी है। जब आप लोग बूढ़े हो जायेंगे, तो मैं आप दोनों को वृद्धाश्रम में भेज दूंगा। फिर दूसरे कमरे की क्या जरुरत है?'

सोनू की बातें सुनकर अमर और रमा दोनों की आँखें खुल चुकी थीं। एक क्षण की देरी किये बिना दोनों वृद्धाश्रम जाकर कमला को घर वापस ले आये। अब दादी और पोते की आँखों में खुशी की चमक थी।

-- राजकुमार कांदु

कम्बल

ठण्ड से ठिठुरते होरी ने नेताजी से पूछा- 'साहब वोट कब पड़ेंगे?'

'अभी तो जनवरी चल रही है, अप्रैल में पड़ेंगे।' नेताजी ने जबाब दिया।

'अगर जल्दी पड़ते, तो शायद तन ढकने को एक कंबल ही मिल जाता।' अपनी फटी कमीज से अधनंगे तन को ढकने का प्रयास करता होरी मन ही मन सोच रहा था।

पटकथा

देश के एक राज्य में परिवारवादी दल को चुनाव के समय अपनी कुर्सी कैसे बचे चिन्ता हुई। पहले परिवारिक बरतन यात्रा निकाली, परिणाम ढाक के तीन पात। आवाजें रात-दिन ठन-ठन-ठन। मन मस्तिष्क पर बल पड़े। एकान्त में मिले पटकथा लिखी। अगले दिन नाटक मंचित हुआ।

एक ने एक समुदाय दूसरे ने एक समूह आकर्षित किया। यह प्रयास सफल। चेहरे खिले। जनता फिर मूर्ख बनेगी।

-- शशांक मिश्र भारती

कब तक बालीवुड के आका, डाका डालेंगे अस्मत पर
कब तक घायल संस्कृति होगी, कब तक रोयेगी किस्मत पर
कब तलक सनातन पीढ़ी का परिहास बनाया जाएगा
कब तक हिंदू की छाती पर, दुष्चक्र चलाया जाएगा
अब नहीं, नहीं जी और नहीं, यह साजिश पलने देना है
जो बलिदानों को गाली दे, वो फिल्म न बनने देना है
संजय तुमने शायद अफीम पीली झूठे इतिहासों की
अभिव्यक्ति तुम्हारी है गुलाम शायद वहशी अहसासों की
रानी पद्मावत नाम नहीं, भारत की शौर्य कहानी है
रानी पद्मावत रजपूती गाथा की अमर निशानी है
रानी पद्मावत नाम नहीं, चित्तौड़ किले की काया है
वो मर्यादा का दीपक थी, वो परम्परा की छाया है
खल कामी खिलजी का चरित्र तुमको रूमानी लगता है
वो क्रूर दरिंदा भी तुमको अब प्रेम निशानी लगता है
जो खिलजी रानी रूप देख हमला करने को आया था
रानी का रोम तलक भी जिसने कभी नहीं छू पाया था
जिस खिलजी के प्रतिउत्तर में, रजपूत वीर कुर्बान हुए
आंगन की तुलसी बची रहे, इस चाहत में बलिदान हुए
खिलजी के गंदे हाथ छुएं, उससे पहले प्रतिकार किया
रानी अभिमानी ने आखिर जलकर मरना स्वीकार किया
रे मूरख संजय देख जरा, जो अग्नि चिता पर लेटी थी
वो सुल्तानों की लूट नहीं, सच्चे हिन्दू की बेटी थी
वो रानी पावनता प्रतीक, वो स्वाभिमानी की मानी थी
वो रानी रजपूताने की, वो रानी हिंदुस्तानी थी
उस रानी की गाथा, बाजारी राहों में दिखलाओगे?
तुम रानी के तन को खिलजी की बाँहों में दिखलाओगे?
हो फिल्मकार तो फिल्म बनाओ, बुरके के हालातों पर
दस बच्चे पैदा करने पर, इस्लामी तीन तलाकों पर
अभिव्यक्ति-दुहाई देते हो, पर अक्सर ही बेहोश रहे
तुम इस्लामी आतंकों पर बहरे होकर खामोश रहे
रानी पद्मावत के बेटों के थप्पड़ जब दो पड़ते हैं
तुमको हिन्दू के बेटों में आतंकी दिखने लगते हैं?
तुम सम्मुख धर्म सनातन के, कीचड़ बरसाते जाओगे
भारत की बहन बेटियों को नीलाम कराते जाओगे
ना रानी का जौहर देखा, ना बलिदानी अरमान दिखा?
रानी का जिस्म तुम्हें केवल अय्याशी का सामान दिखा?
ब लीवुड के भांडों सुन लो, दुःस्वप्न नहीं पलने देंगे
चलचित्र बनाओ खूब मगर,
छलचित्र नहीं चलने देंगे
ये 'कवि गौरव चौहान' कहे,
फिल्मों का भूत उतारेंगे
अब बात बहन बेटी की है,
अंदर तक घुसकर मारेंगे

-- गौरव चौहान

ये मादक संस्पर्श तुम्हारा मुझको तो पागल कर देगा
तुमको जल ही जल करने को ये मुझको बादल कर देगा
ऐसी छुअन कि सिहरे है तन, ऐसी छुअन कि पुलके है मन
ऐसी छुअन हृदय की वीणा, बजने लगे स्वयं झन-झन-झन
हाथों से ये हाथ पकड़ना भीतर तक हलचल कर देगा
ये मादक संस्पर्श तुम्हारा मुझको तो पागल कर देगा
ऐसी छुअन प्यास तक बहके, ऐसी छुअन साँस तक महके
ऐसी छुअन कहाँ ले जाये, आनंदित मन-पंछी चहके
अधरों से अधरों को पढ़ना मुझको नीलकमल कर देगा
ये मादक संस्पर्श तुम्हारा मुझको तो पागल कर देगा
ऐसी छुअन शिखर को छूना, ऐसी छुअन भँवर को छूना
ऐसी छुअन कि सागर-तल को
और कभी अंबर को छूना
बाँहों से खजुराहो गढ़ना
मुझको गीत-गजल कर देगा
ये मादक संस्पर्श तुम्हारा
मुझको तो पागल कर देगा

-- डॉ. कमलेश द्विवेदी

गंगा दूषित हो जाएगी, लज्जित होते भूप मिलेंगे
कलयुग में ना जाने कितने, जयचंदों के रूप मिलेंगे
सब मनु रोगी हो जायेंगे, सैनिक लोभी हो जायेंगे
नित्य नए नव धर्म चलेंगे, साधू भोगी हो जायेंगे
सागर को उपदेशित करते, जग के सारे कूप मिलेंगे
कलयुग में ना जाने कितने, जयचंदों के रूप मिलेंगे
ज्ञानी मौन रहेंगे जग में, अनपढ़ ज्ञानी हो जायेंगे
सत्तालोभी, कपटी, द्रोही, सब अभिमानी हो जायेंगे
भोली जनता को छलने को, नित्य नए प्रारूप मिलेंगे
कलयुग में ना जाने कितने, जयचंदों के रूप मिलेंगे
विद्यारूपा शोषित होगी, मंचों पर लक्ष्मी छायेगी
मर्यादा का मोल न होगा, लज्जा को लज्जा आयेगी
लालच होगा सबसे ऊपर, सब इसके अनुरूप मिलेंगे
कलयुग में ना जाने कितने, जयचंदों के रूप मिलेंगे
धोखा देकर जीत मिलेगी, दुष्टों के घर मीत मिलेंगे
चारण हो जायेंगे सब कवि,
रचते वन्दन गीत मिलेंगे
झूठ पुरस्कृत होगा जग में,
सत्य सदा विद्रूप मिलेंगे
कलयुग में ना जाने कितने,
जयचंदों के रूप मिलेंगे

-- अभिवृत अक्षांश

जब आँगन में मेघ निरंतर झर-झर बरस रहे हों
ऐसे में दो विकल हृदय मिलने को तरस रहे हों
जब जल-थल सब एक हुए हों, धरती-अम्बर एकम
शोर मचाता पवन चले जब छेड़-छेड़ कर हर दम
ऐसे में तुम आना, प्रियतम! ऐसे में तुम आना
कंपित हो जब देह, नेह की आशा लेकर आना
प्रेम-मेंह की एक नवल परिभाषा लेकर आना
लहरों से अठखेली करता चाँद कभी देखा है?
या आतुर लहरों का उठता नाद कभी देखा है?
चंदा बन के आना, प्रियतम! चंदा बन के आना
पल-प्रतिपल आकुल-व्याकुल मन, राह निहारे हारा
तुम आये, ना पत्र मिला, ना कोई पता तुम्हारा
फागुन बीता, बीत गया
आषाढ़ कि आया सावन
कब आओगे, कब आओगे,
कब आओगे साजन?
आकर तुम मत जाना,
प्रियतम आकर तुम मत जाना

-- डॉ. पूनम माटिया

गर प्यार है गुनाह तो मैं गुनाह चाहती हूँ
सपनों से भरी आँखों में पनाह चाहती हूँ
वो मुराद मेरी मौला मेरे नाम कर दे उसको
किस्मत मेरी बना दे या फना कर दे मुझको
मैं जानती नहीं हूँ सच क्या, मैं चाहती हूँ
बस ये पता है उसको, बेपनाह चाहती हूँ
गर प्यार है गुनाह तो मैं गुनाह चाहती हूँ
हो खुशी मेरी और लब उसके मुस्कुराये
हो गम उसको तो, आँख नम मेरी हो जाए
दर पर उसके करना मैं सजदा चाहती हूँ
सवाब में इक प्रेम की निगाह चाहती हूँ
गर प्यार है गुनाह तो मैं गुनाह चाहती हूँ
बन शबनम फूलों की मैं उसके लब छू लूँ
नयनों में सज कर पलकों का झूला झूलूँ
मैं प्रेम के वेदों को फिर गढ़ना चाहती हूँ
अपने किये गुनाहों का इस्लाह चाहती हूँ
गर प्यार है गुनाह तो मैं गुनाह चाहती हूँ
मेरे हाथों का कंगन मेरे माथे की बिंदिया
मेरे पैरों की पायल, हो चाहे मेरी बिछिया
श्रृंगार पूरा उससे ही
मैं करना चाहती हूँ
कुछ और नहीं बस
प्रेम की राह चाहती हूँ
गर प्यार है गुनाह तो
मैं गुनाह चाहती हूँ

-- प्रिया वच्छानी

नेंक सोचि समझि भरतार, कमल कौ बटनु दबाइ दीजो।
जे पांच साल ते लूटि रहे,
भाग प्रदेश के फूटि रहे
जे नाटक करें हजार, हजार, सपा कूं मजा चखाइ दीजो।
नेंक सोचि समझि भरतार, कमल कौ बटनु दबाइ दीजो।
जे बसपा मौका ताड़ि रही,
जे जातिवाद फैलाइ रही
हाथी करि देउ बेकार, अब धूरि में जाइ मिलाइ दीजो।
नेंक सोचि समझि भरतार, कमल कौ बटनु दबाइ दीजो।
जाने बस चमचे पाले हैं,
और जमकर करे घुटाले हैं
कांग्रेस कौ बस परिवार, अब जाकूं खतम कराइ दीजो।
नेंक सोचि समझि भरतार, कमल कौ बटनु दबाइ दीजो।
विकास प्रदेश कौ करनौ है,
भाजपा कूं फिर ते लानौ है
अब होगौ बेड़ा पार, वोटन ते कमल खिलाइ दीजो।
नेंक सोचि समझि भरतार, कमल कौ बटनु दबाइ दीजो।
मोदी जी सबके प्यारे हैं
भारत मां के रखवारे हैं
जे 'बीजू' करै पुकार,
बल जाकौ और बढ़ाइ दीजो।
नेंक सोचि समझि भरतार,
कमल कौ बटनु दबाइ दीजो।

-- बीजू ब्रजवासी

नहीं, नहीं, नहीं

मनमोहन भाटिया

(तीसरी और अंतिम किस्त)

आसिफ- 'ठीक है। फिर भी नजर झुकी रखना। कुछ मत कहना। मैं संभाल लूंगा।'

रात के थके आसिफ और रिहाना बैठक में आए, जहां वसीम रिश्तेदारों के साथ इंतजार कर रहा था।

वसीम- 'आसिफ भाई अपना वायदा पूरा करो। रिहाना को तलाक दो।'

आसिफ ने रिहाना की तरफ देखा। उसकी निगाह झुकी हुई थी। आश्वस्त हो कर उसने कहा- 'मैंने कहा था, दुबई जाने से पहले तलाक दे दूंगा। दुबई जाने में दो दिन हैं। दो दिन बाद आना। मुझे मालूम है, मैंने कहा था। आप सब सुबह-सुबह आए हैं। रिहाना चाय सबके लिए बनाओ।'

बड़ी मासूमियत से रिहाना ने कहा- 'जी बनाती हूं। आपकी रसोई कहां है और सामान किधर है। जरा बता दीजिये।'

आसिफ रिहाना के साथ रसोई में चला गया। चाय और बिस्कुट के साथ रिहाना बैठक में आई। वसीम ने रिहाना को देखा। हसरत भरी निगाहों से देखते वसीम को रिहाना ने अनदेखा कर दिया। झट से मुंह फेरकर आगे निकल गई। सबने रिहाना की बनाई चाय की तारीफ की। चाय पीने के बाद सब चले गए। आसिफ ने अपने अब्बू से कहा कि वे दोनों रिहाना और आसिफ नाश्ता करके फिल्म देखने जाएंगे। शाम को ही घर वापिस आएंगे।

रिहाना- 'मैं अभी नहा कर आती हूं। नाश्ता मैं बनाऊंगी।'

हालांकि रिहाना को रसोई की अधिक जानकारी नहीं थी फिर भी जो व्यंजन उसने नाश्ते में बनाये, उनकी सबने तारीफ की। नाश्ते के बाद आसिफ और रिहाना फिल्म देखने के लिए निकले।

रिहाना- 'पहले कहीं बैठ जाते हैं। फिल्म दोपहर बाद खाना खाने के बाद देखेंगे। कुछ बात हो जाएगी।'

आसिफ और रिहाना मॉल के पार्क में एक बेंच पर बैठ गए। आसिफ ने रिहाना का हाथ अपने हाथों में लिया और उसकी चूड़ियों से खेलने लगा।

रिहाना- 'आपने तलाक को मना क्यों कर दिया?'

आसिफ- 'मुझे तुमसे प्यार हो गया है। कल रात को भी कहा, फिर उसी बात को दोहराते हुए कहता हूं, मैं वसीम नहीं, आसिफ हूं। उसने तुम्हे प्यार नहीं दिया। मैं करता हूं। मेरी तरफ से कोई बंदिश नहीं। नौकरी करना चाहती हो, कल से ऑफिस जा सकती हो। मैं भी दुबई नहीं जा रहा हूं। कंपनी से बात करता हूं, दिल्ली वाले ऑफिस में पोस्टिंग के लिए कहता हूं। दिल्ली पोस्टिंग नहीं मिली, तब दूसरी नौकरी ढूंढ़ता हूं।'

रिहाना- 'मैं डरती हूं कहीं खिलौना न बन जाऊं। पहले वसीम ने खेला, दुत्कार दिया। तीन लफ्जों में दुनिया बदल दी। अब कहीं तुम न फिर से दोहराओ।'

आसिफ- 'ये तीन लफ्ज बड़े जालिम हैं। हमें जुबान पर भी नहीं लाने चाहिएं। हमारे धर्म में लिखा है। मजबूर हैं। परहेज रखे उसी में सबकी भलाई है। तुम को यकीन के साथ कह सकता हूं, मैं आसिफ हूं, वसीम नहीं। कोई जबरदस्ती नहीं करूंगा। रजामंदी तुम्हारी होगी। वरना जो तय था तलाक दे दूंगा। पर सोच विचार कर लो। पूरी जिन्दगी का सवाल है, तुम्हारी भी और मेरी भी।'

रिहाना- 'सोचने के लिए वक्त चाहिए।'

आसिफ- 'जितना वक्त लो, तुम्हें दूंगा। पर अब खाना खाते हैं। फिल्म देखनी है।'

रिहाना और आसिफ फिल्म देख रहे थे। आसिफ ने रिहाना का हाथ अपने हाथों में लिया हुआ था। सोच रहा था कि रिहाना का क्या जवाब होगा। रिहाना का मन सोच रहा था कि क्या करे, किस राह पर चले? फिल्म चल रही थी परंतु दोनों का मन विचलित था। आसिफ रिहाना को देखता। शायद वह उसे स्वीकृति देगी। कुछ मुस्कान उसके चेहरे पर छलकी। आसिफ को कुछ तसल्ली हुई और उम्मीद जगी।

रात को आसिफ ने रिहाना का हाथ पकड़ा। कमरे के दरवाजे की ओर देखा। दरवाजा बंद था, कुण्डी लगी थी। रिहाना आसिफ के नजदीक आई। धीरे से कहा- 'हां।'

और खुशी में आसिफ ने रिहाना को बांहों में भर कर उसके गालों पर एक चुम्बन रख दिया। पल भर के बाद आसिफ और रिहाना दो जिस्म एक जान थे।

अगली सुबह वसीम फिर आसिफ के घर पहुंचा।

वसीम- 'आसिफ, अपना वायदा पूरा करो।'

आसिफ- 'तुम भूल रहे हो, कहा था दुबई जाने से पहले तलाक दे दूंगा। जब दुबई जाऊंगा, दे दूंगा। अभी तुम घर जाओ।'

आसिफ का यह जवाब सुन कर बिरादरी ने कहा कि आज के बाद वसीम के साथ नहीं आएंगे। वक्त खराब करने के लिए उन्हें न बुलाया जाए। तलाक हो य न हो, उनकी बला से। आसिफ जाने या वसीम। खुद मामला सुलट ले। बिरादरी नाराज हो गई। वसीम ने हौसला नहीं छोड़ा। हर रोज सुबह वसीम आसिफ के घर पहुंचता, आसिफ नहीं कह देता।

रिहाना ने ऑफिस जाना शुरू कर दिया। आसिफ का तबादला दुबई से दिल्ली ऑफिस हो गया। एक दिन इतवार की सुबह वसीम ने आसिफ को पकड़ा और झगड़ा करने लगा। तू-तू मैं-मैं के बाद हाथापाई हुई। आसिफ ने कह दिया कि रिहाना उसकी बीवी है। तलाक को भूल जाये। तलाक नहीं देगा, नहीं देगा, नहीं देगा।

झगडे के बीच में रिहाना ने कहा- 'वसीम तुम चले जाओ। मेरी जिन्दगी में अब तुम्हारा कोई स्थान नहीं है। मेरा शौहर आसिफ है।'

वसीम एक लुटे-पिटे खिलाडी की तरह चला गया। उसके कानों में आवाजें गूंज रही थीं- 'नहीं, नहीं, नहीं।'

(समाप्त)

कहानी

नींव

आशीष कुमार त्रिवेदी

नीता का पारा चढ़ा हुआ था. विवेक नीता की नाराजगी समझ रहा था. उसे मनाते हुए बोला, 'अब अपना मूड खराब मत करो. हंसो बोलो.' नीता ने घूर कर देखा फिर गुस्से से बोली, 'मुझे दो चेहरे रखने नहीं आते हैं. मेरा मूड खराब है और वह दिखेगा भी.'

'मूड खराब कर क्या मिलेगा.' धीरे से बातचीत से हल निकल आएगा.

'उस दिन बालकनी की छत का प्लास्टर टूटकर गिर गया. कुछ क्षण पहले गिरता तो बबलू चोटिल हो जाता. धीरे'धीरे के चक्कर में एक दिन छत सिर पर गिर जाएगी.' नीता ने कटाक्ष किया.

कुछ सोचकर विवेक बोला 'ठीक है घर की मरम्मत और रंग रोगन करवा लेता हूँ.'

'जो मर्जी करिए. पर इस पुराने मकान की नींव ही कमजोर हो गई है. क्या फायदा होगा?' नीता यह कहते हुए रसोई में चली गई.

विवेक सोचने लगा कि नीता भी अपनी जगह सही है. मकान बहुत पुराना हो गया है. सालों से इसकी मरम्मत व पुताई भी नही हुई है. इतने बड़े भवन के रंग रोगन पर खर्च भी तो बहुत आता है. पीछे बगीचे के लिए कितनी जगह बेकार पड़ी है. अब कौन करे बागबानी. ना ही समय है और ना ही इतना पैसा.

मकान बड़ा था पर अधिकांश हिस्सा सही देखभाल न होने के कारण प्रयोग के लायक नहीं रह गया था. फिर तीन प्राणियों को जगह भी कितनी चाहिए थी? बबलू भी दसवीं कर चुका था. उसकी इच्छा इंजीनियर बनने की थी. उसकी पढ़ाई के लिए काफी पैसे की जरूरत पड़ेगी. प्रस्ताव मान लेने में कोई हानि नहीं थी. पर बड़े भइया न मानने पर अड़े थे.

'गंगा सदन' करीब सत्तर साल पहले विवेक के दादाजी ने बनवाया था. उनके पिता की मृत्यु के बाद यह घर विवेक और उसके बड़े भाई को मिला था. नीचे का हिस्सा बड़े भाई का था और ऊपर विवेक अपने परिवार के साथ रहता था.

स्थान के हिसाब से मकान की स्थिति बहुत अच्छी थी. इसीलिए कुछ दिन पहले एक बिल्डर ने इस मकान को खरीदने की इच्छा जताई. उसने प्रस्ताव दिया था कि

(शेष पृष्ठ २६ पर)

दर्दे-दिल कैसे सुनाया जाएगा
कब तलक ऐसे छुपाया जाएगा
बेवजह रुसवाईयों के पन्ने पर
नाम मेरा ही लिखाया जाएगा
प्यार की हद तक निभाई दोस्ती
पर, बेवफा हमको बताया जाएगा
रंजिशें अच्छी नहीं लगती हमें
हमें ही हमसे मिटाया जाएगा
हर खता मेरी नहीं तेरी भी है
आईना तुझको दिखाया जाएगा
फूल मुरझाने लगे हैं बाग के
फिर नया पौधा लगाया जाएगा
दास्तां हम लिख रहे हैं प्यार की
और क्या हमसे लिखाया जाएगा
बह रही हैं आंखों से चिंगारियां
आग का दरिया बहाया जाएगा
खुश नहीं वो कत्ल करके भी मेरा
क्या खून से मेरे नहाया जाएगा
बेसबब सी जिंदगी लगने लगी
और कितना दिल दुखाया जाएगा
प्यार करने की सजा ही मौत है
कब हमें सूली चढ़ाया जाएगा
रूह को मिलने से कैसे रोकोगे
क्या कब्र को मेरी खुदाया जाएगा
बह रहे हैं जख्म, है चाक जिगर
अब न दर्दे-दिल सिलाया जाएगा
चाहतों में डूबकर पागल हुए
कब हमारा घर छुड़ाया जाएगा
बैठे हैं कब से अकेले बज्म में
अब कहाँ हमको बुलाया जाएगा
है हमें अन्जामे-उल्फत का पता
इक दिन जिंदा ही जलाया जाएगा
लिख दिया है नाम दिल पर तो तेरा
अब कहाँ हमसे मिटाया जाएगा
तू ही बता कैसे सहें ये बेरुखी?
अब यूं और न मुस्कुराया जाएगा
यूं दर्द होता है 'जानिब' को, सुनो
चीर के न दिल दिखाया जाएगा

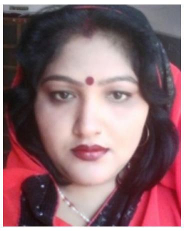

-- पावनी दीक्षित 'जानिब'

चाँद को जब भी सँवारा जाएगा
टूट कर कोई सितारा जाएगा
है कोई साजिश रकीबों की यहाँ
जख्म दिल का फिर उभारा जाएगा
सिर्फ मतलब के लिए मिलते हैं लोग
वह नजर से अब उतारा जाएगा
कुछ अदाएं हैं तेरी कातिल बहुत
यह हुनर शायद निखारा जाएगा
रिंद है मासूम उसको क्या खबर
जाम से बेमौत मारा जाएगा
उम्र गुजरी है वफादारी में सब
बेवफा कहकर पुकारा जाएगा
टूट जायेंगी वो दिल की बस्तियां
गर तुम्हारा इक इशारा जाएगा
मुंतजिर वह आरजू मायूस है
वस्ल का तनहा सहारा जाएगा
जार मिट्टी का है मत इतराके चल
हर गुमां इक दिन तुम्हारा जाएगा
हिज्र में कुछ जिद का आलम देखिए
वह जनाजे में कुँवारा जाएगा
ठोकरों के बाद भी दीवानगी
मैकदों में वह दोबारा जाएगा
ख्वाब में शब भर रही तुम साथ में
दिन भला कैसे गुजारा जाएगा
क्या हुआ गर चाँद में कुछ दाग हैं
ईद की खातिर निहारा जाएगा

-- नवीन मणि त्रिपाठी

खिलौना जब बनाया दिल किसी ने
किसी का तब रुलाया दिल किसी ने
किसी ने प्यार की थंपकी लगाई
जफाकर के दुखाया दिल किसी ने
सभी मतलब परस्ती दोगले हैं
नहीं दिल से मिलाया दिल किसी ने
हमें महसूस ये क्यों हो रहा है
नजर से है हटाया दिल किसी ने
कुचल डाला भरा अरमान से था
कभी खिलखिलाया दिल किसी ने
मसीहा हम बने फिरते सभी के
हमारा ही सताया दिल किसी ने
सजी थी चांद सी दुल्हन किसी की
सितारों सा सजाया दिल किसी ने
गए जब रूठकर के बज्म से हम
तड़पकर के मनाया दिल किसी ने
बड़े भोले बड़े मासूम हम थे
नजर से ही लुभाया दिल किसी ने
सुनी कल राह में ये खूब चर्चा
मुहब्बत से हराया दिल किसी ने
रहे थे लोग हमसे पूछ बातें
कहो कैसे दुखाया दिल किसी ने
मचा है शोर सा हर सूं ये कैसा
शहर का जलाया दिल किसी ने
हजारों आह निकली आस टूटी
गरीबों का सताया दिल किसी ने
गगन से नूर लेकर आप आए
जमीं का सजाया दिल किसी ने?
भरोसा था हमें इस दिल पे' कितना
किया कैसे चुराया दिल किसी ने
वफा की हर रस्म हमने निभाई
नजर से क्यों गिराया दिल किसी ने

-- अंकिता कुलश्रेष्ठ

कोई बात होठों में दबाकर देख लो यारो
माँ सब समझती है छुपाकर देख लो यारो
किसने कह दिया तुमसे दिल आशिकी तोड़ती है
कभी गरीबी को भी आजमाकर देख लो यारो
भूख, प्यास, तड़प, जरूरतें सब जान जाओगे
किसी गरीब के बच्चे को जाकर देख लो यारो
गिले, शिकवे तुम्हारे दरमियां सब मिट ही जायेंगे
कभी उसको भी तुम गले लगाकर देख लो यारो
परिंदा कह रहा था तुम भी उड़कर आसमां छू लो
तुम भी पंख अपने फड़फड़ाकर देख लो यारो
तुम्हारी भी तो कोशिशें उजाला कर ही सकती हैं
तुम भी जुगनू जैसे जग-मगाकर देख लो यारो
आखिर में जमीं पर सभी को आना है एक दिन
कितनी भी बुलन्दी पे तुम जाकर देख लो यारो

-- जी.आर. वशिष्ठ

तनहाई को मीत बनाओ तो जानूँ
गम को अपने गीत सुनाओ तो जानूँ
लौ से मिलकर जले न कोई परवाना
प्रीत की ऐसी रीत चलाओ तो जानूँ
नरम दिलों को पत्थर होते देखा है
पत्थर को नवनीत बनाओ तो जानूँ
सभी कोसते रहते काली रातों को
आगे बढ़कर दीप जलाओ तो जानूँ
जो भविष्य के लिए अमर कर दे तुमको
ऐसा कोई अतीत बनाओ तो जानूँ
बुरे स्वप्न तुम बीत गए मैं जाग गया
अब तुम मुझे सभीत बनाओ तो जानूँ

-- दिवाकर दत्त त्रिपाठी

ये इश्क है ये लबों से बयां नहीं होता
वो राज है जो किसी से निहां नहीं होता
जहाँ दिलों में मुहब्बत नहीं पला करती
किसी भी हाल खुदा तो वहाँ नहीं होता
जरा सी चोट से दिल टूट जाया करते हैं
इसीलिए मैं कभी बदजुबां नहीं होता
अधूरे लोग हमेशा छलकते रहते हैं
जो पूरे हैं उन्हें कोई गुमां नहीं होता
नसीब को न परखना कभी भी 'माही' तूये
मारता तो है लेकिन निशां नहीं होता

-- महेश कु. कुलदीप 'माही'

वो बात ही कुछ ऐसी कर गए होंगे
कि ख्वाब पलकों से फिसल गये होंगे
यूँ तो बेदर्द नही था वो कभी इतना
वक्त अपनी करवट बदल गए होंगे
धूल चेहरे पे उड़ाते रहे कि पहचान न हो
अश्क भी बहने से मुकर गए होंगे
शहर में चर्चा गर्म थी अपनी आशनाई की
दिल, दिलजलों के जल गए होंगे
हवाओं ने खबर ये आस्मां तक उड़ा डाली
तब बादल कई घर से मचल गये होंगे
अब वो मुड़ के देखते हैं परछाइयाँ मेरी
धूप के पहरे कुछ बदल गए होंगे

-- प्रियंवदा अवस्थी

मेरा ख्याल दिल में जब भी कभी आया होगा
आँखों ने यूंही अश्कों को कहीं छुपाया होगा
चाह तो तुम्हारे दिल में भी कायम है मगर
गैरों के लिए झूठा वहम फिर लाया होगा
कब तक छुपाओगे उल्फत की खुशबू को यूं
मेरे ख्याल ने ही तुमको जब महकाया होगा
इकरार उल्फत का कर लो तो सुनो ऐ हमनशीं
तेरी राह में पलकों को हमने बिछाया होगा
तेरे इन्कार से कोई शिकवा न होगा पर
मुस्कुरा के फिर जीना ना कभी आया होगा

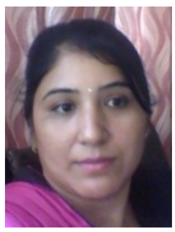

-- कामनी गुप्ता

शान्तिदूत

विजय कुमार सिंघल

(आठवीं कड़ी)

अब कृष्ण द्रोपदी के साथ पांडवों के लौटकर हस्तिनापुर आने के बाद की घटनाओं पर विचार करने लगे।

कृष्ण को पता चला था कि हस्तिनापुर में पांडुपुत्रों को देखकर पितामह भीष्म और विदुर तो बहुत प्रसन्न हुए थे, परन्तु धृतराष्ट्र और गांधारी ने दिखावे के लिए ही प्रसन्नता व्यक्त की थी। दुर्योधन और उनकी षड्यंत्रकारी मंडली तो उनकी सूरत से ही घृणा करती थी, इसलिए स्वागत का प्रश्न ही नहीं था। उन्होंने पांडवों के लिए अपने राज्य की सीमा पर रथ भेजने की भी सौजन्यता नहीं दिखायी थी। इसलिए सभी पांडवों को पांचालों द्वारा दिये गये वाहनों में यात्रा करके ही हस्तिनापुर आना पड़ा था। केवल द्रोपदी और कुंती को ही महामंत्री विदुर के रथ में बैठाकर लाया गया था।

दुर्योधन और शकुनि की हताशा का कारण जानना कठिन नहीं था। अत्यन्त सोच-विचार के बाद बनाया गया उनका षड्यंत्र पूरी तरह विफल हो गया था और अब तो पांडव पांचाल जैसे विशाल राज्य के जामाता बनकर पहले से बहुत अधिक शक्तिशाली हो गये थे। उनको शक हुआ कि कहीं पुरोचन तो पांडवों से मिला हुआ नहीं था। परन्तु यदि ऐसा होता, तो वह स्वयं क्यों जलकर मर जाता? निश्चय ही पांडवों को किसी अन्य विधि से उनके षड्यंत्र का पता चला होगा। यह भी हो सकता है कि वहां जाते ही उन्होंने भवन की बनावट देखकर षड्यंत्र का अनुमान लगा लिया हो और चुपचाप आग लगाकर निकलकर भाग गये हों। दुर्योधन इसकी जांच भी नहीं करा सकता था, अन्यथा उसका षड्यंत्र प्रकट हो जाता।

कृष्ण को लगता था कि हस्तिनापुर में द्रोपदी के कुलवधू बनकर आने से पांडवों के गुरु द्रोणाचार्य की स्थिति सबसे अधिक विचित्र हो जाएगी, क्योंकि द्रोपदी के पिता महाराजा द्रुपद पहले द्रोणाचार्य के सहपाठी और मित्र थे, जो बाद में दोनों अपने-अपने अहंकार के कारण परस्पर शत्रु बन गये थे। द्रोणाचार्य अपने शत्रु की पुत्री को कुरुवंश की कुलवधू के रूप में देखकर कैसा व्यवहार या प्रतिक्रिया करेंगे इस बात का कृष्ण को कोई अनुमान नहीं था। लेकिन सौभाग्य से द्रोणाचार्य ने कोई अस्वाभाविक प्रतिक्रिया नहीं की। जब द्रोपदी ने कुलगुरु के रूप में उनके चरण स्पर्श किये, तो उन्होंने उसके पिता के प्रति समस्त कटुता भुलाकर द्रोपदी को बहुत आशीर्वाद दिये। वैसे भी पांडव उनके प्रिय शिष्य थे, जिनमें अर्जुन सबसे अधिक प्रिय था। इसलिए उनकी पत्नी के प्रति उनका व्यवहार अच्छा रहना ही था।

कृष्ण ने सोचा कि इस समय भीष्म को चाहिए था कि वे वारणावत के षड्यंत्र का पूरा पता लगाते और उसके दोषी दुर्योधन आदि को दंडित करते। इससे पहले भी जब दुर्योधन और दुःशासन ने भीम को विष देकर तालाब में फेंक दिया था, तब भी भीष्म ने उनको कोई दंड नहीं दिया था। यदि तभी उनको दंडित कर दिया जाता, तो उनका साहस फिर कभी षड्यंत्र रचने का नहीं होता। लेकिन भीष्म अपने इस दायित्व से चूक गये थे। अब यह दूसरा अवसर था, जब उनको अपराधी का पता लगाकर दंड देना चाहिए था। किसी की हत्या का षड्यंत्र रचना साधारण अपराध नहीं होता, बल्कि इसके अपराधी को मृत्युदंड तक दिया जाता है। परन्तु भीष्म ने इस पर कोई विचार नहीं किया। वे इतना भी नहीं कर सके कि षड्यंत्र में भाग लेने के अपराध में शकुनि को हस्तिनापुर से निष्कासित करके बाहर कर देते। उन्होंने तो वारणावत की आग का समाचार मिलने पर शायद राहत की सांस ही ली होगी कि अब पांडव नहीं रहे, तो परिवार का झगड़ा समाप्त हो गया। कृष्ण ने सोचा कि कैसी दयनीय स्थिति हो गयी थी युगपुरुष कहे जाने वाले पितामह भीष्म की कि वे अपनी शक्तियों का उपयोग अपराधियों को दंडित करने में भी नहीं करते थे।

परन्तु जब पांडव पुनः लौट आये, तो भीष्म को शायद यह अनुभव हुआ कि मैंने पांडवों के साथ अब तक बहुत अन्याय किया है, इसलिए अब उनके साथ अन्याय नहीं होना चाहिए। इसलिए उन्होंने तत्काल युधिष्ठिर का युवराज पद पर अभिषेक करने के लिए जोर डाला। राजसभा में भी अधिकांश सभासद युधिष्ठिर के पक्ष में थे। यद्यपि दुर्योधन और उसकी चौकड़ी ने बहुत विरोध किया, परन्तु अन्ततः युधिष्ठिर को युवराज बनाने का प्रस्ताव राजसभा ने स्वीकार कर लिया। कृष्ण जानते थे कि ज्येष्ठ पांडव युधिष्ठिर हस्तिनापुर की प्रजा में बहुत लोकप्रिय थे और उनकी सज्जनता की सभी प्रशंसा किया करते थे। इसके विपरीत दुर्योधन हमेशा दम्भ और अहंकार से भरा रहता था तथा प्रजा को तुच्छ समझता था। उसके भाई और साथी प्रायः प्रजा को पीड़ित किया करते थे। इसलिए प्रजा भी चाहती थी कि युधिष्ठिर युवराज के रूप में शासन का सूत्र अपने हाथों में ले लें। राजसभा में कई प्रतिनिधियों ने इस बात का स्पष्ट उल्लेख किया था।

लेकिन दुर्योधन इतनी सरलता से हार मानने वाला नहीं था। यह बात कृष्ण को ही नहीं सभी जनों को ज्ञात हो गयी थी कि राजसभा की बैठक के बाद दुर्योधन अपने अन्धे माता-पिता के सामने जाकर बहुत रोया-धोया और स्वयं को युवराज घोषित करने की मांग की। उसका एक मात्र तर्क यह था कि पांडव महाराज पांडु की वैध सन्तान नहीं हैं, इसलिए वे कुरुवंश के नहीं हैं। परन्तु वह यह भूल गया कि इस प्रकार तो उसके पिता भी कुरुवंश की वैध सन्तान नहीं हैं। वैसे भी जन्मांध होने के कारण वे किसी भी प्रकार से राज्य के उत्तराधिकारी नहीं बन सकते थे।

इसलिए जब दुर्योधन की मांग धृतराष्ट्र और गांधारी दोनों को स्वीकार नहीं हुई, तो उनका भावनात्मक भयादोहन करने के लिए दुर्योधन ने आत्मघात करने की भी धमकी दी। यह उसका अन्तिम शस्त्र था। वह जानता था कि पुत्र-मोह ही उसके अंधे पिता की सबसे दुर्बल नस है। उसने इसका पूरा लाभ उठाया। दुर्योधन के आत्मघात की धमकी से धृतराष्ट्र डर गये और इस बात पर तैयार हो गये कि वे पुनः इस विषय पर पितामह भीष्म और विदुर से चर्चा करेंगे। इस पर दुर्योधन मान गया।

दुर्योधन को संतुष्ट करने की बात पर भीष्म, धृतराष्ट्र और विदुर के बीच गहन चर्चा हुई। भीष्म और विदुर दोनों दुर्योधन की मांग को अनुचित मानते थे। इसलिए उसे सिरे से नकारने के पक्ष में थे। परन्तु धृतराष्ट्र दुर्योधन द्वारा दी गयी आत्महत्या की धमकी से बहुत डरे हुए थे। यह डर उन्होंने स्पष्ट रूप से भीष्म के सामने रख दिया। इसके साथ ही उन्होंने अपनी अंधता और अपंगता को अपनी बात पर बल देने के अस्त्र के रूप में प्रयोग किया। अन्ततः भीष्म और विदुर इस बात पर तैयार हो गये कि यदि राज्य का विभाजन करने से युधिष्ठिर और दुर्योधन दोनों को संतुष्ट किया जा सकता हो, तो वैसा ही किया जाना चाहिए।

हस्तिनापुर का विभाजन निश्चित हो जाने के बाद इस बात पर गहन चर्चा हुई कि पांडवों को राज्य का कौन सा भाग दिया जाय और दुर्योधन को कौन सा। दुर्योधन किसी भी स्थिति में हस्तिनापुर को छोड़ने को तैयार नहीं था और उसके साथी भी उसकी हाँ में हाँ मिला रहे थे। उसने प्रस्ताव रखा कि खांडवप्रस्थ जहां हमारे कुरुवंश की प्राचीन राजधानी थी वह क्षेत्र युधिष्ठिर को दे दिया जाये। यह क्षेत्र यमुना नदी के पार पड़ता था और वहां उस समय घनघोर जंगल था। दुर्योधन ने हठ करके अपने अंधे पिता को इस बात पर तैयार कर लिया कि पांडवों को खांडवप्रस्थ ही दिया जाये और इसके अलावा कुछ भी नहीं दिया जाये।

यह एक प्रकार से पांडवों को पुनः देशनिकाला दे देने के समान था। लेकिन युधिष्ठिर अपने बड़ों का इतना सम्मान करते थे कि पारिवारिक कलह से बचने के लिए उन्होंने यह अन्यायपूर्ण आदेश भी सहर्ष स्वीकार कर लिया।

कृष्ण को याद है कि उस समय वे द्वारिका में थे, लेकिन जैसे ही उनको कुरुओं के साम्राज्य के विभाजन होने की योजना की भनक लगी, वे हस्तिनापुर आ धमके। उनके साथ बड़े भाई बलराम और वसुदेव भी थे। सभी इस बात का निश्चय करके आये थे कि पांडवों के साथ अब अन्याय नहीं होने देंगे। भले ही बलराम दुर्योधन के गदा युद्धकला के गुरु थे, लेकिन पांडवों के साथ कोई अन्याय हो, इसको वे भी स्वीकार नहीं कर सकते थे।

(अगले अंक में जारी)

कसक

दफ्तर से लौटी अदिति के सिर में तेज दर्द था। उसका आठ वर्षीय मुन्नी को पार्क घुमाने ले जाने का मन बिल्कुल नहीं था, परंतु मुन्नी की जिद के आगे उसकी एक न चली। उसने मुन्नी को बच्चों के बीच खेलने के लिए छोड़ा और खुद एक बेंच पर जाकर बैठ गयी।

पति रजत से अलगाव के बाद पिछले छः वर्षों से यह उसका रोज का नियम था। दर्द और चिड़चिड़ाहट से भरी वह नजरें इधर-उधर दौड़ा रही थी कि सहसा उसकी नजर थोड़ी दूर एक कोने में खड़े वृद्ध दंपति पर जाकर ठहर गई। वृद्धा किसी बात पर रूठी हुई थी और वृद्ध उसके हाथ पकड़कर उससे क्षमा माँग रहा था। फिर वृद्ध ने पता नहीं क्या कहा कि वृद्धा का चेहरा षोडशी की भाँति शर्म से लाल हो गया, जिसे उसने हाथों से छिपाने का प्रयास किया। वृद्ध होले से झुकते हुए अपने चेहरे को वृद्धा के चेहरे के समीप ले गया और उसके हाथों को पकड़ चेहरे से हटा उसकी आँखों में झाँकने लगा। फिर दोनों खिलखिलाकर हँस पड़े।

रजत ने भी तो उससे इसी तरह हाथ पकड़कर कितनी दफा माफी माँगी थी। वह उसे लेने भी आया था, परंतु उसके अहम् ने उसके साथ जाने से हर बार इनकार कर दिया था।

वह था तो पति-पत्नी के बीच का एक सामान्य दृश्य, परंतु उनकी उम्र देखकर अदिति के भीतर गहरे तक बहुत कुछ दरक गया। अश्रुओं की दो बूँदों के साथ दर्द और चिड़चिड़ाहट भी गोदी में गिर गए। उसकी नम

दृष्टि खिलखिलाती वृद्धा की झुर्रियों वाले हाथों से होती हुई अपनी उदास सुकोमल कलाइयों पर आकर ठहर गईं, जिन्हें बरसों से किसी ने नहीं छुआ था।

-- शशि बंसल, भोपाल

अंधकार

एक दैनिक अखबार के कार्यालय में 'बालिका दिवस' के अवसर पर संगिनी क्लब की सदस्याएं अपने अपने विचार रख रही थीं। विषय था 'बेटियाँ बचाओ-बेटियाँ पढ़ाओ'।

'मेरी परवरिश अच्छी हुई। मैं पढ़ी लिखी हूँ। शिक्षिका हूँ। मेरे पिता मेरे संग रहने आये मगर रह ना सके। हमारा संस्कार, हमारी परवरिश ऐसी है कि हम ससुर से वैसा व्यवहार नहीं कर सकते हैं, जैसा हमारे घर आये हमारे पिता के साथ होता है, हम घर छोड़ भी नहीं सकते!" बताते-बताते रो पड़ी महिला। 'बताते हुए आपके आँखों में आँसू हैं यानी अभी भी आप कमजोर हैं। आँखों में नमी लेकर अपनी लड़ाई लड़ी नहीं जा सकती है। घर में एक से आप अपनी लड़ाई जीत नहीं सकती, तो ज्यों ही चौखट के बाहर आइयेगा, सैकड़ों से कम से कम लड़ना होगा, कैसे जीतने की उम्मीद कर सकती हैं?' दीदिया का कहना था, 'पुरुष स्त्री को चाहे जितना भी प्यार कर ले, किन्तु बराबरी का दर्जा... नको, सोचना भी मत।'

'सोचना क्यूँ है। जहाँ ना हो वहाँ दे भी नहीं।'

'ना देने पर घर हल्दीघाटी बन जाता है।'

"मुझसे बेहतर कोई जान नहीं सकता है, दीदिया, लेकिन दवा भी यही है। समय लगता है लेकिन स्थिति सुधरती है। जंग जारी रखनी है और जीतनी है।'

-- विभा रानी श्रीवास्तव

तासीर

'मैंने तेरी माँ का पल्लू थामा था न कि साथ लाये खिलौने को भी पालने का ठेका लिया था।' उनके कहे शब्द अभी भी उसके जहन में थे। सौतेले होने का दंश पिता के कटु शब्दों में जब तब उसे शूल बनकर चुभता ही रहता था। माँ की ममता ने उसे लापरवाह और नकारा बना दिया था तो पिता की कड़वी बातों ने उसे जिद्दी कर दिया था लेकिन उनके कहे इन्हीं शब्दों ने उसे गहरी चोट पहुँचाई थी। हफ्तों घर से गायब रहने के बाद आज जब वह अपने नकारापन के दाग को मिटाकर, यह सोचकर घर लौटा था कि माँ को साथ ले हमेशा के लिए कठोर पिता का घर छोड़ देगा, तो माँ के ही साथ चलने से इंकार करने पर वह हैरान हो गया।

'माँ, तुम इन्हें छोड़ मेरे साथ नहीं चलना चाहती, जिन्होंने कभी मुझे कोसने का कोई अवसर नही छोड़ा।' उसके चेहरे पर वितृष्णा झलक रही थी।

'हाँ बेटा।' माँ की आवाज नम थी। 'क्योंकि मैं ही गलत थी जिसने हमेशा तुम्हारी गलतियों का समर्थन किया, इन्होंने तो हमेशा तुम्हारे अंदर के अहसास को ही जगाना चाहा।'

'या हर बार ये बताया कि मैं बस एक खिलौना।'

'नहीं बेटा नहीं!' माँ ने उसकी बात को काट दिया। 'जहर की तासीर हमेशा जहर ही नहीं होती, कभी कभी ये जीवन को बचाने के काम भी आता है। वह बुरे नहीं है, तेरे पिता को मुझसे अधिक कौन जान सकता है बेटा?' कहते कहते वह अनायास ही भावुक हो गयी। 'क्योंकि एक दिन मेरे इसी खिलौने को समाज में एक

नाम देने के लिए इन्होंने ही मेरा हाथ थाम था।'

पिता के कहे शब्द फिर उसके जहन में गूंजने लगे थे लेकिन इस बार उसकी आँखें नम हो चली थी।

-- विरेन्दर 'वीर' मेहता

स्वाद

गर्मी की एक शाम को मैं चौपाटी पर अपने पति व बच्चों के साथ चाट का आनंद ले रही थी, तभी वहाँ एक ७-८ वर्षीय फटेहाल बालक आया और जूठी प्लेटों की ओर इशारा करके चाट वाले से बोला- 'बाबूजी, ये प्लेटें धो दूँ? सुबह से भूखा हूँ लेकिन काम नहीं मिला।'

'नहीं मुझे आवश्यकता नहीं है बच्चे, आगे देखो!'

मैंने बालक को चाट दिलानी चाही लेकिन उसने इंकार करते हुए कहा- 'मैं भिखारी नहीं हूँ माँ जी, काम मिलेगा तभी कुछ खाऊँगा।'

मैं कुछ कहती उससे पहले ही वो तेजी से अगले ठेले पर पहुँच चुका था। मैं किंकर्तव्य विमूढ़ सी गरीबी और खुद्दारी का अनोखा गठबंधन देखती रह गई।

हम चाट वाले को पैसे देकर सामने ही आइसक्रीम-पार्लर पर पहुँचकर अपनी-अपनी मनपसंद आइसक्रीम लेकर बाहर कुर्सियों पर बैठ गए, लेकिन मुझे आइसक्रीम में अपनी पसंद का फ्लेवर होने के बावजूद स्वाद नहीं आ रहा था। मेरी नजरें अब भी सामने उस बालक का पीछा कर रही थीं जो अब तक वैसे ही चाटवालों की उस लंबी कतार में एक के बाद एक ठेले से दूसरे ठेले पर जा रहा था।

'आइसक्रीम पिघलती जा रही है सरिता! कहाँ ध्यान है तुम्हारा?' अचानक पतिदेव की आवाज से मैं चौंक गई और उस बालक की ओर इशारा कर दिया।

तभी देखा कि एक बड़ी सी ठेलागाड़ी पर वो

बालक जल्दी-जल्दी प्लेटें धो रहा था और कुछ ही देर में उसके हाथ में चाट से भरी प्लेट थी। मैंने संतुष्टि की साँस ली, अब आइसक्रीम का स्वाद बढ़ गया था।

-- कल्पना रामानी

बातों के धनी

चालीस वर्षीय जाने-माने समाज सुधारक कमल 'पुष्प' जी सामने बैठे श्रोताओं को बता रहे थे, 'माता-पिता की सेवा करना सबसे बड़ा धर्म है। जो माता-पिता की सेवा नहीं करता है, उसे ईश्वर कभी क्षमा नहीं करेगा। माँ-बाप चाहे जो भी कहें, उसे हमें आशीर्वाद के रूप में लेना चाहिए। उनकी कड़वी बातों में भी भलाई छुपी रहती है। श्रवण कुमार की कथा तो...।' अभी पुष्प जी अपनी बात पूरी करते कि श्रोताओं में मौजूद एक जिज्ञासु ने कहा, 'मेरी बड़ी इच्छा है कि मैं आपके माता-पिता के दर्शन करूँ।'

यह सुनते ही बातों के धनी 'पुष्प' जी बोले, 'मैं

तो खुद भी उनके दर्शन करना चाहता हूँ, लेकिन वे पिछले बीस वर्षों से विदेश में मेरी बड़ी बहन के साथ रहते हैं।'

-- सुभाष चन्द्र लखेड़ा

जब मैं पहली बार मिली तुमसे
तो लगा जैसे अब हुई है/मेरे जीवन की सही शुरुआत
मानो मेरे जीवन के कैलेण्डर में
जनवरी आ गया और धीरे-धीरे
एक-एक मुलाकात में एक-एक कर
कई महीने ऐसे बीत गए/कि पता ही नहीं चला
कब तुम्हारे प्यार की/चमकीली धूप लिए जून आ गया
मैं तुम्हारे नेह की बारिश में/जुलाई-अगस्त सा भीग गई
तुम्हारी प्यार भरी बातों में/तुम्हारे स्पर्श ने मुझे
सितम्बर अक्टूबर सा/रोमांचित कर दिया
तुम्हारे प्यार की गर्माहट
और मखमली एहसास ने मुझे
नवंबर-दिसंबर सी रूमानी ठंडक में
मदहोश कर दिया और
अब लो फिर आ गया जनवरी
हमारे मिलन की पहली वर्षगाँठ!

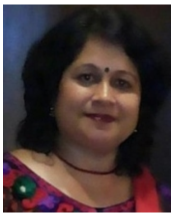

-- नमिता राकेश

हसरतों का मैंने आज कत्लेआम कर दिया
लाल सुर्ख आँखों ने ये पैगाम भर दिया
कभी बसते थे जो इन गहरी सी आँखों में
आज वो पानी बनकर बह रहे है अश्कों में
रात जिनकी यादों में गुलजार होती थी
भोर में वही यादें खून के आँसू रुलाती थी
ये नैन भी अब तो पथरा गए हैं रोते रोते
पर उस जालिम ने ना देखा नजरें पलटके
तेरी इस अदायगी को मुश्किल से समझाया
उम्मीदों की नदी में सब हसरतों को बहाया
तेरे ठुकराने के बाद यूँ उजड़ गयी जिंदगी
देखो आँगन में बिखरी है तमन्ना और बंदगी
नींद उड़ गयी है और ठिठुर गए सब ख्वाब
कुछ जले जले अरमान कुछ टूटे टूटे आब
तेरे वो जहरीले लफ्ज कानों में गूँजते हैं
सुना सुना कर मुझे क्यूँ
पागल वो करते हैं
अब ना आना कभी मुड़के
इस बेरंग जिंदगी में
आके फिरसे ना सजाना
कोई हसरतें जिंदगी में

-- सुवर्णा परतानी

हमने उसे जब छुआ था, कुछ एहसास हुआ था
साँसे थी वो उसकी, या सिगार का धुआँ था
घर था वो सितारो का, या गहरा कोई कुआँ था
नकाब था वो उसका या, सर्द मौसम का कुहा था
पलकें थी वो उसकी या,
मुलायम कोई रूआ था
हकीकत था वो 'तन्वी' या,
ख्वाबों का कोई जुआ था!
हमने उसे जब छुआ था,
कुछ एहसास हुआ था!

-- तन्वी सिंह

तीखे नैन, अदा नखराले, उड़ते गगन में हम मतवाले
पंख खोल हम इतराते थे, रहते सदा साथ दिलवाले
मैं राजा वो रानी मेरी, बचपन से ही कहानी हेरी
हम ना जाने विरह व्यथायें, साथ-साथ करते थे फेरी
मैं पिंजरे में हुआ अचानक, काल दृष्टि की घटा भयानक
हाय विधाता क्या कर डाला, विरह दशा दी क्यों अधिनायक
ये पगली मेरी बात न माने, बैठी है पिंजरे के मुहाने
मैं बोला आजाद रहो तुम,
कहती विरह दर्द तू तो जाने
ये जानती है मैं रह न सकूंगा,
बिन इसके मैं जी न सकूंगा
यही सोचकर त्याग कर रही,
इसे कैद मुबारक कह न सकूंगा

-- प्रदीप कुमार तिवारी

कुछ अधूरी सी हसरतें भरी रहीं मेरे जीवन में
दिल को कैसे बताऊँ आँसू भरी इन आँखों से
ये कैसी साजिश बनाई हमें मरने की हो यारा
दिल मिलकर इस दिल से क्यूँ किया किनारा
तुम्हारा दिल भी जानता है हमारी सारी हसरतें
नहीं जानते तो मैं और तुम यू चुप भी क्यूँ होते
जब कभी मिले हम इक अजनबी की ही तरह
कैसे भताए हसरतें भरी निगाहे दिल का विरह
किस्मत ने खूब आंसू बहाए तुम से प्यार कर
मिली मुझे बे-किस्मती
से प्रेम की दूरियाँ पर
इस बात पर आज
तक 'राज' हुआ शर्मिंदा
प्रेम भरे दिल की हसरतें
खत्म कर अलविदा

-- राज मालपाणी

नववर्ष का अभिनन्दन नहीं किया

माफी चाहता हूँ मैंने नववर्ष का अभिनन्दन नहीं किया
अंग्रेजों के द्वारा दिये गये तारीखों का वन्दन नहीं किया
हिन्दुस्तान का निवासी हूँ अपनी सभ्यता का आराधक हूँ
मैं हिन्दू नववर्ष को मानता हूँ शायद इसलिए अराजक हूँ
संभल जाओ मेरे देश के लोगो इस भाड़े की संस्कृति से
हिन्दुस्तान को दिल में रखिये बचिये फिरंगी विकृति से
हिन्द का नववर्ष कब आता इसका सबको है ज्ञान नहीं
पढ़ना चाहो अगर तो कोई भी है पुस्तक अनजान नहीं
विश्वगुरु कहलाते हैं फिर अलग संस्कृति का मान क्यों
जिन्होंने हमें लूटा गुलाम बनाकर उनका सम्मान क्यों
हम सबको मिलकर इन बातों पर विचार करना होगा
विलायती मानसिकता गुलामी
का संहार करना होगा
मेरी माता भारत माता यह
देखकर हर दिन ही रोती है
शायद कल कुछ बदलेगा ये
सोचकर रात को सोती है

-- बेखबर देहलवी

माँ तुम नहीं पर तुम्हारी निशानी
मुझे सदा याद दिलाती रहेगी
मैंने संभाल सजा ली है किताबों में
जब अहसास, याद आती है माँ तुम्हारी
निशानी देख अतीत में/खोता चला जाता हूँ
करता क्रीड़ाएँ आँगन में
निशानी माँ बाप की
प्यारी औलादों को रख लेनी चाहिए
वक्त न जाने कब, कहाँ, कैसे ?
क्या कर बैठे पल भर में

-- अशोक बाबू माहौर

शरीफ बनकर रहना एक गुनाह हो रहा है
शराफत दिखाकर जीना सजा हो रहा है
शराफत दिखाना जिसका दस्तूर हो गया है
घुट घुट के जीने के लिए मजबूर हो गया है
सीने पे घाव लेकर भी हम जो मुस्कुरा रहे हैं
ये जो दुश्मन हमारे उसका लुफ्त उठा रहे हैं
न कहीं कोई हमदर्दी न कहीं कोई फरियाद
दूसरों के माल पर हक अपना जमा रहे हैं
मजबूरी में फंसाकर इन नादानों को
जालिम मन ही मन मुस्कुरा रहे हैं
यही सोचकर कि
अंतिम फैसला प्रभु के हाथ है
हम भी शराफत दिखाने से
बाज न आ रहे हैं

-- जय प्रकाश भाटिया

लघुकथा

अकर्म

उसको कहना पड़ा, 'सर! मैंने उन्हें समय पर डेटाबेस दे दिया था. आपके कहने पर भर भी दिया था. फिर भी उन्होंने समय पर नहीं दिया. इस कारण डेटाबेस मुख्यालय पर समय सीमा में आप नहीं पहुंचा पाए. अब मैं उनकी जगह ५० किमी दूर मुख्यालय पर जमा कराऊं? यह मुझसे नहीं होगा.'

'चले जाओ भाई. डेटाबेस भी दे देना. कोई और काम हो तो वो भी कर आना.'

'मगर सर जी, यह तो गलत है. एक तो मैं उनकी कक्षा पढ़ाता हूँ. वे कोई काम भी नहीं करते हैं. इसलिए उनकी गलती की सजा मैं क्यों भुगतूँ सर?' उसने पूरी दृढ़ता से विरोध किया, 'जिसने गलती की है सजा उसे ही मिलनी चाहिए.'

'अरे भाई! मेरी बात समझो. उन्हें कोई नहीं जानता है. सभी आपको जानते हैं. इसलिए मुख्यालय में डेटाबेस जमा नहीं करवाया तो बदनामी आपकी होगी. आप जैसे योग्य व्यक्ति के स्कूल का डेटाबेस जमा नहीं हुआ.' जनशिक्षक के यह कहते ही उसके दिमाग में 'मैं' का कद ऊँचा हो गया और न चाहते हुए उसने डेटाबेस हाथ में ले लिया. उसके दिमाग में एक वाक्य घूम रहा था, 'बने रहो पगला, काम करेगा अगला.'

-- ओमप्रकाश क्षत्रिय 'प्रकाश'

आपका मत महत्वपूर्ण है!

शालिनी तिवारी

किसी भी राष्ट्र में मजबूत लोकतंत्र के लिए उसके प्रत्येक मत की अहम भूमिका होती है। हमारे द्वारा चुना गया राजनीतिक प्रतिनिधि प्रत्यक्ष रूप से लोकतंत्र का एक भाग बनकर सत्ता तक समाज की विषमताओं को उजागर करके उनका हल निकालता है। फलस्वरूप जनता, जनप्रतिनिधि और सरकार तीनों की भागीदारी से एक व्यवस्थित, आदर्श और श्रेष्ठ समाज का निर्माण होता है, जो हमारे सुन्दर वर्तमान एवं सुनहरे भविष्य के विकास में मील का पत्थर सिद्ध होता है।

राष्ट्र के सभी नागरिकों को देश के संविधान द्वारा प्रदत्त सरकार चलाने हेतु अपने प्रतिनिधि निर्वाचित करने के अधिकार को मताधिकार कहते हैं। जनतांत्रिक प्रणाली में मताधिकार को विशेष महत्व दिया गया है। हम यह भी कह सकते है कि मताधिकार ही जनतंत्र की नींव है। अच्छी जनतंत्र की परख भी इसी से होती है कि किस देश को कितना अधिक मताधिकार प्राप्त है। बड़े गौरव की बात यह है कि समूचे विश्व में भारतवर्ष सबसे बड़ा जनतांत्रिक देश है, क्योंकि हमारे यहाँ मताधिकार प्राप्त नागरिकों की संख्या सबसे अधिक है।

विशेष ध्यातव्य है कि मताधिकार प्रत्येक नागरिक की एक प्रकार की अद्वितीय स्वतंत्रता है। जिससे प्रत्येक नागरिक प्रत्यक्ष रूप से समाज और राष्ट्र के निर्माण में सहभागी होता है। भारतीय संविधान के अनु. ३२५ व ३२६ के अनुसार 'प्रत्येक वयस्क नागरिक को, जो पागल या अपराधी न हो, मताधिकार प्राप्त है।' सबसे अहम बात यह है कि देश में प्रत्येक नागरिक को मताधिकार प्राप्त है, चाहे वह किसी भी जाति, वर्ण, सम्प्रदाय अथवा लिंग का क्यूँ न हो।

वह भी अपना एक अतीत था, जब हम अंग्रेजी हुकूमत के चंगुल में फंसे हुए थे। उस वक्त मताधिकार प्राप्त करना एक बड़े गौरव का विषय होता था, क्योंकि यह आम आदमी को प्राप्त नहीं था। कुछ चुनिन्दा लोग, जो अंग्रेजी हुकूमत के धनकुबेर, चमचे और चाटुकार होते थे, उन्हीं को मताधिकार प्राप्त था। इसका मुख्य यह था कि इन्हीं कुछ चुनिन्दा लोगों के कारण ही अंग्रेज फूट डालकर हम पर हुकूमत चलाते थे। एक आँकड़ा कहता है कि सन् १९३५ के 'गवर्नमेंट ऑफ इंड़िया ऐक्ट' के अनुसार मात्र १३ प्रतिशत जनता को ही मताधिकार प्राप्त था। अभी भी कुछ देश ऐसे है, जहाँ पर मताधिकार में रंग एवं जाति भेद बरता जाता है।

आमतौर पर हम लोग लोकतांत्रिक ढाँचे को लेकर बड़ी बड़ी बातें करते हैं। परन्तु यह गौर नहीं करते कि इसका मूल क्या है। वास्तव में किसी भी राष्ट्र के लोकतंत्र की सार्थकता तभी है, जब शत प्रतिशत मतदान से जनप्रतिनिधि चुने जाएँ। परन्तु यह वह भारत देश है, जहाँ अभी तक कुछ हिस्सों में न्यूनतम २० प्रतिशत तो कुछ में अधिकतम ७० प्रतिशत मतदान हुए हैं। खैर एक बात साफ है कि शत-प्रतिशत मतदान तभी हो सकता है, जब मतदान को अनिवार्य और आसान बनाया जाए। बुनियादी तौर पर अहम यह भी है कि लोग शिक्षित हों और जागरूक भी बनें।

बेल्जियम, स्विटजरलैण्ड, आस्ट्रेलिया, सिंगापुर, अर्जेंटीना, आस्ट्रिया, साइप्रस, पेरू, ग्रीस, बोबीलिया, समेत दुनिया के लगभग ३३ प्रजातांत्रिक देश ऐसे हैं, जहाँ शत प्रतिशत मतदान अनिवार्य है। इतना ही नहीं, कुछ देश तो ऐसे भी हैं जहाँ मतदान न करने पर सजा का प्रावधान है। सन् १८४२ में मतदान को अनिवार्य कर बेल्जियम ने इस दिशा में पहला कदम उठाया था। १९२४ में आस्ट्रेलिया ने इसे लागू किया। १६ देशों में चुनाव प्रक्रिया लगभग भारत जैसी है। यह जरूर है कि कुछ देशों में ७० साल से ज्यादा उम्र के बुजुर्गों को अनिवार्य रूप से मतदान न करने की छूट मिली है।

यह बिल्कुल साफ है कि यदि हम लोकतंत्र और राष्ट्र को मजबूत बनाना चाहते हैं तो प्रत्येक मतदाता को अपने मत का प्रयोग करना ही पड़ेगा। सन् २००५ में भाजपा के एक सांसद लोकसभा में 'अनिवार्य मतदान' सम्बंधी विधेयक लाए भी थे, परन्तु विपक्षी दलों ने यह कहते हुए नकार दिया था कि मतदान किसी को दबाव ड़ालकर नहीं कराया जा सकता और यह लोकतंत्र एवं उनकी स्वतंत्रता का हनन होगा।

मतदान के परिप्रेक्ष्य में एक अहम सवाल यह भी है कि हमारे देश में मतदाता सूची के खामियों के चलते लाखों लोग मतदान नहीं कर पाते हैं और लाखों लोग ऐसे भी होते है जिनका मतदाता सूची में नाम तो होता है परन्तु मतदाता पहचान पत्र नहीं होने के कारण वे मतदान नहीं कर पाते। कई बार तो १८ वर्ष से कम उम्र के लोगों का भी नाम मतदाता सूची में रहता है।

इस एक सीधा हल यह है कि हम सब अपने प्रत्येक मत का महत्व समझें और दूसरों को समझाएँ। ध्यान रहे कि आपका एक मत राष्ट्र की दशा एवं दिशा तय करनेंमें महत्वपूर्ण साबित होगा। यदि आपके द्वारा चुने हुए रहनुमा स्वच्छ छवि, ईमानदार और योग्य होंगे तो देश का कोई भी नागरिक मूलभूत आवश्यकताओं से वंचित नहीं रहेगा, नए नए आयाम रचे जाएंगे, जो देश के गौरव को बढ़ाएंगे। भ्रष्टाचार में कमी आएगी, जिससे राष्ट्र की अर्थव्यवस्था मजबूत रहेगी और राष्ट्र समग्र विकास की ओर अग्रसित रहेगा। ■

मल विसर्जन

विजय कुमार सिंघल

मल-मूत्र विसर्जन के बारे में मैं एक विस्तृत लेख पहले लिख चुका हूँ। यहाँ केवल मल विसर्जन के बारे में कुछ और महत्वपूर्ण बातों की चर्चा करूंगा।

प्राचीन काल से ही मल विसर्जन की क्रिया यानी शौच किसी नदी या तालाब के किनारे खुले में या जंगलों में होती रही है। आज भी इसे जंगल जाना कहते हैं। पहले जनसंख्या कम थी और प्रत्येक बस्ती के आस-पास बहुत जंगल भी थे, अतः इसमें कोई कठिनाई नहीं होती थी। जब जंगल कम हुए और ेषि कर्म अधिक होने लगा तो मल विसर्जन का कार्य खेतों में किया जाने लगा।

आप मानें या न मानें मल विसर्जन का यही रूप सबसे अधिक वैज्ञानिक और सुरक्षित है। खेतों में शौच करने के बाद मल को मिट्टी से ढक दिया जाता था, जिससे बदबू नहीं फैलती थी। इस तरह करने से खेतों को कीमती खाद भी प्राप्त होती थी। आज भी गाँवों में अधिकांश जनता इसी प्रकार मल विसर्जन करती है। इसमें महिलाओं को लज्जा का कोई प्रश्न नहीं उठता, क्योंकि वे दिन पूरा निकलने से पहले मुँह अँधेरे ही शौच से निवृत्त हो जाती हैं।

लेकिन शहरों में इस पद्धति को नहीं अपनाया जा सकता। एक तो वहाँ खेत हैं ही नहीं। दूसरे रेल पटरियों के किनारे या खाली स्थानों में मल विसर्जन करने पर उनके ऊपर डालने के लिए मिट्टी भी उपलब्ध नहीं होती, जिससे मल वहाँ पड़ा हुआ सड़ता रहता है और दुर्गंध के साथ अनेक तरह की बीमारियों का कारण बनता है। इसलिए हमें मजबूरीवश शौचालयों का उपयोग करना पड़ता है।

कुछ साल पहले तक घरों में जो शौचालय बनाये जाते थे, उनमें कमोड देशी पद्धति का होता था, जिन पर दोनों पैरों पर कागासन में बैठा जाता था। इस प्रकार बैठने से मल विसर्जन अच्छी तरह होता है और अधिक जोर नहीं लगाना पड़ता। परन्तु आजकल जो शौचालय बनाये जाते हैं, उनमें कमोड ऊपर उठा हुआ रहता है, जिन पर चूतड़ टिकाकर बैठना पड़ता है, क्योंकि कागासन में बैठने की सुविधा नहीं होती। इस स्थिति में शौच करने पर मल निकालने के लिए देशी पद्धति की तुलना में लगभग तीन गुना अधिक जोर लगाना पड़ता है। हालांकि अधिक उम्र के व्यक्तियों के लिए यह बहुत सुविधाजनक होता है, क्योंकि उनके लिए कागासन में बैठना, फिर शौच के बाद उठना बहुत कठिन होता है।

इस समस्या का एक समाधान तो यह है कि हमें विदेशी पद्धति के ऐसे कमोड लगवाने चाहिए, जिन पर कागासन में बैठने की भी सुविधा हो और चूतड़ों के बल बैठने की भी। ऐसा कमोड साथ के चित्र में दिखाया गया है। इससे दोनों पद्धतियों का लाभ प्राप्त किया जा सकता है। हमें मल-मूत्र के विसर्जन में बिल्कुल जोर न लगाना

(शेष पृष्ठ २९ पर)

मैं जब भ्रष्ट हुआ

वीरेन्द्र परमार

मेरी नियुक्ति जब एक कमाऊ विभाग में हुई तो परिवार के लोगों और सगे-संबंधियों को आशा थी कि मैं शीघ्रातिशीघ्र भ्रष्ट बनकर राष्ट्र की मुख्यधारा में जुड़ जाऊंगा लेकिन आशा के विपरीत जब मैं एक दशक तक भ्रष्ट नहीं हुआ तो सभी ने एक स्वर से मुझे कुल कलंक घोषित कर दिया। मुझे तरह-तरह की उपाधियों से विभूषित किया जाने लगा- मिस्टर क्लीन, सत्यवादी हरिश्चंद्र, कलियुग के कृष्ण, कुलघाती आदि। परिवार से लेकर राज्य सचिवालय तक मैं चर्चा का केंद्रीय विषय बन गया। अलग-अलग विचार और मान्यता वाले सभी लोग इस बात पर एकमत थे कि मुझे भ्रष्ट बन जाना चाहिए। लोगों के लिए मैं आठवां आश्चर्य था।

लोग कहते कि आखिर इस काजल की कोठरी में निष्कलंक रहने वाला किस लोक का प्राणी है। मैं किसी की बातों पर ध्यान नहीं देता, स्वयं में मस्त रहता। धीरे-धीरे आश्चर्य का विषय न रहकर मैं विवादों का केंद्र बन गया। बिना कारण कुछ अधिकारियों की वक्र दृष्टि का शिकार होने लगा। मौखिक चेतावनी, स्पष्टीकरण, अनुशासनिक कार्रवाई की धमकी मेरे लिए सामान्य बात हो गई। स्थिति जब निलंबन तक आ पहुंची तब मैंने फैसला किया कि मैं अब भ्रष्ट बनूंगा और अपने ऊपर लगे अभ्रष्ट के कलंक को मिटा दूंगा। मैंने सोचा, मैं भी देश की मुख्यधारा में शामिल हो जाऊं। यही हितकर और कल्याण का मार्ग है।

नौकरी के ग्यारहवें वर्ष में मैं अपने विभाग के एक क्लर्क द्वारा भ्रष्टाचार में दीक्षित हुआ। उसने भ्रष्टाचार के उदभव और विकास की सविस्तार कथा सुनाई तथा भ्रष्ट होने के लाभ और अभ्रष्ट बने रहने की हानियों से परिचित कराया। एक दशक के अनुभवों ने मुझे भी परिपक्व और सयाना बना दिया था। मेरे भ्रष्ट होने पर लोगों ने राहत की सांस ली। घर में आनंद उत्सव मनाया जाने लगा। मित्रों ने बधाइयां दीं गोया मैंने भ्रष्टाचार का आविष्कार किया हो। विभागीय सहकर्मियों ने कहा कि अब यह बंदा अपनी बिरादरी में शामिल हो गया है।

मेरे भ्रष्ट होने पर सभी ने अपनी मौन सहमति की मुहर लगाई। मित्रों-संबंधियों से लेकर ऊपर के अधिकारियों ने कहा कि अब यह सुधर गया है। मेरे भ्रष्ट बनने पर मेरी अभ्यर्थना की गई, नागरिक अभिनंदन किया गया और कई साहित्यिक संस्थाओं ने मेरे ऊपर अभिनंदन ग्रंथ प्रकाशित किया क्योंकि अब मैं उन्हें चंदे की मोटी रकम दे सकता था। अनेक धार्मिक और सांस्कृतिक संस्थाओं ने मुझे आचार्य, महामानव, पंडित आदि उपाधियों से मंडित कर स्वयं को गौरवान्वित किया क्योंकि मैं उन जेब चालित संस्थाओं को दान देने लगा था। इस प्रकार मेरा भ्रष्ट होना एक राष्ट्रीय उत्सव बन गया। मैं भी ऐसा भ्रष्ट निकला कि भ्रष्टाचार ही ओढ़ने-बिछाने लगा। मैं जितने हस्ताक्षर करता उसकी गिनती के अनुसार मुद्रा ग्रहण करता। फाइल मेरे लिए लहलहाती फसल थी और दफ्तर में आनेवाला हर आगंतुक उस फसल में खाद-पानी डालने वाला किसान। मैं मुद्रा उगाही के एक सूत्री कार्यक्रम के पालन में इस कदर डूबा कि अपने-पराए के बोध से ऊपर उठ गया। मेरी समरूप दृष्टि में मित्र-शत्रु के लिए रिश्वत की राशि में एकरूपता थी।

सरकारी नियम-कानून की चिंता किए बिना मैं मुद्रा मोचन के पतितपावन कर्म में आकंठ डूब गया। मैं जब मदिरा मस्त होकर दोनों जेबों में कागज स्वरूपा लक्ष्मी को भरकर घर पहुंचता तो परिवार के लोग मुझे अपने सर-आंखों पर बिठा लेने को तत्पर दिखते। मेरे बच्चे मुझसे जब ईमानदारी का अर्थ पूछते तो मैं उन्हें ईमानदारी का अर्थ असंतुलित दिमाग का फितूर बताता। जब बच्चे मुझसे नैतिकता का मतलब जानना चाहते तो मैं उसका अर्थ गरीबों के मनबहलाव का सस्ता तरीका बता देता। बच्चों को मेरे कथन पर संदेह होता तो वे शब्दकोशों का सहारा लेते, पर आश्चर्य कि शब्द कोशों के आधुनिक संस्करणों से ये शब्द गायब थे।

देशभर में भ्रष्टाचार उन्मूलन सप्ताह मनाया जा रहा था। सभी सरकारी विभागों में धूमधाम से भ्रष्टाचार उन्मूलन सप्ताह मनाने का आदेश आया था। मेरे कार्यालय में भी यह सप्ताह धूमधाम से मनाया गया। मैंने कर्मचारियों को संबोधित किया- 'भ्रष्टाचार हमारे देश को घुन की तरह खाए जा रहा है। इसलिए हम सभी का यह कर्तव्य है कि भ्रष्टाचार रूपी राक्षस को मिटाने के लिए आज से ही कमर कस लें। जब तक भ्रष्टाचार रहेगा तब तक देश का विकास नहीं हो सकता है। भारत भूमि महान ऋषियों और संतों की पुण्यभूमि रही है। इसके गौरव को अक्षुण्ण रखना हमारा दायित्व है। आइए ! आज से ही हम सब यह व्रत लें कि भ्रष्टाचार मुक्त समाज की स्थापना के लिए प्रतिबद्ध रहेंगे।'

भाषण समाप्त करने के बाद मेरी नजर लाल रंग के कपड़े पर सुनहरे अक्षरों में अंकित बैनर पर गई तो मैं अपनी हंसी रोक नहीं पाया। भूलवश बैनर पर उन्मूलन शब्द लिखा ही नहीं था। मोटे-मोटे अक्षरों में 'भ्रष्टाचार सप्ताह' अंकित था। सभा समाप्त होने के बाद मेरे कुछ सशंकित सहकर्मी मिलने आए।

मेरे सारगर्भित और अलंकृत भाषण को सुनकर उनके रिश्वतजीवी मन को संदेह हो गया कि शायद मेरा पुराना पागलपन लौट रहा है। मुझे उन लोगों पर तरस आ रहा था, ये कैसे भ्रष्टाचारी हैं कि एक मात्र भाषण को सुनकर इनका बेईमान मन डोल रहा है। मैंने उन्हें भ्रष्टाचार के यथार्थवाद और अस्तित्ववाद की सोदाहरण व्याख्या करते हुए समझाया कि उत्तर आधुनिक काल में दो 'भकार' ही सत्य हैं भगवान और भ्रष्टाचार, शेष सब मिथ्या है। भगवान की तरह भ्रष्टाचार भी सर्वव्यापी है, यह बालू खरीद से लेकर जहाज खरीद तक अपनी भूमिका निभाता है। भ्रष्टाचार अजर-अमर है, स्वयं प्रकाशमान है। इसे मिटाने के लिए सुर-नर मुनियों ने अथक प्रयास किए परंतु यह तो रक्तबीज है। ईश्वर की तरह यह अशरीरी है। इसे देखा नहीं जा सकता, महसूस किया जा सकता है। जो भ्रष्ट हैं वे पूज्य हैं, उपास्य हैं, स्तुत्य हैं। जो अभ्रष्ट हैं उपेक्षणीय हैं, दंडनीय हैं। जिस प्रकार गिरगिट को देख गिरगिट रंग बदलता है उसी प्रकार भ्रष्ट को देख अभ्रष्ट भी भ्रष्ट हो रहे हैं। मैं भी प्रातः स्मरणीय भ्रष्टाचारी गुरुओं की तरह भ्रष्टाचार के क्षेत्र में अभिनव कीर्तिमान स्थापित करना चाहता हूं। मैं भी भ्रष्टाचार के इतिहास में अपना नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित कराने का अभिलाषी हूं। ■

बाप के जूते में बेटे के पांव

अशोक मिश्र

बाप तो आखिरकार बाप ही होता है। बेटा बेटा होता है। बाप के आगे बेटे की क्या बिसात है। अगर आप माई बापों ने इस कहावत को रट्टा मारकर याद कर रखा है कि तो भूल जाइए। सच पूछिए, तो भूल जाने में ही भलाई है। अगर आप आसानी से नहीं भूले, तो बेटे भुलवा देंगे और आपको यह कहावत याद करा देंगे कि बेटे किसी के भी कान काट सकते हैं। अब आपको इस मुहावरे का अर्थ बताने की भी जरूरत है?

टीपू ने कितनी खूबसूरती से नेताजी के कान काटे, यह सारी दुनिया देख-सुन रही है। उसने तो बाप के ही कान नहीं काटे, चाचा, अंकल सबके नाक-कान बिना उस्तरे के ही रेत दिया। हाय-हाय कर रहे हैं बेचारे। लखनऊ से दिल्ली तक दौड़ लगा रहे हैं। सबको अपने कटे कान दिखा रहे हैं, लेकिन बाप-बेटे की लड़ाई में अपनी टांग अड़ाए कौन? इस मामले में जिसकी भी टांग टूटी है या टूटेगी, उन्होंने जरूर पिता-पुत्र के पचड़े में अपनी टांग फंसाई होगी।

आप इतिहास उठाकर देख लें। जिस बेटे ने अपने बाप-दादाओं के कान काटे, उसी का नाम इतिहास में दर्ज हुआ है। इतिहास में नाम दर्ज कराने की पहली शर्त यही है कि वह अपने बाप से चार जूता आगे निकले। भला बताइए, अगर आप लोहिया के सिद्धांतों को धता बता सकते हैं। उनके सिद्धांतों के नाम पर सात-आठ चेले-चपाटों के साथ पार्टी खड़ी कर सकते हैं। फिर चेले-चपाटों को ठेंगा दिखाकर उस पार्टी के भी टुकड़े करा सकते हैं, तो अब बुढ़ौती में आपकी पार्टी और आपके साथ भी तो वही इतिहास दोहराया जा

(शेष पृष्ठ २८ पर)

जिंदगी होती नीरस प्यार के बिना
नहीं मिलता करार इकरार के बिना
लिख दी चिट्ठी में कुछ कही अनकही
प्यार समझो यूँ ही इजहार के बिना
चलो छेड़ दें अपनी वीणा के तार
सुर कैसे सजेगा झंकार के बिना
डगमग डगमग मन नैया डोले रे
कैसे खेवे नाविक पतवार के बिना
हर आहट पर दौड़ी आई मैं द्वार
कभी तो आइये इन्तजार के बिना

-- किरण सिंह

पुराने नोट बन गये खोट अब तो
कुर्ते की जेब दे रही चोट अब तो
झूठी देश-परिवेश की बातें सभी
जेहन में केवल बैठा वोट अब तो
कमाया है धन घपलों से जिन्होंने
हो रहे मुखर उनके होंठ अब तो
नोट के बदले वोट लेने वाले सभी
मल रहे तेल कस रहे लंगोट अब तो
जो विरोधी थे कभी एक दूसरे के
सेक रहे एक ही तवे पर रोट अब तो
हश्र काले धन का देख-देख करके
'व्यग्र' भी हुआ है लोट-पोट अब तो

-- विश्वम्भर पाण्डेय 'व्यग्र'

यादों की दीवार पर कुछ चित्र पुराने लगा दिये
पलकों के झरोखों पर फिर ख्वाब सुहाने लगा दिये
क्या पता था वे सब, यहीं अगल-बगल होंगे
जिनको ढूंढने में मैंने जमाने लगा दिये
सच बोला जब तलक, तकलीफ नहीं थी जीने में
एक झूठ को छिपाने में कितने बहाने लगा दिये
रंजिश है उसको मुझसे, मगर क्या कमाल है
दुश्मन भी मेरे उसने
ठिकाने लगा दिये
अपने हुस्न को लेकर
अकेला ही चला था 'जय'
दीदार को कतार में,
हजारों दीवाने लगा दिये

-- जयकृष्ण चांडक 'जय'

उसकी मुस्कान पर ये दिल मचल गया साहिब
जैसे अंधियार में कोई चिराग जल गया साहिब
उसके दुपट्टे ने मेरी घड़ी छुई जब से
तब से वक्त अपना भी बदल गया साहिब
घर के आइने ने ये बात कही है मुझसे
जादू किसी का तेरे रुख
पे चल गया साहिब
कड़ा होकर के तूफान
से कोई लड़ न सका
लचीला पेड़ ही गिर
के संभल गया साहिब

-- नीरज पांडेय

तू यहां बस मुश्किलों से जूझता रह जाएगा
बीत जाएगा समय तब देखता रह जाएगा
चार दिन की जिंदगी है लम्हा लम्हा कीमती
गर नहीं सँभला तो मोहलत माँगता रह जाएगा
वक्त कब रुकता किसी के रोकने से ये कहो
हाथ पर रख हाथ यूँ ही सोचता रह जाएगा
खुद को साबित कर नहीं पाया तो इतना जान ले
एक दिन अपना पता भी पूछता रह जाएगा
जिंदगी में काम गर कुछ नेक कर जाएगा तो
नाम सदियों तक तुम्हारा गूँजता रह जाएगा
नेक नीयत रख नहीं तो फिर यकीनन एक दिन
अपनी परछाई से भी
तू भागता रह जाएगा
अब 'रमा' इस दुश्मनी
की तोड़ दो दीवार को
प्यार का ही इस जहां
में राबिता रह जाएगा

-- रमा प्रवीर वर्मा

धुंधला धुंधला अक्स, खुशी कम दिखती है
ये आँखें जब आईने में नम दिखती है
आ तो गया हमको गमों से निभाना लेकिन
हमसे अब हर एक खुशी बरहम दिखती है
आँखों में चुभ जाते हैं ख्वाबों के टुकड़े
नींदों में बेचैनी सी हरदम दिखती है
आसमान कितना रोया है तुम क्या जानो
तुमको तो फूलों पे
बस शबनम दिखती है
दिल तो टूटा है
'नदीश' का माना लेकिन
मेरी जाने-गजल तू
क्यों पुरनम दिखती है

-- लोकेश नदीश

भारत माँ की बेटी हूँ और गीत सुनाने निकली हूँ
वीरों की गाथा को जन जन तक पहुँचाने निकली हूँ
भारत माँ के शान के खातिर सरहद पर तुम डटे रहे
सर्दी गर्मी बरसातों में भी तुम अडिग वीर बन खड़े रहे
कोई माँ कहती है कि मेरा लाल गया है सीमा पर
दुश्मन को हुंकारों से ललकार रहा है सीमा पर
उनकी देशभक्ति एक सच्ची मिशाल दिखाई देती है
हर सरहद पर जय हिन्द की एक गूंज सुनाई देती है
मेरी कलम सतत चल करके गौरव गाथा लिखती है
वीरों की अमर शहादत पर ये आँसू आँसू दिखती है
अड़तालीस पैसठ इकहत्तर के बरस सुहाने बीत गए
पाक तुम्हारी गुस्ताखी पर
कड़ा प्रहार हर बार किए
वीर शहीदों की यादों में
दीप जलाने निकली हूँ
भारत माँ की बेटी हूँ और
गीत सुनाने निकली हूँ

-- शालिनी तिवारी

मीत नहीं संगीत नहीं, प्रेम का कोई गीत नहीं
दिल ही नहीं धड़कन ही नहीं, जीवन की यह रीत नहीं
इंसान हैं तो दिल भी होगा, दिल में बसा संगीत भी होगा
बिन संगीत जीवन नहीं, बिना प्रीत के मिलन नहीं,
गाओ गाओ मधुर तराने, प्रेम के होते बहुत फसाने
बिना फसाने के प्रेम नहीं, प्रेम नहीं तो जीत नहीं
जियो जियो तो ऐसे जियो, मधुर प्रेम के प्याले पियो
प्याले में मिश्री भी घोलो
मीठी मीठी वाणी बोलो
प्रेम के गीत जब गाओगे
मन के मीत को पा जाओगे
गीत भी होगा मीत भी होगा
मधुर मधुर संगीत भी होगा

-- कल्पना भट्ट

नई उमंग हो नई तरंग हो, ऐसा नया सबेरा आये
किरनों में ऐसी गर्मी हो, गरीबी यहां सब जल जाये
फिर कोई विवश रहे न यहां, पलकों में सावन न आये
संघर्षों की पताका सबकी, मंजिल पर जाकर लहराये
काया न लिपटे तिरंगे में, किन्तु कश्मीर हो जाये हमारा
अरमान सभी के पूरे हों, ऐसा हो नव वर्ष हमारा
नई छटा में नई कहानी, आह भरी अब निशा न हो
खुशियों की हो नई रोशनी, बुझती हुई शिखा न हो
आसमान के दामन में हम, पंक्षी बनके उड़ जायें
जिनकी टूटी गयी माला,
वो नई बहार में जुड़ जाये
सब करूणक्रंदन मिट जाये,
दिलों पर हो बस राज हमारा
अरमान सभी के पूरे हों,
ऐसा हो नव वर्ष हमारा

-- राज कुमार तिवारी

लघुकथा

हिस्सा बाँट

'माँ, जैसे बुआ ने कोर्ट की धमकी देकर पापा से अपना हिस्सा मांग लिया, आप भी मामा से अपना हिस्सा मांग लो.' दामिनी ने बडे प्यार से छोटी बेटी को अपने पास बिठाकर समझाया 'जायदाद का हक तो कोर्ट दिला देगा, पर रिश्ते निभाने का हक कोई कोर्ट नहीं दिला सकता इसे हमें ही निभाना है' 'तो बुआ ने क्यों बंटवारा कराया? मैं भी भाई से हिस्सा बांट करूंगी.' 'पगली हिस्सा बांट भाई-भाई में होता है, बहन-भाई में सिर्फ प्यार और त्याग होता है.'

दरवाजे पर खडा दामिनी का भाई माँ बेटी की सारी बातें सुन रहा था। 'अरे तू कब आया? वहां क्यो खडा है? कब से राह देख रही राखी बांधने के लिए.'

भाई ने बहन के पैर छुए और बोला 'ये रहा आपका गिफ्ट! देश के टॉप कालेज में एडमिशन कार्ड और फीस रसीद! मेरे रहते मेरी भांजियों की पढ़ाई रुके ये मामा ऐसा नहीं होने देगा.' दामिनी की आंखों से आंसू टपक पडे. ये सब देखकर छोटी बेटी रिश्तों का मोल समझ रही थी.

-- रजनी बिलगैयां

सेना के जवानों का दर्द!

जवाहरलाल सिंह

किसी भी देश की सेना उस देश की शक्ति का अहसास करती है! सेना हमारी सीमा की रक्षा करती है। दुश्मनों के आक्रमण से बचाती है। देश में किसी प्रकार की आपदा हो हम सेना के योगदान और कर्तव्य-परायणता को नकार नहीं सकते। सेना के जवान बड़े अनुशासित होते हैं और हर विकट परिस्थिति से जूझने के लिए दिन-रात तैयार रहते हैं। हम सबने देखा है सेना के महारत, निष्ठा और राष्ट्र के प्रति भक्ति को! वे हमारे आदर्श भी हैं! हमें अनुशासन का पाठ सेना का उदाहरण देकर सिखाया जाता है। देशभक्ति का आचरण भी हमें सेना का उदाहरण देकर ही सिखलाया जाता है। यहाँ तक कि जेएनयू के कन्हैया कुमार को भी अदालत ने सेना का ही उदाहरण देकर नसीहत दी थी। नोटबंदी के दौरान लाइन में लगे लोगों को भी सेना का उदाहरण देकर समझाया जाता था। तुम लोग यहाँ नोट लेने के लिए लाइन में लगकर परेशानी महसूस कर रहे हो। सीमा पर हमारे जवान को देखो, वे किन विकट परिस्थितियों में देश की रक्षा कर रहे हैं।

सेना के सर्जिकल स्ट्राइक पर हम सब फूले नहीं समा रहे थे। यहाँ तक कि नोटबंदी को भी मोदी जी का भ्रष्टाचार, आतंकवाद आदि पर सर्जिकल स्ट्राइक कहा जाने लगा था। पर पिछले दिन ऐसा क्या हो गया कि एक के बाद एक वीडियो आने लगे सेना या अर्ध सेना बल के जवानों की तरफ से। कभी खाने को लेकर, अधिकारियों के भ्रष्टाचार को लेकर तो कभी ऑफिसर की तीमारदारी को लेकर। सर्वप्रथम खराब खाने की शिकायत को लेकर वीडियो डालने वाले जवान तेज बहादुर ने ३१ दिसंबर को वीआरएस यानी स्वेच्छया रिटायरमेंट का आवेदन दिया था, जिसे मंजूर कर लिया गया है। ३१ जनवरी को तेजबहादुर बीएसएफ की सर्विस से रिटायर हो जाएंगे। फिलहाल तेजबहादुर को दूसरी यूनिट में प्लंबर का काम दिया गया है।

तेज बहादुर के वीडियो डालने के बाद बवाल मच गया है। इस मामले में गृह मंत्रालय के साथ पीएमओ ने अपनी दिलचस्पी दिखाई है। बीएसएफ ने गृह मंत्रालय को अपनी रिपोर्ट सौंप दी है। रिपोर्ट में बताया गया है कि बीएसएफ अधिकारी की जांच के दौरान उसी यूनिट के किसी अन्य जवान ने खाने की गुणवत्ता को लेकर कोई शिकायत नहीं की। सूत्रों के मुताबिक, रिपोर्ट में कहा गया है कि डॉक्टर अभी खाने की क्वालिटी और न्यूट्रीशन को लेकर जांच कर रहे हैं। बीएसएफ चार से पांच दिन में फाइनल रिपोर्ट गृह मंत्रालय को भेजेगा।

सुरक्षा बलों के जवानों की शिकायत रुक नहीं रही है। बीएसएफ और सीआरपीएफ के बाद अब एसएसबी के एक जवान ने अफसरों पर तेल और राशन बेचने का आरोप लगाया है। जवान ने कहा, 'बॉर्डर पर ड्यूटी करता हूं। वहां पर बहुत सारी मुश्किलें हैं। जैसे कि मोबाइल का नेटवर्क नहीं रहना। आने जाने के लिए सरकार गाड़ी तक नहीं देती। वहां के अफसर गाड़ी का तेल भी बेच देते हैं। अफसर तेल बेचते हैं, खाने का राशन बेचते हैं इससे ज्यादा मैं क्या बोलूंगा।' इस जवान ने तेज बहादुर की शिकायत को भी सही बताया है। जवान ने कहा, 'जली हुई रोटी और दाल जो जवान ने दिखाया है वो सच है।' इस जवान ने जो आरोप लगाए हैं उस पर एसएसबी ने अभी तक कुछ नहीं कहा है।

एसएसबी का गठन भारत चीन युद्ध के बाद १९६३ में किया गया था। इसका मकसद सीमा से लगे दूरदराज के इलाकों की सुरक्षा है। बीएसएफ के जवान तेज बहादुर हों या सीआरपीएफ के जीत सिंह या फिर एसएसबी का जवान। इनके आरोपों ने अर्धसैनिक बलों को दी जाने वाली सुविधाओं पर बड़ा सवाल उठाया है। हालांकि तेज बहादुर का मामला पीएम मोदी के दफ्तर तक पहुंच गया है। उम्मीद है कि पीएमओ के दखल के बाद अर्धसैनिक बलों की हालत सुधरेगी।

जवानों की शिकायत पर सेनाध्यक्ष बिपिन रावत ने बड़ा बयान दिया है। बिपिन रावत ने जवानों से कहा है कि सोशल मीडिया पर शिकायत जारी करने की जगह अपनी परेशानी सीधे मुझ तक पहुंचाएं। सेनाध्यक्ष ने इस बाबत कमांड हेडक्वॉर्टर पर शिकायत के बक्से रखने का निर्देश दिया है। रावत ने जवानों से कहा कि अपनी किसी भी प्रकार की शिकायत को शिकायत पेटी में ही डालें और सेना के नेतृत्व पर भरोसा रखें।

बीएसएफ और सीआरपीएफ के बाद अब सेना के एक जवान का वीडियो सामने आया है। यह वीडियो भी वायरल हो रहा है। जवान का नाम यज्ञ प्रताप सिंह है और वह ४२ ब्रिगेड देहरादून में तैनात था। यज्ञ प्रताप ने पिछले साल २६ जून को प्रधानमंत्री कार्यालय से सेना के अधिकारियों की शिकायत की थी। जवान का आरोप है कि अधिकारी सैनिकों से घरों में सेवादारी करवाते हैं। यह शिकायत करने के बाद यज्ञ प्रताप का वहां से ट्रांसफर कर दिया गया है। जवान के आरोप पर सेना का बयान आया है कि इतनी बड़ी सेना में कुछ निजी शिकायतें मिलने से इनकार नहीं किया जा सकता। लेकिन इस जवान की शिकायत की जांच जा रही है और उसका समाधान करने की कोशिश की जा रही है। ४२ ब्रिगेड की ये एक मात्र शिकायत है।

यज्ञ प्रताप की पत्नी का कहना है कि इस विडियो के बाद उसका मोबाइल फोन जब्त कर लिया गया है। वे भूख हड़ताल पर बैठे हैं। पत्नी भी परेशान हैं कि तेज प्रताप के साथ कोई अनहोनी न हो जाय! यही पत्नियाँ और परिजन गौरवान्वित होकर कहती थीं कि 'मेरा पति/बेटा/भाई देश के काम आया है', जब उनके शव किसी मुठभेड़ में मरने के बाद उनके पास पहुंचते थे।

इन सबके बाद भी रक्षा मंत्री और प्रधान मंत्री चुप हैं, हालाँकि गृह राज्य मंत्री किरण रिजिजू बयान दे रहे हैं। वे लोकतंत्र में आवाज उठाने को तो जायज मानते हैं पर अनुशासन और सेना के मनोबल को बनाये रखने की भी बात कह रहे हैं। उम्मीद है जवानों की भी सुनी जायेगी और उनके मनोबल को टूटने नहीं दिया जाएगा।

असंतोष हर जगह होता है, हो भी सकता है, लोग अपने सीनियर से शिकायत भी करते हैं। कुछ असर नहीं होने पर ही कोई भी व्यक्ति सोशल मीडिया या अन्य मीडिया का सहारा लेता है, ऐसा मेरा मानना है। प्रधानमंत्री भी सोशल मीडिया को महत्व देते हैं। अतः सबसे उत्तम बात तो यही होगी कि जवानों की शिकायत की तरफ ध्यान दिया जाय ताकि उनका मनोबल न टूटे! आखिर सेना सही सलामत है तभी हम सभी सही सलामत हैं। सेना में विद्रोह कभी भी जायज नहीं हो सकता। हम सब का भी कर्तव्य है कि सेना में अगर कोई कमी है तो उसे दूर करने के लिए कार्य करें!

जय जवान जय किसान का नारा हमारे पूर्व प्रधान मंत्री लाल बहादुर शास्त्री ने दिया था। सेना के जवान और देश के जवान, कर्मचारी, किसान, मजदूर ये सभी हमारे देश की नींव हैं। दुर्भाग्य से आज किसान भी बड़ी विकट परिस्थिति में हैं। फसल खराब होने या उचित दाम न मिलने पर आत्महत्या को मजबूर हैं। योजनायें बनती हैं, फंड भी दी जाती है, परन्तु दिक्कत है कि यह फंड उन तक नहीं पहुंचता, पहले भी आज भी। स्थिति ज्यादा उत्साहजनक नहीं है, बल्कि नोटबंदी के दौरान किसानों और दैनिक मजदूरों की हालत बदतर हुई है! उम्मीद की जानी चाहिए कि सरकार ज्वलंत समस्यायों को प्रमुखता से सुलझाएगी। नारों से जोश पैदा होता है, लेकिन धरातल पर काम होने पर ही दीखता है। ■

(पृष्ठ ५ का शेष) **मनुस्मृति के प्रति...**

४. मनुस्मृति पर यूट्यूब जैसी विडियो रिकॉर्डिंग करवाकर इन्टरनेट पर प्रकाशन।
५. राष्ट्रीय अखबारों में मनुस्मृति के पक्ष में लेखों का प्रकाशन।
६. देश के सभी नेताओं, सांसद, राज्यपाल, मुख्यमंत्री, विश्वविद्यालयों, दलित मंचों आदि को मनुस्मृति के सम्बन्ध में साहित्य भेंट करना।

इस कार्य को तीव्र गति से करने के लाभ-

१. बहुत बड़ी संख्या में सवर्ण समाज एवं दलित समाज के युवक भी मनुस्मृति के विषय में सत्य को नहीं जानते। उन तक हमारी बात पहुँचेगी।
२. बहुत बुद्धिजीवी भी मनुस्मृति के विषय में सत्य को नहीं जानते। उन तक हमारी बात पहुँचेगी।
३. देश को तोड़ने वाली ताकतों को प्रतिउत्तर।
४. हिन्दू समाज की एकता तोड़ने वालों को प्रतिउत्तर।
५. स्वामी दयानंद के चिंतन से आज के समाज को परिचित करवाने का सुयोग्य अवसर।

इस अभियान में आपका सहयोग वांछित है। ■

बाल कहानी

घमंडी सियार

ओम प्रकाश क्षत्रिय

काननवन में एक सियार रहता था। उसका नाम था सेमलू। वह अपने साथियों में सबसे तेज व चालाकी से दौड़ता था। कोई उसकी बराबरी नहीं कर पाता था। इस कारण उसे घमंड हो गया था, 'मै सियारों में सबसे तेज व होशियार सियार हूँ।'

उसने अपने से तेज दौड़ने वाला जानवर नहीं देखा था। चूँकि वह घने वन में रहता था। जहाँ सियार से बड़ा कोई जानवर नहीं रहता था। इस वजह से सेमलू समझता था कि वह सबसे तेज धावक है।

एक बार की बात है। गब्बरू घोड़ा रास्ता भटक कर काननवन के इस घने जंगल में आ गया। वह तालाब किनारे बैठकर आराम कर रहा था। सेमलू की निगाहें उस पर पड़ गई। उसने इस तरह का जानवर पहली बार जंगल में देखा था। वह उसके पास पहुंचा।

'नमस्कार भाई!'

'नमस्कार!' आराम करते हुए गब्बरू ने कहा, 'आप यहीं रहते हो?'

'हाँ जी' सेमलू ने जवाब दिया, 'मैंने आप को पहचाना नहीं?'

'जी। मुझे गब्बरू कहते हैं' उसने जवाब दिया, 'मैं घोड़ा प्रजाति का जानवर हूँ।'

गब्बरू ने सेमलू की जिज्ञासा को ताड़ लिया था। वह समझ गया था कि इस जंगल में घोड़े नहीं रहते हैं। इसलिए सेमलू उसके बारे में जानना चाहता है।

'यहाँ कैसे आए हो?'

'मैं रास्ता भटक गया हूँ।' गब्बरू बोला।

यह सुनकर सेमलू ने सोचा कि गब्बरू जैसा मोटा-ताजा जानवर चल-फिर पाता भी होगा या नहीं? इसलिए उसने अपनी तेज चाल बताते हुए पूछा, 'क्या तुम दौड़-भाग भी लेते हो?'

'क्यों भाई, यह क्यों पूछ रहे हो?'

'ऐसे ही!' सेमलू अपनी तेज चाल के घमंड में चूर होकर बोला,'आपका डीलडोल देखकर नहीं लगता है कि आपको दौड़ना आता भी होगा?'

यह सुनकर गब्बरू समझ गया कि सेमलू को अपनी तेज चाल पर घमंड हो गया है इसलिए उसने जवाब दिया, 'भाई! मुझे तो एक ही चाल आती है। सरपट दौड़ना।'

यह सुनकर सेमलू हंसा, 'दौड़ना! और तुम को? आता भी है या नहीं? या यूँ ही फेंक रहे हो?'

गब्बरू कुछ नहीं बोला। सेमलू को लगा कि गब्बरू को दौड़ना नहीं आता है। इसलिए वह घमंड में सर उठाकर बोला, 'चलो! दौड़ हो जाए। देख लें कि तुम दौड़ सकते हो कि नहीं?'

'हाँ। मगर, मेरी एक शर्त है,' गब्बरू को जंगल से बाहर निकलना था। इसलिए उसने शर्त रखी, 'हम जंगल से बाहर जाने वाले रास्ते की ओर दौड़ेंगे।'

'मुझे मंजूर है!' सेमलू ने उद्दंडता से कहा, 'चलो! मेरे पीछे आ जाओ!' कहते हुए वह तेजी से दौड़ा।

आगे-आगे सेमलू दौड़ रहा था पीछे-पीछे गब्बरू।

सेमलू पहले सीधा भागा। गब्बरू उसके पीछे-पीछे हो लिया। फिर वह तेजी से एक पेड़ के पीछे से घूमकर सीधा हो गया। गब्बरू भी घूम गया। सेमलू फिर सीधा होकर तिरछा भागा। गब्बरू ने भी वैसा ही किया। अब सेमलू जोर से उछला। गब्बरू सीधा चलता रहा।

'कुछ इस तरह कुलाँचे मारो!' कहते हुए सेमलू उछला। मगर, गब्बरू को कुलाचें मारना नहीं आता था, इसलिए वह केवल सेमलू के पीछे सीधा दौड़ता रहा।

'मेरे भाई, मुझे तो एक ही दौड़ आती है- सरपट दौड़!' गब्बरू ने पीछे दौड़ते हुए कहा, तो सेमलू घमंड से इतराते हुए बोला, 'यह मेरी लम्बी छलांग देखो। मैं ऐसी कई दौड़ जानता हूँ।' कहते हुए सेमलू ने तेजी से दौड़ लगाई। गब्बरू पीछे-पीछे सीधा दौड़ता रहा।

सेमलू को लगा कि गब्बरू थक गया होगा, 'क्या हुआ गब्बरू भाई? थक गए हो तो रुक जाएं?'

'नहीं भाई, दौड़ते चलो।'

सेमलू फिर दम लगाकर दौड़ा। मगर वह थक रहा था। उसने गब्बरू से दोबारा पूछा, 'गब्बरू भाई! थक गए हो तो रुक जाएं?'

'नहीं, सेमलू भाई। दौड़ते चलो।' गब्बरू अपनी मस्ती में दौड़े चले आ रहा था।

सेमलू दौड़ते-दौड़ते थक गया था। उसे चक्कर आने लगे थे। मगर घमंड के कारण वह हार स्वीकार नहीं करना चाहता था। इसलिए दम साधे दौड़ता रहा। मगर वह कब तक दौड़ता। चक्कर खाकर गिर पड़ा।

'अरे भाई! यह कौन-सी दौड़ है?' गब्बरू ने रुकते हुए पूछा।

सेमलू की जान पर बन आई थी। वह घबरा गया था। चिढ़कर बोला, 'यहाँ मेरी जान निकल रही है। तुम पूछ रहे हो कि यह कौन-सी चाल है?' वह बड़ी मुश्किल से बोल पाया था।

'नहीं भाई, तुम कह रहे थे कि मुझे कई तरह की दौड़ आती हैं। इसलिए मैं समझा कि यह भी कोई दौड़ होगी।' सेमलू कुछ नहीं बोला। उसकी सांसें चल रही थीं। होंठ सूख रहे थे। जमकर प्यास लग रही थी।

'भाई! मेरा प्यास से दम निकल रहा है।' सेमलू ने घबराकर गब्बरू से विनती की, 'मुझे पानी पिला दो। या फिर इस जंगल से बाहर के तालाब पर पहुंचा दो। यहाँ रहूँगा तो मर जाऊंगा। मैं हार गया और तुम जीत गए।'

गब्बरू को जंगल से बाहर जाना था। इसलिए उसने सेमलू को उठाकर अपनी पीठ पर बैठा लिया। फिर उसके बताए रास्ते पर सरपट दौड़ने लगा। कुछ ही देर में वे जंगल के बाहर आ गए।

सेमलू गब्बरू की चाल देख चुका था। वह समझ गया कि गब्बरू लम्बी रेस का घोड़ा है। यह बहुत तेज व लम्बा दौड़ता है। उसे यह बात समझ में आ गई थी कि उसे अपनी चाल पर घमंड नहीं करना चाहिए। चाल तो वही काम आती है जो दूसरे के भले के लिए चली जाए। इस मायने में गब्बरू की चाल सब से बढ़िया चाल है।

यदि आज गब्बरू ने उसे पीठ पर बैठाकर तेजी से दौड़ते हुए तालाब तक नहीं पहुँचाया होता तो वह प्यास से मर गया होता। इसलिए तब से सेमलू ने अपनी तेज चाल पर घमंड करना छोड़ दिया।

शिशु गीत

१. बसंत

ऋतु बसंत की फिर आयी है, बागों में खुशियाँ लायी है
जाड़ा भागा, तितली गाती, मेरे मन को वह भायी है

२. नींद

नींद नहीं लेता जो पूरी, उसको सेहत मिले अधूरी
बुद्धि ठीक से काम न करती, खुशी बना लेती है दूरी

३. योग

हम बचपन से योग करेंगे, स्वस्थ रहेंगे, मस्त रहेंगे
अच्छी ये आदत सब डालें, तन-मन सुंदर खूब बनेंगे

४. नकल

नकल परीक्षा में मत करना, जितना पढ़ा वही बस लिखना
चोरी बहुत बुरी आदत है, सीख याद ये रखकर चलना

५. फिल्में

फिल्मों की आदत मत डालो
टीवी पर तुम न्यूज चला लो
खबर रहेगी दुनियाभर की
बात नहीं मेरी ये टालो

-- कुमार गौरव अजीतेन्दु

बाल कविता

चिड़िया रानी फुदक-फुदक कर, मीठा राग सुनाती हो
आनन-फानन में उड़ करके, आसमान तक जाती हो
मेरे अगर पंख होते तो, मैं भी नभ तक हो आता
पेड़ो के ऊपर जा करके, ताजे-मीठे फल खाता
जब मन करता मैं उड़ कर के, नानी जी के घर जाता
आसमान में कलाबाजियाँ कर के, सबको दिखलाता
सूरज उगने से पहले तुम, नित्य-प्रति उठ जाती हो
चीं-चीं, चूँ-चूँ वाले स्वर से, मुझको रोज जगाती हो
तुम मुझको सन्देशा देती, रोज सवेरे उठा करो
अपनी पुस्तक को ले करके, पढ़ने में नित जुटा करो
चिड़िया रानी बड़ी सयानी, कितनी मेहनत करती हो
एक-एक दाना बीन-बीन कर, पेट हमेशा भरती हो
अपने कामों से मेहनत का, पथ हमको दिखलाती हो
जीवन श्रम के लिए बना है, सीख यही सिखलाती हो

-- डॉ. रूपचन्द्र शास्त्री 'मयंक'

बाल लेख

प्रतिभा को सामने लाइए

प्रिय बच्चो, सदा खुश रहो,

आज हम आपसे आपकी प्रतिभा के बारे में कुछ बात करेंगे. हर एक में कोई-न-कोई प्रतिभा छिपी होती है. प्रतिभा का होना अलग बात है, प्रतिभा को पहचानना अलग बात है. कभी व्यक्ति अपनी प्रतिभा को खुद ही पहचान लेता है, कभी माता-पिता-शिक्षक-साथी आदि उसकी प्रतिभा को पहचानकर उसे उसी तरफ बढ़ने को प्रेरित करते हैं. यहीं से उस व्यक्ति की जिम्मेदारी बढ़ जाती है. अगर वह अपनी प्रतिभा को भलीभांति पालित-पोषित करता है, तो उन्नति की राह पर बढ़ जाता है और जीवन संवार लेता है.

मेरी बहुत-सी छात्राएं ड्राइंग बहुत अच्छी करती थीं. वैसे तो मैं हिंदी पढ़ाती थी, पर मैं अपनी छात्राओं की किसी भी प्रतिभा को पहचानकर उन्हें प्रोत्साहित करती थी. टीचर्स डे या नव वर्ष दिवस पर छात्राएं मुझे ग्रीटिंग कार्ड देती थीं. नमिता ने भी एक दिन मुझे बहुत सुंदर कार्ड दिया. मुझे वह कार्ड प्रिंटेड कार्ड जैसा लगा. मैंने पूछा- 'बहुत सुंदर है, यह कहां से लाई हो?'

वह बोली- 'मैडम, मैंने बनाया है.' मैं उस कार्ड की सुंदरता देखकर हैरान हो गई. उस कार्ड को लेकर मैं आर्चीज गैलरी गई. उन्होंने नमिता को बुलाकर ऐसे ही अन्य कार्ड बनाने का ऑर्डर दिया. अब वह आर्चीज गैलरी की नियमित डिजाइनर बन गई है. ऐसे ही अनेक प्रतिभाशाली छात्र-छात्राएं लेखन और कला-जगत में धूम मचाए हुए हैं.

एक बात और, अपनी प्रतिभा पहचानने के साथ खुद में आत्मविश्वास बनाए-जगाए रखना. एक छोटे बालक ने बड़े मेहनत एक पेंटिंग बनाई, देखा, परखा और संतुष्ट हुआ. उसने बड़े आत्मविश्वास से वह पेंटिंग अपने ड्राइंगरूम में दीवार पर सजा दी. बड़ा होकर वह बहुत अच्छा कलाकार बना.

आज बस इतना ही, शेष फिर.

आपकी नानी-दादी जैसी,

-- लीला तिवानी

बाल कविता

एक दिन दादा जी गये बाजार, वहां से लाये तोते चार
साथ में दो पिंजड़ा लाये, घर लाकर मुझे दिखलाये
देखो कितना प्यारा है, तेरा दोस्त निराला है
आज से इसके साथ तुम्हें, सुबह शाम खेलना है
खाना पानी का ध्यान इसका, तुम्हें ही बस रखना है
अच्छी अच्छी बात सिखाना, जो स्कूल से पढ़कर आना
इसको भी वही पाठ पढ़ाना, मीठी मीठी बातें करना
कभी नहीं कड़वा बोलना, नहीं तो ये नाराज हो जायेगा
तू जैसे बोलेगा इसको, वो भी सुन तुझको बोलेगा
ये बस वही सीखता है
जो घर में होता है
इसलिये मेरे प्यारे मुन्ना
कभी नहीं कटु बोलना
जितना हो सके तुमसे
हमेशा मीठी बोली बोलना

-- निवेदिता चतुर्वेदी 'निव्या'

बाल कहानी

सपनों की दुनिया

कामनी गुप्ता

'आशु! आशु!' माँ कब से आवाजें लगा रही थी, पर आशु सपनों की दुनिया में ही खोया हुआ था। आशु तो बस सोते जागते सपनों में ही खोया रहता था और बातों के हवाई किले बनाता था कि मुझे तो डॉक्टर बनना है, यह छोटे छोटे इम्तिहान तो मेरे बाएँ हाथ का खेल है। माँ ने बहुत समझाया कि बेटा सिर्फ ऊँचे सपने देखने से मंजिल नहीं मिलती पर इन्सान को उन्हें पाने के लिए मेहनत भी करनी पड़ती है और हर इम्तिहान को संजीदगी से ही लेना पड़ता है। आशु के नवीं के इम्तिहान सिर पर थे पर आशु को यह बहुत आसान लगता था वो सोचता कि यह कौन सी बड़ी बात है, उसे तो डॉक्टरी की सीट निकालनी थी।

माँ आशु की लापरवाही से बहुत परेशान थी पर आशु कहां समझता था कि हर कक्षा का अपना महत्व है और उसके लिए मेहनत करना भी जरूरी है। जब तक हम पहली सीढ़ी ही नहीं चढ़ेंगे तो ऊपर नहीं पहुंच पाएंगे। पापा को भी लगता था आशु के सपने इतने बड़े हैं वो शायद उन्हें पाने के लिए उतना ही फिक्रमंद भी होगा। पर आशु तो लापरवाही से काम कर रहा था। फिर क्या था? नतीजा भी वैसा ही आया और आशु नवीं कक्षा में एक विषय में कुछ अंकों से रह गया।

आशु को अपनी आँखों पर विश्वास ही नहीं हो रहा था कि वो नवीं कक्षा में एक विषय में रह गया है। पर सच यही था आशु सपनों की दुनिया से बाहर आ चुका था और सपनों को हकीकत में बदलने के लिए जागरूक भी हो गया था। ठोकर तो लगी थी पर फिर भी संभलने का एक मौका मिल गया था। स्कूल टीचर ने उसके और उसकी माँ के विश्वास दिलाने पर उसे अगली कक्षा में दाखिला दे दिया था और उस विषय का उसको फिर से इम्तिहान देना था।

अब तो आशु सिर्फ मेहनत पर ही विश्वास करता था और यही कहता था 'माँ मैं सिर्फ मेहनत करुंगा।' क्योंकि सपने छोटे हों या बड़े उन्हें सच करने के लिए हमें सच्चे दिल से कर्म भी करने पड़ते हैं, सिर्फ बातों से काम नहीं बनता, न केवल सोचने से। आशु का नजरिया बदल चुका था। ■

बाल कविताएं

जागो भैया अभी समय है, वर्ना तुम भी जी न सकोगे
गंगा का पानी दूषित है, गंगाजल तुम पी न सकोगे
सागर में अणु-कचरा इतना, जल-चर का जीना दूभर है
सागर मंथन हुआ कभी तो, कामधेनु तुम पा न सकोगे
पाँच तत्व से निर्मित होता, मानव-तन अनमोल रतन है
चार तत्व दूषित कर डाले, जाने कैसा मूर्ख जतन है
दूषित जल है, दूषित थल है, दूषित वायु और गगन है
सत्यानाश किया सृष्टि का, फिर भी कैसा आज मगन है
अग्नि-तत्व अब भी बाकी है, इसका भी क्या नाश करेगा
या फिर इसमें भस्मिभूत हो, अपना स्वयं विनाश करेगा
मुझे बचा लो, सृष्टि रो पड़ी, ये मानव दानव से बदतर
अपना नाश स्वयं ही करता, भस्मासुर या उसका सहचर
देख दुर्दशा चिंतित भोले, गंगा नौ-नौ आँसू रोती
गंगा-पुत्र उठो, जागो तुम, भीष्म-प्रतिज्ञा करनी होगी
धरती-पुत्र आज धरती क्या, सृष्टि पर संकट छाया है
और सुनामी, भूकम्पों से,
मानव जन मन थर्राया है
मुझे बता दो हे मनु-वंशज,
क्या पाया था तुमने मनु से
ये पीढ़ी है आज पूछती
क्या देकर तुम जाओगे

-- आनन्द विश्वास

मैं बोलूँ कितनी ही बोली
पर हिन्दी है हम सब की बोली
सरल, प्यारी, न्यारी है सबसे
मीठी लगती है मुझको यह बोली
कश्मीर से कन्याकुमारी
विदेश में भी मान है पाती
भारत माँ की पहचान है हिन्दी
गर्वलि मुस्कान हैं हिन्दी
हिंदुस्तान की भाषा है हिन्दी
भारत माँ की भाषा है हिन्दी
जय हो जय हो बोलो नारा
मेरा देश है सबसे प्यारा

-- कल्पना भट्ट

बाल पहेलियाँ

(१) बाइस डंडों से पिटती है, वह भी पूरे घंटे भर
दो-दो जाल बिछाये जाते, कितना लगता होगा डर
(२) सबके पैरों से लिपटे, धूल-कीच से भी चिपटे
फिर भी करती काम, बोलो उसका नाम
(३) मात्र रंग उजला-उजला, गुण में पूरा काला
दोस्त धुएँ का पक्का ये, एक जहर का प्याला
(४) बिजली को चूसे दिनभर, नहीं इसे लगता क्या डर
टीवी, मोबाइल सब चलना, समझो इसके ही ऊपर
(५) दीवारों में घुस जाती, काम हमारे ये आती
फोटो, कमीज को पकड़े, अंदर-अंदर मुस्काती

-- कुमार गौरव अजीतेन्दु

(इन पहेलियों के उत्तर पृष्ठ २८ पर देखिए।)

(पहली किस्त)

थके पाँव

रवि शुक्ला

मुन्नी की बिदाई हुए बस दो ही दिन गुजरे हैं। मेहमानों का ताँता अभी खत्म भी नहीं हुआ। जलेबी की चासनी ने सूखना शुरू भी नहीं किया है। बाँसुरी की मधुर धुन और ढोल नगाड़ों की आवाजें आज भी कानों में गूँज रही हैं। घर के बाएँ और दायें तरफ अभी भी पत्तलनुमा जमीन दिखाई दे रही है। घर में किलकारियों वाले बच्चे सदस्यों के कंधे पर चढ़-चढ़कर अपना आसमान छूने को आतुर हैं। बगीचे की रौनक रोशनी की वजह से निखर रही है। छोटे-छोटे बल्बों ने जैसे अनगिनत तारों को जमीन पर उतार दिया हो। एक बड़ा-सा गोल लैंप चाँद की तरह सभी के लिए दर्शनीय है। सभी के हाथों में गर्म चाय का कुल्हड़ और एक तरफ चारपाई पर नमकीन रह-रहकर अपनी चरम सीमा को प्राप्त कर रही है।

एक कोने में दुबके से सोहनलाल अपने हाथों को चेहरे पर रखे खुद को छिपाने की अधूरी कोशिश कर रहे हैं। दिमाग में एक साथ कई सारी बातें चल रही हैं। कोई आवाज भी देता है तो उसे अनसुना करने की अनायास ही इच्छा हो जाती है। दो दिन हुए भूख और प्यास ने इनसे रिश्ता तोड़ लिया है। आज उनकी भूख और प्यास अब किसी और घर की दहलीज बन चुकी है। उनकी आँखों की रोशनी, कलाई की घड़ी का समय और सहारा उनकी बेटी इस घर से ब्याही जा चुकी है।

एक सप्ताह पहले तक जिस चेहरे पर रोशनी और नूर बरसता था। आज उसी चेहरे पर थकान दिखाई दे रही है। ये थकान है खुशी की, संतोष की। पीछे कई किस्सों को कहानी का रूप दे चुकी यादें आज भी सजल हो जाती हैं। जहाँ आज के जमाने में बेटियाँ माँ-पिता की सुने बिना ही शादी करके आशीर्वाद लेने आ जाती हैं, वहीं मुन्नी ने आदर्श और प्यार का नया सन्देश समाज को दिया था। बेटियाँ जिनके रहने से घर में स्वर्गानुभूति होती है। जिनकी हँसी-ठिठोली पिता की साँसें होती हैं। जिनके चेहरे की एक खुशी से पिता का दिल भर आता है। आज वही मुन्नी इस घर से, पिता से ससम्मान विदाई ले चुकी थी।

सोहनलाल की एक ही बिटिया है- मुन्नी। जिसके जन्मते ही सोहनलाल ने ऐसी खुशियाँ मनाई थी, जो प्रायः कोई भी नहीं मनाता। मुन्नी के जन्म से ही एक भी दिन ऐसा नहीं गया होगा कि उनकी सुबह और शाम में उसकी खुशी शामिल न हो। यदि मुन्नी रूठ जाए तो यकीन मानिए कि सोहनलाल के चेहरे को पढ़कर कोई भी बता सकता था कि आज मुन्नी हँसी नहीं है। उनके गुलशन का एक ही फूल, उनके बगिया की सहारा थी, जो घर को गुलजार किए रहती थी, जिससे सोहनलाल का घर रोशन था। आज तक स्कूल से कोई शिकायत नहीं आई थी। स्कूल की बढ़ती कक्षा के साथ ही मुन्नी के भीतर पिता के प्रति सम्मान व देखरेख में बड़प्पन ने स्वयं ही जन्म ले लिया था।

दरअसल मुन्नी के जन्म के कुछ साल बाद ही उसकी माँ का देहांत हो गया था। अपने पीछे इस फूल सी बच्ची को छोड़ गई थी, जिसकी सारी जिम्मेदारी सोहनलाल पर थी। लोग कहते हैं कि सोहनलाल ने न सिर्फ उसे पिता बल्कि माँ का भी स्नेह दिया है। वहीं मुन्नी में जैसे ही समझदारी आई उसने भी अपने पिता का विशेष ख्याल रखा है।

मुन्नी प्रथम श्रेणी से इंटर पास हुई। इंटर पास होते ही पिता से घर की जिम्मेदारियाँ भी जैसे उसने विरासत में ले ली हो। घर के काम-काज में माहिर मुन्नी ने आज तक शिकायत का मौका नहीं दिया था। कोई कह नहीं सकता कि मुन्नी बिन माँ की बेटी है। कढ़ाई, बुनाई, पाक कला सभी में निपुणता उसे जन्मजात मिली थी, जैसे नियति ने उसकी किस्मत लिखते हुए माँ से बिछोह के साथ इन कलाओं की सौगात भी दे दी थी।

बचपन से लेकर इंटर तक मुन्नी के स्कूल जाते समय पिता उसे टिफिन थमाया करते थे। पर इंटर पास होते ही दृश्य बदल चुका था। अब पिता सोहनलाल अपनी सायकिल पर टिफिन टंगा पाते, तो भावुक हो जाते। जिस बिटिया को कल तक वो उंगली पकड़कर सहारा देते थे, आज वही उन्हें आगे की राह दिखा रही थी। इंटर की पढ़ाई का फायदा हुआ कि सोहनलाल के कुछ कामों में मुन्नी भी मदद कर देती थी, जिससे दोनों का मन बहल जाता था।

दफ्तर से वापस आते ही गुड़ और पानी हाथों हाथ मिलने की आज सोहनलाल को बहुत याद रही थी। आज कोई पास आकर भी उनसे दूर हुआ जा रहा था। सगे संबंधी जो कि कोने-कोने से आए थे, सभी सोहनलाल की स्थिति से अवगत थे। शायद इसलिए कोई उन्हें उनकी इन यादों की राह से हटाना नहीं चाहता था। कुछ बुजुर्गों ने धीरे से कहा, 'काश! जी भरकर आँसू निकल जाएँ इस सोहू के आँख से तो इसके कलेजे को ठंडक मिले।'

आज सोहनलाल न खुलकर रो सकते थे और न ही खुशी व्यक्त कर सकते थे। उसे उसकी बिटिया मुन्नी पर बहुत नाज था। उन्हें ऐसा लगता कि बेटा होता तो भी वह मुन्नी की जगह नहीं ले सकता था। सही भी है बेटी को देवी की संज्ञा यूँ ही नहीं दी गई है। उनमें नौ रसों की अभिव्यक्ति होती हैं। उनके जैसी क्षमता ईश्वर ने किसी को नहीं दी। बेटी, बहन, पत्नी, बहू, माँ न जाने कितने रूप हैं। सभी रूपों में सर्वश्रेष्ठ कलेजे का यही टुकड़ा रहता है। भगवान का इंसाफ देखिए जो हृदय के करीब होता है उसी से उसे ही वह दूर कर देता है।

सोहनलाल की समझ में नहीं आ रहा था कि ये रस्म किसने बनाई है कि बेटियों को ससुराल पक्ष में ही जाकर रहने की जरुरत है। जो बेटियाँ अपने पिता से असीम स्नेह रखती हैं उन्हें उनसे दूर करने वाली प्रथा का आज सोहनलाल को पछतावा हो रहा था। परंपरा का निर्वहन तो उन्होंने भलीभाँति कर लिया था, पर इस बिछोह को लेकर वे कैसे जीवन गुजारेंगे, ये सवाल तो अन्य लोगों के दिमाग में था। पर सोहनलाल तो कुछ और ही सोच रहे थे। उनकी सोच एक पिता की सोच थी। स्वार्थ के धरातल से दूर होकर वे तो सिर्फ मुन्नी की चिंता कर रहे थे। जिस कली को उन्होंने प्यार की खाद से सींचा, आज उसे किसी और को सौंप दिया। क्या वहाँ उसका जी लगेगा? अपने जीवन के अधूरेपन को भूलकर मुन्नी की चिंता उनके दिमाग की रगों में हरकत पैदा कर रही थी।

एक तरफ उनकी सोच उन्हें खुद से उलझाए हुए थी तो दूसरी तरफ घर आए मेहमानों ने अपने-अपने सामान बाँधने शुरू किए। सोहनलाल ने रोकने की कोशिश की, पर सभी ने काम का हवाला देकर रजामंदी ले ली। अब कोई उद्देश्य भी कहाँ था। जिस उद्देश्य की पूर्ति हेतु आए थे वह तो पूर्ण हो चुका था। उन्हें सोहनलाल की मुन्नी जैसी चिंता थोड़े ही थी।

काहे को कोई किसी के सरोकार में पड़े। अपना रास्ता भला। शादी-ब्याह में तो आदमी शामिल ही इसलिए होता है इसके पीछे उसका अपना स्वार्थ निहित होता है। सबकी एक ही सोच होती है, मैं इनके यहाँ नहीं जाऊँगा तो मेरे घर कौन आएगा। इसी सोच में मन मारकर कई बार लोग बैर-मनमुटाव को छोड़कर एक-दूसरे के घर पहुँच जाते हैं।

सभी की गाड़ियाँ दरवाजे पर एक-एक कर लगने लगी थी। सोहनलाल उचित विदाई के साथ सबको विदा कर रहे थे। बच्चों को नगद और एक कपड़ा, बहुओं को नगद, साड़ी और आशीर्वाद की विदाई मिल रही थी। विदाई का सिलसिला रात से जो शुरू हुआ तो सुबह तक चलता ही रहा कोई रात ग्यारह बजे गया, कोई तीन बजे। सबके रास्ते अलग-अलग थे।

आज मुन्नी भी तो अपना अलग रास्ता तय कर रही थी। जिस रास्ते पर कोई परिचित नहीं थे। पर अब वही उसका संसार था। आज भी सोहनलाल ने खाने को देखा, तो धुंधली छाया में मुन्नी थाली लिए प्रकट हुई, अनायास ही शब्द सुनाई देने लगे, 'पिताजी बहुत हो चुका काम पहले भोजन कर लीजिए।' इतना सुनकर भी सोहनलाल कहाँ उठते थे, तब मुन्नी वायदा करती। 'जियादा काम होगा तो मैं भी हाथ बटा दूँगी।'

बस फिर क्या इन शब्दों की जैसे ही कानों में गूँज हुई उनके हाथ में थमा निवाला भी जवाब दे गया। मन तो किया खुलकर रो लेने को। पर अपने पिताधर्म का लिहाज कर उन्होंने खुद को संभाल लिया। इस समाज ने पिता को रोने का अधिकार ही कहाँ दिया है। पिता तो सिर्फ जिम्मेदारियों से बंधा एक पात्र है, जिसे समाज में खुलकर रोने का भी हक नहीं।

(शेष अगले अंक में)

शराबबंदी का नशा

विनोद कुमार विक्की

साहब ने तीन करोड़ लोगों के साथ मानव श्रृंखला का वर्ल्ड रिकार्ड कायम किया है। बिहार में शराबबंदी जैसे सराहनीय व सकारात्मक निर्णय को बिहार के समस्त बुद्धिजीवी वर्ग, महिला वर्ग, छात्र व युवा वर्ग सहित सुप्रीम कोर्ट ने भी समाज-सम्मत व न्यायोचित कदम बताते हुए जब अपना सहमति रूपी २४ कैरेट का हालमार्क चिह्न लगा दिया हो तो क्या ये उचित है कि मानव स्वास्थ्य व समाज हित में लिए गए शराबबंदी के सकारात्मक फैसले पर महाराज द्वारा बार-बार ढिंढोरा पीटने व भोंपू बजाने का। पौने साल होने को है बिहार में शराबबंदी को, पर हमारे साहब पर अन्य समस्या या विकास कार्य पर ध्यान देने की बजाय बोतलबंदी का खुमार ही परवान चढ़ा हुआ है।

'मुझको यारो माफ करना मैं नशे में हूँ' कभी ये जुमला पियक्कड़ गैंग के लिए रक्षा कवच की भांति कार्य करता था, जब वे औकात से अधिक मदिरा पान कर आउट ऑफ कंट्रोल होते थे। किंतु इसके विपरीत आजकल हमारे हाकिम पर बिना पिए ही शराबबंदी का नशा चढ़ा हुआ है। साहब पर शराबबंदी का नशा इस कदर हावी हो चुका है कि सोते जागते चलते भटकते हर जगह शराबबंदी पर ही इनका फोकस रहता है। आए दिन शराबबंदी को लेकर नए-नए स्टेटमेंट चिपका दिए जाते है या फिर सजा हेतु नए-नए कानून पर रिसर्च किया जाता है।

संभवतः मंगल ग्रह पर पानी मिलने या बुद्ध की छवि प्राप्त होने पर जितने उत्साहित नासा के वैज्ञानिक नहीं हुए होंगे, उससे कई गुना ज्यादा उत्साह हमारे साहब में शराबबंदी को लेकर देखने को मिल रहा है। ऐसा प्रतीत होता है कि हाकिम के हार्ड डिस्क में यह बात फीड हो चुकी है कि केवल पूर्ण शराबबंदी से ही राज्य का विकास चरमोत्कर्ष पर पहुँच जाएगा, अपराध व अपराधियों का नामोनिशान मिट जाएगा तथा चहुंओर सुख व शांति आ जाएगी। संभवतः इस विकास को देखकर संयुक्त राष्ट्र संघ में भारत को स्थाई सदस्यता मिल जाए, साथ ही चीन भी एनएसजी ग्रुप में भारत के शामिल किए जाने का समर्थन करना शुरू कर दे या फिर पाकिस्तान कश्मीर मुद्दे पर राग अलापना छोड़ दे और हमारे केजरी बाबू 'मोदी मोदी' का उच्चारण करना भूल जाएँ!

तभी तो साहब विकास, क्राईम, करप्शन को भूलकर शराब पर 'बको ध्यानम्' एवं शराबबंदी पर 'काक चेष्टा' से समर्पित हैं। बिहार में जितने ब्रांड की शराब नहीं बिकती थी, उससे कई ज्यादा शराबबंदी कानून लागू किये जा चुके हैं। साहब का सारा ध्यान शराब पर ही टिका हुआ है। लागू किए जाने वाले कानून भी एमआरएफ टायर की तरह मजबूत हैं। बिहार में पियक्कड़ समूह के लिए इन्होंने व्यक्तिगत जेल-गमन से लेकर सामूहिक कारावास तक का पैकेज उपलब्ध करा रखा है। शराब संचय, स्पर्श, दर्शन हो या सेवन तक प्रत्येक स्थिति के लिए अलग-अलग सजा का प्रावधान तैयार किया गया है।

पीने वाले को जेल, पिलाने वाले को जेल, किराएदार ने पी लिया तो मकान मालिक को जेल, घर के अंदर मदिरा मिली तो सपरिवार जेल भ्रमण का फैमिली पैकेज प्रावधान, पंचायत में यदि गमहारी द्रव्य मिला तो मुखिया जी की सरकारी खातिरदारी की उत्तम व्यवस्था, यदि शराब नहीं खोज सके तो दरोगा बाबू की नौकरी जाएगी टोकरी में। कुल मिलाकर खेत खाने पर गधा के साथ-साथ जुलाहे के भी मार खाने का उत्तम प्रबंध कर दिया है साहब ने। शराबबंदी का खौफ उपभोक्ताओं पर इस कदर हावी है कि केश्टो मुखर्जी टाइप महापुरुष शराब छूना, चखना तो दूर स्वप्न में भी मधुशाला या बीयर बार तक पहूंचने की हिमाकत नही कर सकते। हालात ऐसे हैं कि यदि किसी के पास से हरिवंश राय बच्चन की 'मधुशाला' जब्त हो जाय या फिर पंकज उधास का 'नशा' एलबम मिल जाय, तो उसे भी अपराधी की श्रेणी में ही रखा जाएगा।

साहब ने तो राज्य की छवि ही बदल दी है। संभवतः बेजान दारूवाला ने साहब के दारू बंद करवाने के बाद प्रधानमंत्री बनने की भविष्यवाणी कर रखी है। इसलिए साहब नहा धोकर लग गए हैं शराब और शराबियों के पीछे। साहब का महज एक ही एजेंडा रह गया है कि राज्य में भले लूट, हत्या, बलात्कार, अपहरण जैसे अपराध चाहे कितनी भी बढ़ जाएं, पर पियक्कड़ो का मनोबल नहीं बढ़ना चाहिए। दिल्ली, यूपी हो या अमेरिका या फिर सुदूर ग्रह पर साहब का कोई भी आयोजन हो शराबबंदी का ढोल पीटने में जनाब जरा भी चूक नहीं करते।

विदित हो कि अपने शासन के शुरुआती वर्षों में साहब ने सर्वहारा वर्ग से कुलीन वर्गों तक के सुख दुःख सेलिब्रेशन के साथी 'सोमरस' को राज्य के ऐसे गांव व गली तक पहुँचा दिया था, जहाँ पर बिजली व सड़क तथा विकास की किरण तक नहीं पहुँच पाई थी। राज्य की आय का सबसे बड़ा स्रोत मद्य उत्पाद बन गया था। अब पूर्ण शराबबंदी की स्थिति 'बना के क्यों बिगाड़ा रे' को चरितार्थ करती नजर आती है। सोमपुरुष विजय माल्या के भारत से भागने के पीछे कहीं न कहीं साहब का पूर्ण शराबबंदी का निर्णय भी जिम्मेदार है। आप ही बताइए जब इतना बड़ा शराब उपभोक्ता राज्य शराब पर ही प्रतिबंध लगा दे, तो शराब निर्माता माल्या साहब देश ना छोड़ेंगे तो क्या बिहार में कद्दू की खेती करेंगे? बहरहाल शराब सेवन का नशा इतना प्रभावी नही होता जितना आजकल शराबबंदी की खुमारी साहब पर हावी हो चुकी है। राज्य, जनता, विकास आदि की सुधि लेने की बजाय हाकिम शराबबंदी में बेसुध हो चुके हैं। ■

लघुकथा

मेहरबानी

बस की खचाखच भीड़ में कई जगह उड़ती हुई नजर डालने के बाद मेरी नजर एक सीट पर टिक गई, जिस पर तीन दुबले-पतले, सींकिया से बदन के युवक बैठे थे। शायद वहाँ सम्भावना बने, यह सोचकर किसी तरह जगह बनाते हुए वहाँ पहुँचा और उनमें से एक युवक को अपनी आवाज में अतिरिक्त मधुरता घोलते हुए पुकारा- 'भाई साहब, ओ भाई साहब!'

'क्या है?' खीझ ही उठा वह युवक।

'भाई साहब ! ये मेरी माँ जी हैं। बहुत बीमार हैं। खड़ी नहीं रह सकतीं। थोड़ी मेहरबानी करिए। थोड़ा खिसक जाइए और इन्हें बैठा लीजिए।' करीब-करीब गिड़गिड़ाते हुए कहा मैंने।

वह बिफर ही पड़ा- 'बीमार हैं, तो मैं क्या करूँ? मैंने समाजसेवा का ठेका लिया है क्या? तीन की सीट है, तीन लोग बैठे हैं, बस इतना काफी है।'

मैं ठक्क रह गया। आसपास के यात्री उस युवक को आग्नेय नेत्रों से घूर-घूरकर निहारने लगे, फिर उनकी नजरें माँ की ओर घूमीं। लगा, माँ जी के प्रति सहानुभूति का अथाह समुद्र ही उमड़ पड़ा हो जैसे और पल-दो पल में जरूर कोई न कोई कहने वाला है- 'आइए माँ जी, यहाँ बैठ जाइए।' पर ऐसा कुछ न हुआ। अगले ही पल हर कोई अपने-अपने धुन में खो गया। माँ जी किसी तरह गैलरी में ही उकडूँ होकर बैठ गईं।

कुछ देर बाद बस एक स्टॉप पर रुकी, तो बस के अगले दरवाजे से एक खूबसूरत लड़की की 'इन्ट्री' हुई। उसने भी मेरी ही तरह पूरे बस का उड़ती हुई नजरों से मुआयना किया, फिर मुस्कराते हुए आगे बढ़ी। आश्चर्य कि इस बार 'समाजसेवा का कोई ठेका न ले रखने वाले युवक' ने खुद ही खिसककर उस लड़की के बैठने की जगह बना दी। वह सीट पर धप्प से बैठ गई और एक तेज साँस खींचकर बोली- 'ओह, माई गॉड! बहुत गर्दी है। लोग ऐसे भरे हैं, जैसे जानवर!'

'अम्माँ जी, आपकी तबीयत खराब है?' तभी वह बगल में बैठी कराह रहीं माँ जी को देख चौंक पड़ी।

'हाँ बिटिया, कुछ ज्यादा ही।' माँ जी मुश्किल से बोल पाईं। 'आओ, आप बैठ जाओ। मैं खड़ी हो जाती हूँ।' कहते-कहते वह उठकर गैलरी में आ खड़ी हुई।

मैं कराहती हुई माँ जी को सहारा देकर सीट पर बैठा रहा था और गौर से देख रहा था, उस युवक का चेहरा खीझ, विवशता और अनायास ही जैसे 'कुछ' खो देने के भाव से रक्तिम हो उठा था।

-- मुन्नू लाल

हिंदी को आठवीं अनुसूची से मुक्त कर राष्ट्रभाषा का दर्जा दें!

निर्मल कुमार पाटोदी

भाषा किसी राष्ट्र और समाज की ऐतिहासिक धरोहर होती है। उसका संवर्धन और संरक्षण करना एक अनिवार्य दायित्व है। भाषा, संस्कृति, सभ्यता, जीवन पद्धति, अस्मिता और खानपान से पहचान होती है। स्वाधीनता के बाद से हम ऐसे बुनियादी तत्वों की अनदेखी करते रहे हैं। वाजपेयी सरकार में जब आडवाणी गृहमंत्री थे तब राजनैतिक कारणों से मैथिली, संथाली, डोंगरी और बोडो को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल कर लिया गया था। इनमें हिंदी क्षेत्र की बोली भी थी। बोलियों को शामिल करने के पीछे एक मंशा यह भी रहती है कि उसके साहित्यकारों को साहित्य अकादमी के पुरस्कार मिलने में आसानी हो जाती है। नेशनल बुक ट्रस्ट पुस्तकें प्रकाशित कर देता है।

हुआ यह कि मैथिली को शामिल करने से हिंदी को अपनी भाषा नहीं मानते हुए जनगणना में अपने को मैथिलीभाषी दर्ज करा दिया। वर्तमान में बोली के रूप में भोजपुरी, राजस्थानी और भोटी आदि बोलियां देश की ३८ बोलियों के साथ सम्मानित रही हैं, हैं और रहेंगी। विभिन्न क्षेत्रों में बोली और लिखी जाने वाली बोलियाँ हमारी ही धरती पर जन्मी और पनपी हैं, विकसित हुई हैं। ऐसे ही भारत की वसुंधरा पर अनेक भाषाऐं पनपी हैं, जो संविधान की आठवीं अनुसूची का अभिन्न अंग हैं। अष्टम अनुसूची का मुख्य उद्देश्य हिंदी में शब्दावली ग्रहण करने से है। ताकि हिंदी निरंतर पुष्ट होती रहे।

इस संबंध में सीताराम महापात्र की अध्यक्षता में बनाई गई समिति ने अपनी रपट में स्पष्ट रूप से कहा था कि अब किसी अन्य भाषा को अष्टम अनुसूची में शामिल करने की कोई आवश्यकता नहीं हैं। अष्टम अनुसूची में जितनी बोलियों को सरकार शामिल करना चाहे कर लें, किंतु साथ ही साथ हिंदी को इस सूचि से बाहर करके राष्ट्रभाषा का दर्जा दे दिया जाए। संविधान में देश की कोई राष्ट्र भाषा और सम्पर्क भाषा ही नहीं है। हिंदी राष्ट्र भाषा के लिए संविधान बनाए जाते समय ही अधिकारी थी। अब सत्तर साल के बाद बिना विलंब उसे राष्ट्रभाषा का सम्मान मिलना ही चाहिए।

भारत राष्ट्र के हित में यही है कि हर भारतवासी अपनी बोलियों को बोलियों के रूप में विकसित करें, भाषाओं को भाषाओं के रूप में रहने दें। बोलियाँ और भाषाएं प्राचीन हैं। दुनिया में उनकी अपनी पहचान और उपयोगिता है। उनका हित इसी में है कि उनका अस्तित्व बना रहे। ये सभी निरंतर विकसित होती रहें। हमारी केन्द्र सरकार को भी चाहिए कि वह बोलियों को बोलियों के रूप में और भाषाओं को भाषाओं के रूप में मान दें, सम्मान दें और विकसित होने का हर संभव अवसर दें। भारत सरकार के प्राक्कथन १८ जनवरी, १९६८ को संसद के दोनों सदनों द्वारा पारित राजभाषा संकल्प में व्यक्त किया गया है- 'केंद्र सरकार के कार्यालयों और सार्वजनिक क्षेत्रों द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार और प्रयोग के लिए हिंदी बोले जाने और लिखे जाने के लिए 'क' क्षेत्र है। इस क्षेत्र में शामिल राज्य हैं- बिहार, छत्तीसगढ़, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, झारखण्ड, मध्य प्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड और अंडमान तथा निकोबार द्वीप समूह, तथा राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली हैं। ये सभी हिंदी भाषी हैं। इनका कामकाज हिंदी भाषा में होता है। इनकी आबादी स्थानीय बोलियों का उपयोग भी करती है। गृह मंत्रालय भारत सरकार के राजभाषा विभाग के २०१५-१६ के अनुसार संघ का राजकीय कार्य हिंदी में करने के लिए यह कहा गया है- 'सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रगामी प्रयोग के क्षेत्र में प्रगति हुई है, किंतु अब भी लक्ष्य प्राप्त नहीं किए जा सके हैं। (देश को स्वाधीन हुए सत्तर साल हो गए हैं तब भी) किंतु अभी भी बहुत सा काम अंग्रेजी में हो रहा है।'

हाँ, सत्य यह है कि हिंदी भारत की राजभाषा है, पर चलती अंग्रेजी की है, जिसे संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल नहीं किया गया है। फिर भी सरकार के मूल दस्तावेज अंग्रेजी में जारी होते हैं। उन्हें प्रामाणिक होने की मान्यता प्राप्त है। उनके साथ में हिंदी अनुवाद संलग्न रहता है। हिंदी दस्तावेज की मान्यता नहीं होने से उन्हें कोई नहीं पढ़ता है और न ही कोई उपयोगिता है। १४ सितंबर, १९४९ को हिंदी को राजभाषा घोषित कर दिया गया था, परंतु उसमें यह प्रावधान करवा दिया गया कि यह घोषणा पन्द्रह साल बाद होगी। तब हिंदी राजभाषा के रूप में सक्षम हो जायगी। हिंदी राजभाषा का स्थान ग्रहण कर लें, इस दिशा में सरकार ने कोई ठोस कदम उठाए होते तो संविधान में व्यक्त भावना पूर्ण हो जाती। परंतु ऐसा हो नहीं सका। अतः १९६७ में कहा गया कि हिंदी राजभाषा का स्थान ग्रहण करने योग्य नहीं है और फिर से प्रावधान कर दिया गया कि अंग्रेजी अनिश्चित काल तक बनी रहेगी। इसके विपरित चीन जो भारत के साथ स्वाधीन हुआ था, उसके मुखिया माउत्से तुंग ने स्वाधीनता मिलने के तत्काल बाद घोषित कर दिया था चीन की प्रमुख भाषा मंदारिनी में चीन सरकार का सभी कामकाज होगा।

अगर भारत के स्वाधीन होते ही चीन के समान हिंदी को भारत की राजभाषा और राष्ट्रभाषा और सम्पर्क भाषा घोषित कर दिया जाता, तो उसके प्रयोग होने का अवसर मिल जाता और वह बिना विवाद के अपना वास्तविक स्थान ग्रहण कर लेती। परंतु ऐसा नहीं हो सका। राजनैतिक स्वार्थ और अवसरवादिता ने हिंदी के मार्ग को अवरुद्ध कर दिया। दुनिया में हमारा भारत ही ऐसा लोकतांत्रिक गणराज्य है, जिसकी सत्तर साल बाद भी अपनी कोई राष्ट्रभाषा ही नहीं है। सवा सौ करोड़ देश के नागरिकों के राष्ट्र की अपनी कोई भाषा ही नहीं है। विश्व में कहने को हिंदी भारत की प्रमुख भाषा है परंतु सरकार के कामकाज और व्यवहार में हर तरफ हिंदी का नहीं अपितु विदेशी भाषा अंग्रेजी का अधिपत्य है। संस्कृत के साथ घोर असहनीय उपेक्षा हुई है। गनीमत है कि है कि गैर हिंदी क्षेत्रों की भाषाऐं ऐसी दुर्दशा से मुक्त रही हैं। विडम्बना यह भी है कि देश के उच्च और उच्चत्तम न्यायालय में हिंदी और राज्यों की भाषाओं में वाद चलाया ही नहीं जा सकता है। अपने देश में देश की भाषाओं का न्याय के दरवाजे में प्रवेश ही निषिद्ध है। इसके लिए संविधान के अनुच्छेद ३४८ में संशोधन करने के लिए राजनैतिक स्वार्थ और अवसरवादिता अब आडे नहीं आना चाहिए।

हिंदी को उसका संवैधानिक स्थान देश में मिले इसके लिए अब संविधान में संशोधन करना होगा। हिंदी सरकार के कामकाज की भाषा बन जायगी तो उसे शिक्षा, व्यापार, उद्योग, तकनीकी, ज्ञान-विज्ञान आदि सभी क्षेत्रों में अपनाया जा सकेगा। हिंदी देश की एक ऐसी भाषा है, जो देश में हर तरफ बोली और समझी जाती है। वह देश को एक सूत्र में जोड़ने की भूमिका निर्वाह कर रही है। अंग्रेजी भाषा जिस प्रकार से मुश्किल से तीन प्रतिशत उच्च वर्ग से जुडे लोगों के स्वार्थ पूर्ति के कारण देश के कामकाज की भाषा पिछले सत्तर साल से बनी हुई है, उसी नीति पर चलकर हिंदी को खत्म करने के लिए हिंदी प्रदेशों की बोलियों को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल करने का राष्ट्रघाती अभियान उभारा गया है।

दिसंबर में मुंबई के एक दैनिक समाचार पत्र में प्रकाशित समाचार के अनुसार दिल्ली भाजपा के नवनियुक्त अध्यक्ष मनोज तिवारी ने बताया कि सरकार ने भोजपुरी, राजस्थानी और भोटी को आठवीं अनुसूची में संवैधानिक दर्जा देने का फैसला कर लिया है। संसद के अगले सत्र में सरकार लोगों को यह तोहफा दे देगी। इस मामले में हैरत में डालने वाला गृहमंत्री राजनाथ सिंह का ११ नवंबर का लखनऊ की एक सभा का बयान है जिसमें उन्होंने कहा कि भोजपुरी को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल किया जायगा। उन्हें बयान देने से पहले सोचना था कि देश में ३८ बोलियाँ हैं, जो अपने-अपने राज्य की भाषा की मान्यता के लिए आठवीं अनुसूची में शामिल होने की कतार पर है। ये ब्रज अवधी, बुंदेली, छत्तीसगढ़ी हरियाणवी, कुमायूनी, गढ़वाली, मगही, मालवी, निमाड़ी, अंगिका आदि बोलियाँ हैं, अपने राज्यों की अधिकृत भाषाऐं नहीं हैं। यदि इन बोलियों को आठवीं अनुसूची में जगह दे दी गयी तो अगली जनगणना में लोग अपने राज्य की भाषाओं के बदले बोलियों को लिखायेंगे। तब हिंदी जो दुनिया में दूसरे क्रम पर रही है कुछ शामिल हो चुकी बोलियों के कारण चौथे क्रम पर पहुंच चुकी है। उसको अपनाने वालों की संख्या किसी राज्य से भी कम हो जायगी और हिंदी को उसकी बोलियाँ ही अपदस्थ कर देंगी।

आज जब हिंदी को अपनी जड़ से खत्म करने का

(शेष पृष्ठ २७ पर)

कुंडलियाँ

आभासी इक मीत ने, खूब गिराई गाज
दिल टूटा, धन भी लुटा, निकली धोखेबाज
निकली धोखेबाज, मिलन का न्योता आया
बन के फिर मक्कार, नेह को दाव लगाया
सम्मन जारी तीन, लापता हुई दुभाषी
रहे बजाते बीन, प्रीत थी वह आभासी

-- डॉ. रमा द्विवेदी

सखा मुलायम मान लो, अब तुम हमरी बात
बेटुवा को दे दीजिए, कुर्सी और जमात
कुर्सी और जमात, बुढ़ौती की है बेला
शाहजहाँ का आज, न दोहरा जाए खेला
कह 'सुरेश' इज्जत भी रह जाएगी कायम
वरना अब सुत लतियाएगा सखा मुलायम

जूता सिसकी भरि रहा, ये मेरा अपमान
सोच-समझकर तानिए, फिर करिए संधान
फिर करिए संधान, केजरी मुवां निठल्ला
संविधान रिपु, नीच, हठी, बातूनी, नल्ला
कह 'सुरेश' जो शठ अन्ना-सपनों पर मूता
ऐसे खल पर मत फेंको, रिरियाया जूता

-- सुरेश मिश्र

कान्हा तेरा नाम सुन, मन में नाचे मोर
तेरे सुमिरन मात्र से, होय सुहानी भोर
होय सुहानी भोर, बाद सब मंगल होता
धरे नही जो ध्यान, मूर्ख अपना ही खोता
कहे भक्त उत्कर्ष, ध्यान धर जिसने जाना
तेरा ही वह हुआ, त्यागकर सबकुछ कान्हा

भूलो मत गुरुदेव को, गुरू गुणों की खान
दिवस आज गुरुदेव का, करो आप सब ध्यान
करो आप सब ध्यान, सफल तब ही हो पावें
गुरू ज्ञान के दीप, बात यह वेद बतावें
भूल गुरू नादान, अधर में क्यों तुम झूलो
कहे शिष्य उत्कर्ष, गुरूजी को मत भूलो

-- नवीन श्रोत्रिय 'उत्कर्ष'

कुर्सी देखो बिक रही, वोट लगे हैं दाम
कोई जपता है खुदा, कोई जपता राम
कोई जपता राम, जाति का गणित लगाता
कोई देता घाव, कहीं कोई सहलाता
कह बंसल कविराय, जेब सरकारी बरसी
लगा रहे सब जोर, मिले बस हमको कुर्सी

वादा फिर करने लगे, मचा-मचाकर शोर
वादों की ही बात है, देखो चारों ओर
देखो चारों ओर, मचा वादों का हल्ला
माँग रहे हैं वोट, सभी फैलाकर पल्ला
कह बंसल कविराय, जीत का लिये इरादा
जनता से नित नवल, करेंगे झूठा वादा

-- सतीश बंसल

क्षणिकाएँ

भरे हैं हर वतन के
परमाणु वाले गुल्लक
और रोज सरहद पर
बिछ रहीं लाशें
मुल्क में चमन के लिए
क्या जहर बंद कारतूस ही
मुनासिब है अब अमन के लिए?

-- अमित कु. अम्बष्ट 'आमिली'

अक्सर बंद किवाड़ों में
दम तोड़ते हैं अहसास
सिसकती हैं आवाजें
रुंध जाते हैं गले
मन में रहती है
बस मरने की चाहत
कुछ मर जाती हैं और कुछ जी जातीं हैं
जीते जी मरने के लिए

-- अंजु गुप्ता

मुक्तक

किसी गम को छुपाने के लिये हम मुस्कुराते हैं
जमाने को दिखाने के लिये हम मुस्कुराते हैं
बड़ी बेताब रहती है, छलकने को नयन नदियाँ
कि अश्को को सुखाने के लिये हम मुस्कुराते हैं

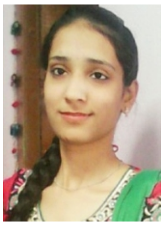

सफर में हमसफर बनके, वहीं फिर छोड़ जाता है
समझते हैं जिसे अपना,
वही मुँह मोड़ जाता है
नहीं आसान है चलना,
इश्क की राह पर सुन लो
जिसे दिल में बसाते हैं,
वही दिल तोड़ जाता है

-- नीतू शर्मा

प्यार फिर से वो जताने आ गये हैं
आस फिर से वो जगाने आ गये हैं
भूल तो कब से गये थे वो जख्म हम
याद फिर से वो कराने आ गये हैं

रहती नहीं अपनी कोई खबर
ऐसी इश्क की होती है डगर
पाकर भी मिलता चैन नहीं
खोने का भी रहता इक डर

-- डॉ सोनिया गुप्ता

कुंडली

बदली कब दीवार है, नए कलेंडर हार
पन्ने पन्ने पर लिखे, नए नए त्यौहार
नए नए त्योहार, सोलवां साल निराला
निकले तगड़े नोट, वर्ष सत्रह अब आला
गौतम हाथों हाथ, खिलाएं सबको कदली
खुशियाँ झूमे साल, मुबारक अदला बदली

-- महातम मिश्र, गौतम गोरखपुरी

दोहे

दोहों में स्वामी विवेकानन्द

युवा चेतना दे रहे, स्वामी जी सानंद
था 'विवेक' पाया सदा, इसीलिये 'आनंद'
किये काम, सो हैं अमर, सदा रहेंगे पास
नव उजास नव तेज में, ऊर्जा का अहसास
अमरीका में छा गये, दे संस्कृति का ज्ञान
सकल विश्व में बढ़ गया, तब भारत का मान
परिभाषित कर धर्म को, फैलाया आलोक
खुशी, हर्ष, उल्लास दे, परे हटाया शोक
परमहंस के ज्ञान को, देकर व्यापक मान
आदर्शों को संग ले, रच डाला अभियान
दुनिया करने लग गई, भारत की जयकार
निज करनी निज ज्ञान से, दिया हमें उपहार
इंसानी जज्बात हैं, तब ही मानव खास
सिखलाया हमको यही, हो मानवता-वास
'शरद' करे उनको नमन, थे संतों के संत
जब तक उनकी सीख है, नहीं सत्य का अंत

-- प्रो. शरद नारायण खरे

पुस्तक समीक्षा

मनभावन ग़ज़ल संग्रह

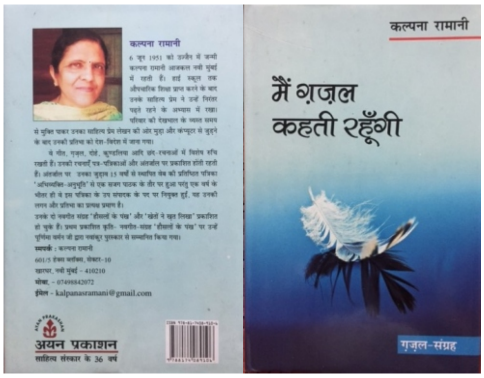

कल्पना रामानी का पहला ग़ज़ल संग्रह 'मैं ग़ज़ल कहती रहूँगी' एक अभिनव संग्रह है, जिसमें उनकी ८० हिन्दी ग़ज़लों को सम्मिलित किया गया है। इनको पढ़ना एक आनन्ददायक अनुभव है। ग़ज़लों का विषय प्रेम से लेकर देशभक्ति और राजनीति तक है। सामाजिक जीवन के लगभग सभी पक्षों को उन्होंने छुआ है।

ग़ज़लों की भाषा परिष्कृत हिन्दी है, जिसमें बड़ी खूबसूरती से उर्दू के प्रचलित शब्दों को भी पिरोया गया है। छंद की दृष्टि से सभी ग़ज़लें त्रुटिरहित हैं। प्रत्येक रचना की दृष्टि से पूर्ण है। संग्रह की छपाई उत्तम है और मुखपृष्ठ सामान्य होते हुए भी आकर्षक है।

-- विजय कुमार सिंघल

गजल संग्रह : मैं ग़ज़ल कहती रहूँगी
रचनाकार : कल्पना रामानी
प्रकाशक : अयन प्रकाशन, मेहरौली, नई दिल्ली
पृष्ठ संख्या : १०४, मूल्य : रु. २२०

चुनाव सुधार करने का सही समय

मृत्युंजय दीक्षित

गत २ जनवरी को देश के सर्वोच्च न्यायालय ने धर्म, जाति और मत-संप्रदाय के नाम पर चुनाव लड़ने को असंवैधानिक करार दिया है। मुख्य न्यायाधीश की अध्यक्षता वाली सात सदस्यीय खंडपीठ ने अपने ऐतिहासिक फैसले में कहा है कि चुनाव एक धर्मनिरपेक्ष गतिविधि है और लोग किसकी पूजा करते हैं यह उनकी व्यक्तिगत इच्छा का मामला है। इसलिए राज्य को इस गतिविधि में हस्तक्षेप करने की अनुमति नहीं है। अदालत ने अपने निर्णय में स्पष्ट कर दिया है कि इन आधारों पर वोट मांगना चुनाव नियमों के तहत भ्रष्ट व्यवहार होगा। इस फैसले के बाद आशा थी कि राजनैतिक दल समझदारी का परिचय देंगे, लेकिन अभी चुनाव प्रक्रिया पटरी पर भी नहीं आयी है कि सभी दलों ने न्यायपालिका की अवमानना करना प्रारम्भ कर दिया है। इस फैसले के बाद सबसे बड़ी समस्या मुकदमेबाजी की बाढ़ आने की थी, लगभग वह भी शुरू हो चुका है।

सर्वोच्च न्यायालय के फैसले की सर्वाधिक अवमानना उ.प्र. सहित पांच प्रांतों में होने जा रहे आगामी चुनावों में देखने को अवश्य मिलेगी और वह प्रारम्भ भी हो चुकी है। उ.प्र. में तो लगभग सभी दल पूरी ताकत के साथ धर्म व जाति की गजब की राजनीति करने जा रहे हैं। उप्र में भाजपा सांसद साक्षी महाराज इसके शिकार भी बन चुके हैं। मेरठ में ४ बीवियों व ४० बच्चों को लेकर दिये गये बयान के खिलाफ उन पर सभी दलों ने कार्यवाही करने की मांग की है तथा वह शुरू भी हो चुकी है। सभी विरोधी दल दावा कर रहे हैं कि भाजपा सांसद का बयान सर्वोच्च न्यायालय के निर्देशों के खिलाफ है। उनके खिलाफ कार्यवाही होनी चाहिये। लेकिन सबसे मजेदार बात यह है कि उप्र में धर्म व जाति पर सबसे खतरनाक राजनीति तो भाजपा विरोधी कर रहे हैं। सबसे अधिक मुकदमे भी भाजपा विरोधी दलों के खिलाफ ही होने जा रहे हैं। वर्तमान समय में सबसे अधिक उग्र मुस्लिमपरस्त राजनीति व जातिगत राजनीति को हवा देने का काम बसपानेत्री मायावती कर रही हैं। मायावती ने अपने उम्मीदवारों का परिचय धर्म व जाति के आधार पर करवाया है।

खबर है कि मायावती के खिलाफ चुनाव आयोग में याचिका भी दायर हो गयी है और उनके खिलाफ एफआईआर व बसपा की मान्यता रद्द करने की मांग भी की गयी है। अदालत के फैसले को यदि नजदीक से देखा जाये तो बसपानेत्री मायावती इसका सीधा शिकार हो सकती हैं। यहां पर चुनाव आयोग व चुनाव आचार संहिता का पालन करवाने वाले अधिकारियों की निष्पक्षता की भी अग्निपरीक्षा होने जा रही है। बसपा तो मुस्लिम बहुल इलाकों में धर्म के आधार पर जनसभाएं भी कर रही हैं तथा मुस्लिम समाज में दंगों के भय का वातावरण भी पैदा कर रही हैं। अपनी हर प्रेसवार्ता में किसी न किसी प्रकार से धर्म के आधार पर मुस्लिम समाज व फिर जाति के आधार पर ही समाज को संबोधित करते हुए वोट देने की मांग कर रही हैं।

सपा नेता आजम खां कह रहे है कि जबसे समाजवादी परिवार में दंगल का आरम्भ हुआ है तब से मुस्लिम समाज असमंजस व दुविधा के भंवर में डूब गया हैं। वह सोच नहीं पा रहा है किधर जायें। सपा में तो सपा मुखिया मुलायम सिंह मुसलमानों के सबसे बड़े हितैषी हैं ही, वहीं सपा के नये सुल्तान अखिलेश यादव ने तो अपनी सरकार के कार्यकाल में मुस्लिम तुष्टीकरण की आंधी चला दी थी। सपा में चल रहे दंगल के बीच सबसे दिलचस्प मुकाबला यह देखना बाकी है कि यदि दोनों खेमे अलग-अलग चुनाव मैदान में जाते हैं, तो दोनों ही ओर से कितने मुस्लिम बाहुबली उम्मीदवार चुनाव मैदान में अपना खम्भ गाड़ते हैं। दोनों ही पक्षों को मुस्लिम मतों की जोरदार आस रहने वाली है और धर्म व जाति की राजनीति भी गजब की करने वाले हैं।

वहीं उप्र के चुनावों में इस बार यदि कांग्रेस का किसी दल से समझौता नहीं हुआ तो वह भी मुस्लिमपरस्त और अतिपिछड़ों को उनका हक दिलाने के बहाने काफी जोरदार ढंग से धर्म व जाति का खेल खेलने जा रही है। माना जा रहा है कि यदि कांग्रेस किसी भी दल व गुट के साथ कोई समझौता करेगी, तो वह भी धर्म व जाति के आधार पर नफा-नुकसान देखकर ही करेगी। कांग्रेस की ओर से जो भी चुनावी बयानबाजी शुरू हुई है वह भी धर्म व जाति के धंधे की राजनीति से ही शुरू हुई है।

उप्र की राजनीति में कुछ नये दलों का भी प्रादुर्भाव हो रहा है तथा अन्य छोटे दल भी केवल धर्म व जाति के नाम चुनावी गठबंधन कर रहे हैं तथा चुनाव आयोग के प्रयासों को धता बताते हुए ये सभी छोटे दल कालेधन को खपाने का काम करने वाले हैं। हैदराबाद के सांसद असदुद्दीन ओवैसी की पार्टी आल इण्डिया मजलिस-ए-इततेहादुल-मुसलमीन अकेले ही चुनावी मैदान में कूदने जा रही है। ओवैसी का पूरा एजेंडा ही धर्म पर आधारित है। वहीं दूसरी ओर डा. अय्यूब खान के नेतृत्व वाली पीस पार्टी अपने सहयोगी दल निर्बल इण्डियन शोषित हमारा आम दल (निषाद पार्टी) के साथ मिलकर लड़ेंगे। इस बार के विधानसभा चुनावों में सबसे खास बात यह है कि सभी दल केवल भाजपा को ही हर हाल में रोकना चाहते हैं, लेकिन अभी तक किसी भी दल व गुट का ऐसा बड़ा गठबंधन सामने नहीं आ पाया है जो कि भाजपा को रोकने में सफल हो सके। सभी दल केवल धर्म के आधार पर वह भी केवल मुस्लिमपरस्त राजनीति ही कर रहे हैं।

भारतीय जनता पार्टी पर आमतौर पर हिंदुवादी राजनीति करने का आरोप लगाया जाता है और सभी दल उस पर मुस्लिम समाज में भय उत्पन्न करने का आरोप लगाते हैं। भाजपा विरोधी भाजपा को दंगा कराने वाली पार्टी कहते हैं। लेकिन इस बार भाजपा ने पीएम मोदी व अमित शाह की अगुवाई में अपना एजेंडा कुछ सीमा तक बदल दिया है। वह गरीबों के विकास और गरीबी हटाओ पर अपना चुनाव अभियान केंद्रित करेगी। हर बार की तरह 'सबका साथ सबका विकास' उसका नारा है। लेकिन भाजपा ने भी नोटबंदी से परेशान व विपक्षी दलों के हमलों को कुंद करने के लिए मुस्लिमों से लोकलुभावन वादे करने प्रारम्भ कर दिये हैं।

उप्र सहित पांचों प्रांतों में मुसलमानों को सकारात्मक संदेश देने के लिए वर्ष २०१८ के शैक्षणिक सत्र से पांच विश्वविद्यालय खोलने का निर्णय किया है। अब सवाल उठता है कि आखिर भाजपा सरकार को यह सब करने की क्या आवश्यकता आ पड़ी? यह भी एक प्रकार का मुस्लिम तुष्टीकरण और धर्म के आधार पर शिक्षा व विद्यार्थी का विभाजन ही माना जायेगा। वर्तमान समय में हर कोई दल येन-केन-प्रकारेण मुस्लिम तुष्टीकरण को ही बढ़ावा देता जा रहा है। अब हम २०१७ में पहुच गये हैं तथा इसी प्रकार २०२० के आगे की भी सोच रहे हैं। लेकिन देश के राजनैतिक दल सत्ता में बने रहने के लिए कोई भी कानून या आदेश मानने को तैयार नहीं दिखते। अपने आप को धर्मनिरपेक्ष कहलाने वाले सभी दल मुस्लिम तुष्टीकरण व जातिगत राजनीति करने में सबसे आगे हैं।

अब सर्वोच्च न्यायालय ने स्पष्ट गाइडलाइन दे दी है। चुनाव आयोग को कानून का सहारा मिल गया है। अब वह धर्मनिरपेक्षता के नाम पर पाखंडी राजनीति करने वाले सभी दलों पर लगाम कसने के लिए स्वतंत्र है। सर्वोच्च न्यायालय के फैसले के आधार पर वह उन सभी लोगों व दलों का परीक्षण करें जो उक्त निर्णय के दायरे में आ रहे हैं। चुनाव को पूरी तरह से धर्मनिरपेक्ष बनाने में यह आदेश काफी मददगार साबित हो सकता है। सभी बयान, सभी उम्मीदवार, सभी चुनाव घोषणापत्र तथा वे सभी लोग व दल जो ईदगाह, चर्च, गुरूद्वारा, मंदिर व अन्य धार्मिक क्रियाकलापों के माध्यम से व उनमें भाग लेकर चुनावों को प्रभावित करते हैं उन सभी तत्वों व परिस्थितियों की जांच व कार्यवाही इन्हीं चुनावों से प्रारम्भ कर देनी चाहिये। अब समय आ गया है धर्म, जाति, संप्रदाय तथा मत आदि के नाम पर चुनाव लड़ने वाले दलों के खिलाफ स्ट्राइक की जाये।

इस समय उ.प्र. में एक ओर चीज चल रही है कि कभी वैश्य महासभा का आयोजन होता है तो कभी क्षत्रिय महासभा का। इस प्रकार के संगठन जातिगत आधार पर चुनावी समीकरणों को बनाने व बिगाड़ने का काम करते हैं। ऐसी जगहों पर राजनैतिक दलों के नेता पर्याप्त भाग लेते हैं। आगामी विधानसभा चुनाव चुनाव आयोग व सर्वोच्च न्यायालय के लिए भी कड़ी अग्निपरीक्षा साबित होने जा रहे हैं। ■

मनुष्य के पतन का मुख्य कारण लोभ

मनमोहन कुमार आर्य

काम, क्रोध, लोभ व मोह मनुष्य के प्रबल शत्रु हैं जो मनुष्य का जीवन नष्ट कर देते हैं। मनुष्य मदिरा के नशे की भांति जीवन में इनके वशीभूत रहता है। इनसे बचने का उपास केवल अविद्या का नाश है जिसके अनेक उपाय हैं, परन्तु बहुत से लोगों को इन उपायों का ज्ञान नहीं है। यह अविद्या रूपी शत्रु उन्हें अपने पाश व बन्धनों में जकड़ लेती है जिससे बहुत से मनुष्य इसके प्रभाव से अपना जीवन दुःखमय बना लेते हैं। इसी कारण महर्षि दयानन्द को आर्यसमाज के नियमों में प्रावधान करना पड़ा कि अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये। सबसे पहले तो मनुष्य को पता होना चाहिये कि वह अविद्या से ग्रस्त है व उसे छोड़ना चाहता है, तभी वह अपना सुधार कर सकेगा। कुछ संस्कारी आत्मायें होती हैं जिनमें बुराईयां कम व अच्छाइयां अधिक होती हैं। कुछ आत्मायें ऐसी होती हैं जो अपने प्रारब्ध और परिवेश के अनुसार सत गुणों की प्रधानता से युक्त होती हैं और अधिकांश रज व तमों गुणों से युक्त होती हैं जिसका प्रभाव उनके स्वभाव, प्रकृति व व्यवहार आदि पर रहता है।

लोभ लालच को कहते हैं। लालच का अर्थ है बिना उचित तरीकों के व धर्म-अधर्म, कर्तव्य-अकर्तव्य, उचित-अनुचित तथा आचार-अनाचार का विचार किए अपनी इच्छित व पसन्द की वस्तुओं व पदार्थों को प्राप्त करने की अभिलाषा व इच्छा करना व उसमें प्रवृत्त होना। लोभ के कारण समाज में अव्यवस्था फैलती है। यदि कोई व्यक्ति अवैध तरीकों से अनुचित आचरण से किसी वस्तु को प्राप्त करता है तो वह शासन के नियम के अनुसार अपराधी माना जाता है और ईश्वरीय नियमों में भी अपराधी होता है। हमारे समाज में नाना प्रकार के चोर होते हैं। वह लोभ की प्रवृत्ति व अपनी आदत के अनुसार अनुचित तरीकों से दूसरों का धन व सम्पत्तियों को हड़पने का कार्य करते हैं। कई बार प्रशासन के भ्रष्ट लोग भी उनके सहयोगी बन जाते हैं।

लोकोक्ति है कि धन से मनुष्य की तृप्ति कभी नहीं होती। उसकी लोभ की प्रवृत्ति बढ़ती जाती है और एक समय ऐसा आता है कि जब परिस्थितियां उनके प्रतिकूल हो जाती हैं और वह कानूनी शिकंजे में फंस जाता है। इससे उसका अपमान तो होता ही है, उसे नाना प्रकार के दुःख भी होते हैं। सद्ज्ञान प्राप्त न होने के कारण वह उससे बचने के उपाय तो करता है परन्तु उसे अपनी प्रवृत्ति बदलने की शिक्षा कहीं से नहीं मिलती। आजकल ऐसे बहुत से मामले प्रकाश में आ रहे हैं जब भ्रष्ट आचरण से कमाये कालाधन रखने वाले व गलत काम करने वाले कानून की गिरफ्त में आ रहे है और अपमानित व दुःखी हो रहे हैं। यह ईश्वर की व्यवस्था है कि '**अवश्यमेव हि भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभं**' अर्थात् शुभ व अशुभ कर्म करने वालों को अपने किये हुए कर्मों का फल भोगना ही पड़ता है। अपराध सार्वजनिक होने पर लोभी मनुष्य दुःखी होता है तथा पछताता है।

अतः मनुष्य को अपने मन व लोभ पर नियन्त्रण करना चाहिये। इसका उपाय आर्यसमाज वा वैदिक साहित्य के स्वाध्याय से मिलता है। लोभ एक प्रकार का आत्मा का या आत्मा में विकार है। इसको आत्म ज्ञान, जिसे विद्या कह सकते हैं, उससे दूर किया जा सकता है। विद्या सच्चे वैदिक विद्वानों की शरण में जाकर उनके उपदेश व सत्संग से प्राप्त होती है। वेदों एवं वैदिक साहित्य सहित ऋषि दयानन्द के ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश आदि के अध्ययन व स्वाध्याय से भी अविद्या को दूर किया जा सकता है। योगाभ्यास, सन्ध्या आदि से भी अविद्या को कम वा दूर किया जा सकता है।

यह सब कुछ करने के बाद भी हो सकता है व प्रायः होता है कि लोभ ज्ञान के स्तर पर तो दूर हो जाये परन्तु आचरण से पूरी तरह दूर न हो। इसका उपाय यह है कि लोभ से होने वाली बड़ी बड़ी हानियों की सच्ची घटनाओं से सम्बन्धित साहित्य को ध्यान पूर्वक पढ़ा जाये व उसे पढ़ कर लोभ की प्रवृत्ति को छोड़ने का संकल्प लिया जाये। यदि संकल्प नहीं करेंगे तो लोभ की प्रवृत्ति कभी भी आक्रमण कर सकती है और मनुष्य से पाप व अधर्म करा सकती है। यह ध्यान रखना चाहिये कि एक शुभ संकल्प मनुष्य को बहुत आगे अर्थात् उन्नति की ओर ले जाता है। सद् ग्रन्थों व सत्पुरुषों के संग का जो भी मनुष्य सेवन करेगा, वह अवश्य ही लाभान्वित होगा, उसकी लोभ की प्रवृत्ति पर भी अवश्य अंकुश लगेगा और वह अशुभ कर्मों से बच सकेगा।

लोभ के अतिरिक्त काम, क्रोध व मोह से भी मनुष्य का पतन होता है। हमें इन शत्रुओं को पहचानना चाहिये। इन व अन्य सभी शत्रुओं से बचने के लिए आर्यसमाज की शरण में जाकर हमें सत्यार्थ प्रकाश सहित ऋषि दयानन्द के सभी ग्रन्थों व इसके साथ वेद, दर्शन, उपनिषदों व समस्त वैदिक वांग्मय का अध्ययन करना चाहिये। विज्ञान ने आजकल ये सभी पुस्तकें हिन्दी भाषा में पुस्तक रूप में व इंटरनैट पर भी उपलब्ध करा दी हैं जिनका अध्ययन कर हम शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। वेद का आदेश है कि मनुष्य को मनुष्य बनने का प्रयास करना चाहिये 'मनुर्भव'। मनुष्य शुभ गुणों से युक्त मनुष्यों को ही कहते हैं। अशुभ गुणों वाले मनुष्य होकर भी मनुष्य नहीं कहे जा सकते। जिस प्रकार किसी पात्र में एक छिद्र हो जाये तो उसमें रखा जल सुरक्षित नहीं रहता, उसी प्रकार से यदि मनुष्य के जीवन में एक बुराई आ जाये तो वह मनुष्य जीवन न होकर पापयुक्त जीवन हो जाता है। अतः मनुष्य को पाप व अधर्म में प्रवृत्त करने वाले शत्रुओं लोभ, काम, क्रोध व मोह को जानकर इनसे अपनी रक्षा हेतु शुभ संकल्पों को धारण करना चाहिये। ■

(पृष्ठ २४ का शेष)

हिन्दी...

कुचक्र चल रहा है। ऐसे में सभी बोलियों के समर्थकों को सोचना होगा कि हिंदी जायगी, तो बोलियों भी नहीं बच सकेंगी। यह सभी को अनुभव हो चुका है कि हमारे विद्यार्थी प्रारंभ से अंग्रेजी माध्यम में पढ़ रहे हैं और हिंदी सहित अपनी-अपनी बोलियों से भी दूर हो चुके हैं। ये अंग्रेजी के वातावरण में हैं। वे हमारे अंक ४६, ५४, ६६, ७८ आदि नहीं समझते। उनके लिए अंग्रेजी की विदेशी शिक्षा प्रणाली ही सब कुछ है। उनके लिए देश की संस्कृति, सभ्यता, इतिहास, ज्ञान-विज्ञान, धर्म बेमतलब हो गए हैं। हमें समझना होगा कि हमारी सांस्कृतिक एकता विदेशी भाषा और संस्कृति से मजबूत नहीं हो सकती है। दुनिया में भारत को पुनः 'सोने की चिड़िया' का गौरव मिले इसके लिए हमें भाषाई एकता कायम करना होगी। भाषाई एकता से ही भारत की सांस्कृतिक एकता का महत्त्व दुनिया जान सकेगी। हमारी वसुंधरा से उपजी हिंदी को देश के सभी महापुरुषों ने अपनाया है। चाहें वह महात्मा गांधी हो, सुभाषचंद्र बोस हो, सुब्रहमण्य भारती हो, स्वामी दयानंद सरस्वति हो, लोकमान्य तिलक हो, ऐसे न जाने कितने अहिन्दी भाषियों ने हिंदी को देश को जोड़ने वाली, एकता बनाए रखनेवाली, सर्वमान्य भाषा के रूप में अपनाया है और अपनाने का आव्हान किया है।

भारत को अपना प्राचीन गौरव मिले इसके लिए भारतीय भाषाओं और सभी बोलियों के बिना हिंदी आगे नहीं बढ़ सकती है। कन्नड़ भाषी संत जैनाचार्य विद्यासागर जन-जन को जगा रहे हैं, आव्हान कर रहे हैं कि देश अपना है, ध्वज अपना है, स्वाधीनता अपनी है, राष्ट्र गान अपना है, आकाश, जंगल, नदी, झरने, पर्वत, पशु-पक्षी अपने हैं, तो भारतमाता की अपनी भाषा हिंदी को राष्ट्रभाषा का दर्जा देने में हम पीछे क्यों हैं? भारत की जड़ को विदेशी भाषा, उसकी संस्कृति, सभ्यता, संस्कार और जीवन पद्धति से नहीं सींच सकते हैं। वे चाहते हैं 'भारत' को लौटाओ और 'इण्डिया' को हटाओ। उनका कहना है दुनिया की सभी भाषाओं के ज्ञान की खिड़कियाँ खुली रहे। अंग्रेजी भी अन्य विदेशी भाषाओं के साथ जो चाहे एच्छिक रूप से भाषा के रूप में सीखें। हिंदी सँयुक्त राष्ट्रसंघ में मान्य हो। हिंदी में पर्याप्त नोबल पुरस्कार मिलें, ओलम्पिक में भारत को जनसंख्या के अनुपात में चीन के समान पदक मिलें। दुनिया में भारत का गौरव बढ़े यह हमारे हाथ में है। यह तब ही संभव होगा जब हम अपनी भाषाओं और बोलियों पर विवाद नहीं करेंगे। शिक्षा का माध्यम भारतीय भाषाओं को बनायेंगे। शिक्षा प्रणाली भारतीयता पर आधारित करने के लिए बोलियों को नहीं राज्यों की आठवीं अनुसूची की भाषाओं को अपनायेंगे। ■

कुछ जमाना बदले, कुछ हम

गुरमेल सिंह भमरा, लंदन

परिवर्तन प्रकृति का नियम है और हम भी प्रकृति का ही एक हिस्सा हैं. इसलिए हमारे विचारों में परिवर्तन आना भी स्वाभाविक है. कभी-कभी हम सोच में पड़ जाते हैं कि हम भारतीय कहां खड़े हैं? एक तरफ तो हम अपनी भारतीय संस्कृति की बातें करते हैं और दूसरी तरफ हम बदल भी रहे हैं, फिर कहते हैं लो जी! अब जमाना बदल गया! हम अपनी पुरानी सभ्यता को पकड़े हुए कलयुग यानी machine age में धंसते जा रहे हैं. इस संगम के बीच में हम मुश्किलें भी झेल रहे हैं. पुराने जमाने में पुरुष ही घर के बाहर काम करते थे, औरतें घर में रहकर दूसरे काम किया करती थीं. बेटियों को बाहर जाने की इजाजत नहीं थी, क्योंकि बेटियों की इज्जत को बहुत ऊंचा माना जाता था. बस यह ही होता था कि बेटियों को मां, घर के सारे कामों में निपुण कर देती थी और उसकी शादी कर देते थे.

यह हमने अपनी जिन्दगी में देखा है. हमारी माताएं-बहिनें भी अनपढ़ रही थीं. फिर भी उस समय बहुत-सी महिलाएं राजनीति में भी आईं और कॉलेजों की प्रिंसिपल भी बनीं. ये वो महिलाएं थीं, जिनके माता-पिता प्रगतिशील विचारों के थे और वे चाहते थे कि उनकी अपनी भी कुछ पहचान बने. उनकी देखा-देखी अन्य बेटियों को भी आगे बढ़ने का मौका मिला. पहले पहल हमारे गांव में चार लड़कियां हमारी क्लास में आईं. स्कूल में तो हम छोटी-मोटी बात लड़कियों से कर लेते थे, लेकिन स्कूल के बाहर बिलकुल उनसे कोई बात नहीं करते थे. यह उस जमाने की बात और सोच थी.

अब बात घर की करते हैं. उस वक्त सासू मां का घर में राज होता था. हर मां का सपना होता था कि बहुएं घर में आएंगी, तो उसको सुख मिलेगा. उस समय यही मानसिक सोच होती थी. बहुओं पे राज करने की सोच अब भी बरकरार है, इसीलिए तो पोती के जन्म पर बहुओं को बहुत दुःख दिए जाते हैं. पहले मिट्टी के तेल से, फिर रसोई गैस से बहुओं की हत्याएं हो रही हैं. संयुक्त परिवार हमारी मजबूरी है, इसलिए दो-दो, तीन-तीन बहुएं और उनके बच्चे एक घर में रहते हैं. जो लड़ाई-झगड़े इन परिवारों में होते हैं, वो भी हमने अपनी आंखों से देखे हैं. थोड़े-बहुत सुखी परिवार भी देखे हैं, लेकिन जिसको हम संयुक्त परिवार बोलते हैं, वह आर्थिक मजबूरी ही है. संयुक्त परिवार में अगर इत्तफाक हो तो यह एक कोऑपरेटिव सोसाइटी की तरह होता है, जिसमें सब मिलजुल कर काम करते हैं. यह भी पहले की सोच थी, अब ये विचार भी बदलते जा रहे हैं. भारतीय संस्कृति में पाश्चात्य संस्कृति की पैठ होती जा रही है और एक नवीन भारतीय संस्कृति उजागर हो रही है.

अब नए युग की बात करते हैं, जो लड़कियां कभी घर के बाहर नहीं जाती थी, आज बाहर जाकर दफ्तरों में काम करती हैं. एक तरफ भारतीय संस्कृति है कि सास ही घर की हैड होती है और दूसरी ओर आज की पढ़ी-लिखी बहुएं हैं, जो अब नुक्ताचीनी सहार नहीं सकतीं, लेकिन छोटे बच्चे होते हैं, काम पर भी जाना होता है और आजकल अच्छे-से-अच्छे स्कूल में बच्चों को पढ़ाने की प्रतियोगिता है, इसलिए बहू को सब कुछ सहन करना पड़ता है. यहां भी मिश्रित विचार दिखाई देते हैं. कई बहुएं अपना घर, अपना राज चाहती हैं और उसके लिए कुछ भी करने-सहने को तैयार रहती हैं.

कहा जाता है, कि हर बीस साल बाद जेनरेशन गैप आ जाता है. मेरी बेटी इंग्लैंड की जम्पल है. वह कहती है कि उस की २७ साल की बिटिया के सामने वह अनपढ़ महसूस करती है, क्योंकि आज की जेनरेशन बहुत आगे है. जैसे ही बहू अच्छी तरह पैर जमा लेती है, तब तक सास बूढ़ी हो चुकी होती है, लेकिन उसकी पुरानी राज करने वाली आदतें जाती नहीं हैं, जिस से गृह-क्लेश होने लगता है. अब सास अपनी बहू के रहमोकर्म पर निर्भर हो जाती है. कई घरों में तो सास-ससुर को बहुत दुःख झेलना पड़ता है और फिर सास के हक में कथाएं बनने लगती हैं और पीठ पीछे लोग बहू की निंदा करते हैं. यह कोई नहीं सोचता, कि कभी इस सास ने भी बहू पे कितने जुल्म किये थे.

हम सब चाहते हैं कि अपने पोते-पोतियों के साथ वक्त गुजारें, लेकिन आज कल सभी भाग्यशाली नहीं हैं. शायद यह सब नवीन युग के कारण है. पहले जमाने के संयुक्त परिवार में घर के किसी सदस्य ने काम न भी किया, तो काम चल जाता था. आज किसी को एक छुट्टी लेना भी मुश्किल हो जाता है, क्योंकि काम की सुरक्षा पहले है. आज की पीढ़ी पर यह एक बड़ा बोझ है. यहां भी परिवर्तन आने लगा है. आज सारा काम लैपटॉप से होने लगा है और किसी को छुट्टी लेने की भी जरूरत नहीं है. Work from home का Message दे दो, घर में रहो और घर-ऑफिस दोनों संभालो. यहां भी परिवर्तन दिखाई देता है. एक समय था, जब घर की जिम्मेदारी पत्नी की थी. अब पति-पत्नी आपस में मुक्त रूप से परामर्श करते हैं, जिसका काम ऑफिस में ज्यादा जरूरी होता है, वह ऑफिस जाता है, दूसरा घर में रहकर सब काम संभालता है. यहां यह बता देना जरूरी है कि अब लड़कों को भी बचपन से ही सब काम करना सिखाया जाता है, ताकि आगे उसे परेशानी न हो.

फिर भी सास ससुर के राज की बातें समय-समय पर बाहर आने लगती हैं, जिस से संयुक्त परिवार को ग्रहण लगने लगता है, इसी से 'सास, बहू और साजिश' जैसे सीरियल बनते हैं और यही कारण है कि आज कल वृद्धाश्रम जो अभी बहुत कम हैं, बन रहे हैं, लेकिन धीरे-धीरे इनमें वृद्धि हो रही है. इसलिए हमको चाहिए कि हम भी अपनी सोच को बदलें और मान लें कि यह नया जमाना है. ऐसा हो भी रहा है. बहुत-से लोग वृद्धाश्रम या 'रिटायर होम' में रहकर बहुत खुश हैं. वहां उन्हें अपनी पीढ़ी के साथी मिल जाते हैं.

अंत में हम यही कहना चाहेंगे, कि हम बड़े अब अपनी सोच को बदलें और बच्चों पर ज्यादा बोझ न डालें. अपनी वृद्धावस्था के लिए व्यवस्था करें, ताकि अगर बहू तंग करे, तो अपनी सेक्योरिटी होने पर बुढ़ापा अच्छी तरह बीतेगा. इमोशनल होकर अपना सारा सरमाया बच्चों को देना उचित नहीं है. अगर आप धन-सम्पत्ति से भी सक्षम हैं, तो आपकी सेवा ठीक-ठाक होती रहेगी. आखिर में तो सब बच्चों को ही जाना है. अगर वृद्धाश्रम में जाना पड़ भी जाए, तो इसके लिए भी तैयार रहना चाहिए. सभी के बच्चे बुरे नहीं होते, बच्चे जरूर मिलने आते हैं. हमको भी खुदगर्ज बनकर बच्चों को इमोशनल ब्लैकमेल नहीं करनी चाहिए. आपसी समझ से ही युग-परिवर्तन को दोनों पीढ़ियां स्वीकार कर सकती हैं. इसका सीधा-सीधा अर्थ हुआ- 'कुछ जमाना बदले, कुछ हम! फिर किसी को नहीं कोई गम!' ■

(पृष्ठ १७ का शेष)

बाप के जूते में बेटे...

सकता है। अब काहे को दैया-दैया कर रहे हो, चच्चा! दई (विधाता) दई सो कुबूल।

वैसे तो यह ध्रुव सत्य है कि आज जो बाप है, कभी वह बेटा था। जो आज बेटा है, वह कभी न कभी बाप बनेगा। बाप-बेटे की यह उठापटक सनातनी है। जिस बेटे ने बाप को गच्चा दिया, तो समझो, दुनिया को गच्चा देने में प्रवीण हो गया। अगर बुढ़ापे में अपने ही बेटे से गच्चा खा गया, तो दुनिया को दिखाने को भले चीखता-चिल्लाता हो, लेकिन भीतर ही भीतर वह खुश होता रहता है-वाह बेटा! इस पुरातन गच्चावादी परंपरा को कितनी खूबसूरती से आगे बढ़ाया है।

अगर आप चाहते हैं कि आपका बेटा बुढ़ापे में आपको गच्चा न दे, आपके और आपके बेटे के बीच जूते में दाल न बंटे, तो यह बात अच्छी तरह गांठ बांध लें कि बेटा किसी भी हालत में आपके जूते में पांव डालने ही न पाए। बचपन में ही जब वह आपके जूते में पांव डालने की कोशिश करे, तो उसे बरज दें, मना कर दें। यदि आपने ऐसा नहीं किया, तो जिस दिन आपके जूते में बेटे का पैर फिट हुआ, उसी दिन से समझ लीजिए कि अब आप बाप-बेटे के बीच जूते में दाल बंटने के दिन आ गए हैं। जूतमपैजार अवश्यंभावी है। इसे टाला नहीं जा सकता है। अब अगर समाजवादी बाप-बेटे में जूतमपैजार हो रही है, तो किम् आश्चर्यम्! ■

पृष्ठ २१ की पहेलियों के उत्तर-

(१) हॉकी की गेंद, (२) चप्पल, (३) सिगरेट, (४) प्लग, (५) कील

जीवन के मार्ग

भरत मल्होत्रा

जीवन जीने के दो ही मार्ग हैं, प्रथम लोगों की बातों पर ध्यान न देकर अपने लक्ष्य पर केंद्रित रहो एवं द्वितीय लोगों की बातें सुनने और उन्हें उत्तर देने में अपना अमूल्य समय नष्ट कर दो। या तो अपने मन के, अपनी आत्मा के दर्पण में स्वयं को देखो या दूसरों की आँखों में अपनी छवि ढूँढने का प्रयास करो।

आप विश्वास कीजिए कि दूसरा मार्ग आपको सिवाय असफलता के, नकारात्मकता के कहीं भी नहीं ले जाएगा। लोगों का क्या है, लोग तो कुछ न कुछ कहते ही रहेंगे। इस संसार में प्रबुद्ध पुरुषों पर भी कीचड़ उछाला गया है। कौन से ऐसे संत या अवतारी पुरूष थे जिन्हें आलोचना का सामना नहीं करना पड़ा? इस संसार ने महावीर के कानों में कीलें ठोकीं, मीरा को विष का प्याला दिया, जीसस को सूली पर लटका दिया, गुरू तेग बहादुर को गर्म तवे पर बिठा दिया तो हम और आप किस खेत की मूली हैं। ये तय मान लीजिए कि आप कुछ भी करें आलोचना होना तय है।

यदि कोई भी आपकी निंदा या आलोचना नहीं करता तो समझ जाइए कि आप मृतप्राय हैं, क्योंकि लोग केवल उन्हीं की आलोचना नहीं करते जो कुछ भी नहीं करते या महत्वहीन कार्य करते हैं। यदि आपकी निंदा होने लगे, आलोचना होने लगे, तो प्रसन्न होइए कि आप जो भी कर रहे हैं वह महत्वपूर्ण है, उसके ऊपर अन्यों की दृष्टि है। इस संसार का बड़ा सीधा सा नियम है कि वो पहले आपकी उपेक्षा करेंगे, फिर आपकी निंदा करेंगे, फिर आपसे झगड़ा करेंगे। इन सब के बाद जब आप स्वयं को सही सिद्ध कर देंगे तो आपकी प्रशंसा करेंगे एवं यदि आपने महान कार्य किया है तो अंतिम चरण है कि आपकी पूजा करने लगेंगे।

सफल एवं असफल लोगों में मूलभूत अंतर बस इतना ही है कि सफल लोगों ने संसार की प्रतिक्रियाओं पर ध्यान नहीं दिया और अपने पथ पर चलते रहे, वहीं असफल लोग संसार की बातें सुनकर उद्वेलित होते रहे। कुछ वहीं रुक कर झगड़ा करने में व्यस्त हो गए, कुछ ने व्यथित होकर अपना रास्ता ही बदल लिया। इसलिए लोगों की बातों पर ज्यादा ध्यान न दीजिए, हँसते रहिए, मुस्कराते रहिए। उठिए, जागिए, रूकिए मत, जब तक लक्ष्य प्राप्त ना हो जाए। जब कोई व्यक्ति हमारे प्रति बुराई करे या निंदा करे, उद्वेगजनक बात कहे तो उसको सहन करने और उत्तर न देने से बैर आगे नहीं बढ़ता।

जो व्यक्ति अपनी मानसिक शक्ति स्थिर रखना चाहते हैं उनको दूसरों की आलोचनाओं से चिढ़ना नहीं चाहिए। इसका सबसे अच्छा उत्तर है मौन। अगर आपको उत्तर देना आवश्यक लगता है तो सबसे अच्छा है अपने मन में कह लेना। जो अपने कर्तव्य कार्य में जुटा रहता है और दूसरों के अवगुणों की खोज में नहीं रहता है उसे ही आंतरिक प्रसन्नता रहती है। ■

मुक्तक

बस पीड़ा ही होती है, जब अपनों से लड़ना पड़ता है
जीत हुई या हार हुई, बस दर्द ही सहना पड़ता है
जग से जीता खुद से हारा, इसको कैसी जीत कहूँ
अपनों की आँखों में आँसू, छुप-छुप रोना पड़ता है

-- अ. कीर्तिवर्धन

(पृष्ठ ११ का शेष)

कहानी : नींव

यहाँ बनने वाली बहुमंजिला इमारत में दोनों भाइयों को एक-एक फ्लैट और कुछ रुपये दिए जाएंगे. नीता को यह प्रस्ताव बहुत पसंद आया था. परंतु उसके बड़े भाई राजी नहीं थे. उनका कहना था कि यह पुरखों की निशानी है. आज के समय में इतनी जगह कहाँ मिलती है. यहाँ खुलापन है. फ्लैट में तो बंद रहना पड़ेगा. वे चाहते थे कि दोनों भाई मिलकर उसकी देख रेख करें.

विवेक उनकी बात से सहमत नहीं था. किंतु नीता खुले रूप में इस फैसले के खिलाफ थी. उसका कहना था कि जेठजी की तो सारी जिम्मेदारियां निपट चुकी हैं. पर हमें तो बबलू के भविष्य के लिए सोचना है. फिर पुराने पड़ते इस मकान में कब तक रहेंगे? यदि बिल्डर की बात मान लें तो पैसे भी मिलेंगे और फ्लैट भी.

विवेक नीता के पास गया. वह खाना बनाकर आराम कर रही थी. उसके पास बैठकर वह बोला 'तुम ठीक कहती हो. बबलू के भविष्य के लिए हमें साफ बात करनी ही पड़ेगी. कल संडे है. सुबह ही मैं भइया से बात करता हूँ.' नीता के चेहरे पर खुशी झलकने लगी. ■

(पृष्ठ १६ का शेष)

मल विसर्जन

पड़े इसका प्रयास करना चाहिए। चित्र में सीट और ढक्कन नहीं है। पर ये दोनों साथ भी मिलते हैं।

इसका दूसरा समाधान यह है कि हम चूतड़ों के बल बैठें और पैरों को किसी ऊँचे स्टूल पर रख लें, जिससे शरीर की स्थिति लगभग कागासन जैसी बन जाती है। इससे भी काफी लाभ हो जाता है। ऐसे स्टूल ६ इंच से १२ इंच तक ऊँचे होने चाहिए। बहुत से लोग देर तक शौचालय में बैठने के आदी होते हैं। यह उचित नहीं। यदि आपकी पाचन क्रिया ठीक है तो आपको शौचालय में दो मिनट से अधिक बैठने की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए। इस अवधि में जितना मल निकल जाए, उतना पर्याप्त है। शेष अगली बार निकल जाएगा, क्योंकि हमारे शरीर में मल-मूत्र बनने की प्रक्रिया हमेशा चलती रहती है।

हमें शौच से कब उठ जाना चाहिए इसकी एक पहचान है। जब हम शौच के लिए जाते हैं, तो पहली बार मल और मूत्र लगभग एक साथ ही निकलते हैं। मूत्र निकलना बन्द हो जाने के बाद भी मल थोड़ा थोड़ा करके निकलता रहता है। पर्याप्त मल निकल जाने पर दूसरी बार मूत्र निकल आता है। यह इस बात का संकेत है कि अब और अधिक मल नहीं निकलेगा। बस हमें उसी समय उठ जाना चाहिए। उसके बाद भी बैठे रहना समय की बरबादी है।

प्रत्येक स्वस्थ व्यक्ति को दिन में दो बार मल विसर्जन करना आवश्यक होता है। यदि आप केवल एक बार ही शौच के लिए जाते हैं, तो यह बीमारियों को निमन्त्रण देने के तुल्य है, क्योंकि जो मल निष्कासन के लिए तैयार होता है, उसका शरीर में पडे रहना उचित नहीं। इसलिए हमें याद करके अपनी सुविधा के समय पर कम से कम दो बार मल विसर्जन के लिए अवश्य जाना चाहिए। ■

(पृष्ठ ४ का शेष)

नये साल की हैवानियत

लड़की को अपना शिकार बनाया। गनीमत थी कि वहां पुलिस उपस्थित थी। पुलिस ने लड़की को बचाया। पुलिस की इस कार्यवाही से उत्तेजित लड़कों ने अपने सैकड़ों साथियों के साथ थाने पर ही हमला बोल दिया। जमकर पत्थरबाजी और तोड़फोड़ की।

नये साल का जश्न मनाना बुरा नहीं है, लेकिन इस दिन शराब पीकर इन्सानियत की हद पारकर हैवानियत पर उतर आना घोर निन्दनीय है। पता नहीं पश्चिम का यह कैसा त्योहार है जिसमें सवेरे से ही युवक-युवतियों पर इश्कबाजी का नशा सवार हो जाता है। इस दिन शराब की बिक्री बेतहाशा बढ़ जाती है। अधिकांश युवक अपने को मजनूँ और राह चलती लड़की को लैला समझने लगते हैं। मनुष्य और पशु में अन्तर सिर्फ विवेक का होता है, वरना भूख-प्यास, निद्रा-मैथुन दोनों में समान होते हैं। शराब मनुष्य के विवेक को ही नष्ट कर देती है, फिर वह पशुता को प्राप्त हो जाता है। ऐसे में वह कुछ भी कर सकता है।

नई पीढ़ी का अपने मूल संस्कारों से कट जाना और पश्चिम का अन्धानुकरण समस्या के मुख्य कारणों मे से एक बड़ा कारण है। पाठ्यपुस्तकों से तुलसी, सूर, रसखान, जायसी, सुब्रह्मण्यम भारती जैसे कवियों और लेखकों के लुप्त होने के कारण अब युवा पीढ़ी टीवी के बिग बास और देल्ही-वेली जैसी फिल्मों से ही संस्कार ग्रहण करने के लिए बाध्य हैं। परिणाम सामने है। यह देश जबतक 'इंडिया' रहेगा, तबतक ऐसा होता रहेगा। इसे भारत बनाइये, ऐसी समस्याएं अपने आप सुलझ जायेंगीं। हमें नहीं चाहिए आंग्ल नववर्ष और वेलेन्टाईन डे, जो हमारे युवाओं को हैवानियत की ओर ले जाय। हम अपने दिवाली, दशहरा, पोंगल, उगाडी, वर्ष प्रतिपदा, बैसाखी और ईद-बकरीद में ही खुश हैं। ■

वैवाहिक स्वर्णजयन्ती पर 'लक्ष्मण की कुण्डलियाँ' का विमोचन

जयपुर। दि. ५ जनवरी को लक्ष्मण रामानुज लड़ीवाला के द्वितीय काव्य संकलन 'लक्ष्मण की कुण्डलियाँ' का विमोचन वयोवृद्ध कवि मुकुट सक्सेना के कर कमलों से सम्पन्न हुआ। दीप प्रज्वलित कर गणपति पूजन पर कवयित्री शोभा चन्द्र द्वारा गणेश स्तुति एवम् ममता लड़ीवाल द्वारा सरस्वती वन्दना के साथ प्रारम्भ समारोह में लक्ष्मण रामानुज लड़ीवाला द्वारा मुख्य अतिथि मुकुट सक्सेना को पुष्पहार पहनाकर एवम् शाल ओढ़ाकर स्वागत किया गया। इस अवसर पर ममता लड़ीवाल ने कवितालोक के संस्थापक ओम नीरव का प्राप्त सन्देश पढ़कर सुनाया।

उनके ज्येष्ठ पुत्र योगेन्द्र लडीवाला ने उनका संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत करते हुए बताया कि विवाह के बाद पापा ने अपना अधिकाँश समय समाज सेवा में समर्पित किया और दहेज विरोधी प्रदर्शनों का नेतृत्व एवम् सामाजिक पत्र-पत्रिकाओं का सम्पादन किया। इसके बाद लक्ष्मण लड़ीवाला ने कुण्डलिया छन्द की संक्षिप्त जानकारी देते हुए अपनी पुस्तक में से माँ शारदा, मात-पिता, सामाजिक सरोकार, कालेधन आदि सम सामयिक विषयों पर रचित कुण्डलियाँ सुनायीं।

मुख्य अतिथि श्री सक्सेना ने बताया कि लुप्त होते कुण्डलिया छन्द विधा पर श्री लड़ीवाला की यह कृति नीति, व्यवहार और सामाजिक चेतना जाग्रत करने में सक्षम है। सहज सरल पर, प्रभावपूर्ण छन्दों से साहित्य जगत में इसका व्यापक स्वागत किया जाएगा।

कवि-गोष्ठी में प्रमुख रूप से चन्द्र प्रकाश पारीक, ममता लड़ीवाल और संचालिका वरिष्ठ कवयित्री शोभा चन्दर ने नारी पीड़ा पर मार्मिक गीत रचनाएँ प्रस्तुत कीं। इसी कड़ी में मुख्य अतिथि ने राधा-कृष्ण की भावनाओं को कवित्व शैली में प्रस्तुति दी जिसे खूब सराहा गया। ■

(पृष्ठ ३ का शेष)

अच्छा इंसान

हो जाएगा।' एक-दो के अलावा सभी विद्यार्थियों ने मेरी बात बहुत ध्यान से सुनी।

मैंने बात आगे बढ़ाते हुए कहा- 'आप स्कूल आने के लिए घर से चलते हैं, रास्ते में कोई आवारा कुत्ता सोया है या बैठा हुआ है तो क्या आप उसे पत्थर से मारते हैं या लात मारते हैं? सब बच्चे खामोश थे। मैंने कहा कि यदि आप आज तक यह करते थे, तो आज से यह व्यवहार बदल दीजिएगा। आप इंजीनियर-डॉक्टर-वकील जरूर बनना, पर जब यह बन जाओ तो मन में ठान लेना, कि यदि कोई गरीब मेरे दरवाजे पर आकर कहेगा, कि मेरे पास पैसे नहीं हैं, कृपया मेरी मदद कर दें, उस समय चंद पैसों के लिए इंकार मत कर दीजिएगा। चंद सिक्कों के लिए किसी से बेईमानी मत करना, किसी का दिल मत दुखाना। तुम्हारे पास दुनिया की वह दौलत होगी, जो बड़े-से-बड़े रईसों के पास भी नहीं होगी।'

मेरी बात सुनकर कुछ विद्यार्थियों की तो आंखों से आंसू बहने लगे। मैंने अपनी बात खत्म करते हुए बच्चों से पूछा- 'बच्चो, आप क्या बनना चाहते हो?' सबने एक स्वर से कहा- 'अच्छा इंसान!' ■

कार्टून

-- श्याम जगोता

पुस्तक मेला में 'काव्या' की काव्यगोष्ठी

नई दिल्ली। १२ जनवरी को विश्वपुस्तक मेला प्रांगण, प्रगति मैदान के लेखक मंच से 'काव्या सतत साहित्य यात्रा' समूह की काव्यगोष्ठी में मंचासीन अध्यक्ष अहिन्दी भाषी लेखक संघ के अध्यक्ष, लेखक, गीतकार सुरजीत सिंह जोवन विशिष्ट अतिथि, नार्वे के स्पाईल/दर्पण पत्रिका के सम्पादक, लेखक, समाजसेवक सुरेश शुक्ल उर्फ शरद आलोक, प्रख्यात लेखिका जेन्नी शबनम का स्वागत समूह की संचालिका निवेदिता श्रीवास्तव ने किया। मंच संचालन अलका प्रमोद द्वारा किया गया।

नवोदित कवि अखिलेश ने मुक्तक सुनाकर गोष्ठी का आरंभ किया। क्रमशः शिवांश पाण्डेय, आभा चंद्रा, सीमा मधुरिमा, रोली शंकर, प्रतिमा प्रधान ने अपना प्रथम मंचीय काव्य पाठ प्रस्तुत किया। अंशु त्रिपाठी ने 'मृत्यु मेरे काव्य की आराधिका है', नेहा नाहटा ने 'करियर दो दहेज नहीं माँ', निवेदिता श्रीवास्तव ने कैकेयी पर छंद सुनाकर गोष्ठी को विविधता प्रदान की।

'काव्या सतत साहित्य यात्रा' समूह नवागतों की प्रस्तुति लेकर हर साल पुस्तक मेले में आता है।

गोष्ठी में निवेदिता दिनकर, निवेदिता मिश्रा झा, नीलिमा शर्मा, जेन्नी शबनम, अरविन्द पथिक, अनिल जी, अशोक अवस्थी, नमिता राकेश, सरस दरबारी, सुशीला पुरी, यास्मीन खान, शशि श्रीवास्तव, संतोष श्रीवास्तव, सुशीला शिवराण, आभा खरे, सुरेश शुक्ल, सुरजीत सिंह जोवन ने भी कविता पाठ किया। ■

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत

जय विजय मासिक

कार्यालय- १००२, कृष्णा हाइट्स, प्लॉट ८, सेक्टर २-ए, कोपरखैरणे, नवी मुंबई-४००७०६ (महा.)

मोबाइल : 09919997596; ई-मेल : jayvijaymail@gmail.com

वेबसाइट : www.jayvijay.co, www.jayvijay.co.in

सम्पादक- विजय कुमार सिंघल

सहसम्पादक- विभा रानी श्रीवास्तव, अरविंद कुमार साहू, रमा शर्मा (जापान)

'जय विजय' का नेट संस्करण ई-मेल से निःशुल्क भेजा जाता है। रचनाओं में व्यक्त किये गये विचार सम्बंधित रचनाकारों के हैं। उनसे सम्पादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।